# इस्लाम और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता

वर्णित

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

इमाम जमाअत अहमदिया

Islam and the Freedom of Conscience is a Friday Sermon delivered by Hadhrat Mirza Masroor Ahmad, Head of the Worldwide Ahmadiyya Muslim Community, on 28th September 2012 at Baitul-Futuh Mosque, in Morden, Surrey, United Kingdom.

This address was delivered in the backdrop of the vile and crude film, "innocence of Muslims," in which the pure and holy person of Prophet Muhammad (may peace and blessings of Allah be upon him) was maligned by anti-Islam proponents. This film became the source of immense controversy and a wave of uproar rippled through the Muslim world. In this state of affairs, many people reached to the film in violent manner, but in light of the true teachings of Islam, the Head of the Ahmadiyya Muslim Community enjoined alla Muslims to respond in a civilized and peaceful manner.

Furthermore, his Holiness presented the true teachings of Islam and Character of the Holy Prophet (may peace and blessing of Allah be upon him) before the world in order to remove any misgivings about Islam and its Holy Founder. Moreover, he encouraged others to do the same.

This book also contains quotations of renowned personalities regarding the Holy Prophet (may peace and blessing of Allah be upon him).

# इस्लाम
# और
# अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

नाम पुस्तक - इस्लाम और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

Name of Book : Islam and the freedom of conscience

लेखक - हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह पंचम

Written By : Hazrat Mirza Masroor Ahmad

Khalifatul Masih V

अनुवादक - अन्सार अहमद एम.ए. बी.एड. आनर्स इन अरबिक

Translated By : Ansar Ahmad M.A. B.Ed.

Hon's in Arabic

प्रथम हिन्दी प्रकाशन - अप्रैल 2017

First Hindi Edition : April 2017

संख्या - 1000

Quantity : 1000

मुद्रक - फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान

Printer : Fazle Umar Printing Press,

Qadian, 143516

Distt. Gurdaspur, Punjab

प्रकाशक - नज़ारत नश्र व इशाअत, क़ादियान

Publisher : Nazarat Nashr-o-Ishaat, Qadian

Distt. Gurdaspur (Punjab)

INDIA

# विषय सूची

# प्राक्कथन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

संसार के प्रारंभ ही से यह नियम चला आया है कि अल्लाह तआला के भेजे हुए महापुरुषों के मुक़ाबले पर एक वर्ग ऐसा खड़ा होता रहा है जो उन महापुरुषों के विरुद्ध निराधार बातें फैला कर उपद्रव एवं उत्पात् फैलाने का प्रयत्न करता रहा है। अल्लाह तआला ने विभिन्न नबियों का वर्णन पवित्र क़ुर्आन में किया है तथा उस वर्ग की गतिविधियों का भी विस्तृत वर्णन करने के पश्चात् उनके दुष्परिणाम का भी स्पष्ट तौर पर वर्णन किया है। पूर्व अंबिया (अवतार) तो चूंकि एक विशिष्ट युग के लिए भेजे गए थे इसलिए उन के ख़िलाफ़ षड्यन्त्र भी उस युग तक सीमित रहे लेकिन चूंकि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समस्त क़ौमों एवं समस्त युगों के लिए नबी बना कर भेजे गए हैं। इसलिए आप[स.] के विरुद्ध षड्यंत्र और उपद्रव भी संसार के अंत तक सर उठाते रहेंगे। अतएव कभी उनका प्रकटन मुसैलिमा कज़्ज़ाब इत्यादि के रूप में हुआ तो कभी रंगीला रसूल पुस्तक के रूप में या Satanic Verses पुस्तक के रूप में हुआ तथा कभी उन्होंने हृदय को कष्ट देने वाले व्यंग्यचित्रों का रूप धारण कर लिया और अब उसका प्रकटन Innocence of Muslims फिल्म के रूप में हुआ है।

अल्लाह तआला ऐसे अवसरों पर मोमिनों की परीक्षा भी लिया करता है कि वे क्या प्रतिक्रिया प्रदर्शित करते हैं। इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम ने पवित्र क़ुर्आन, इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम तथा जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम की शिक्षाओं के अनुसार उन परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए अपने ख़ुत्बों तथा भाषणों में इस बात पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है जिसे अगले पृष्ठों में प्रस्तुत किया जा रहा है। आप के ख़ुत्बा-ए-जुमा 21 सितम्बर 2012 ई. के बाद आप से प्रेस के प्रतिनिधियों ने भेंट करने के पश्चात् जो समीक्षाएं की हैं उनमें से कुछ पुस्तक के अन्तिम भाग में वर्णन की जा रही हैं।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हम इस वास्तविक प्रकाश को विश्व के भिन्न-भिन्न भागों में शीघ्र पहुंचाने वाले हों ताकि सम्पूर्ण विश्व इस से प्रकाशमान हो जाए। हम इस पृथ्वी पर भी वास्तविक स्वर्ग का दृश्य देख सकें। (आमीन)

मुनीरुद्दीन शम्स

एडीशनल वकील-अत्तस्नीफ़

लन्दन

दिसम्बर 2012

**हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद**

जमाअत अहमदिया के पंचम ख़लीफ़ा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने जुमा के ख़ुत्बा में 28 सितम्बर 2012 ई. मस्जिद बैतुल फ़ुतूह मार्डन सर्रे यू.के. में फ़रमाया कि :

"गत सप्ताह जुमा को जब मैं यहां मस्जिद में जुमा पढ़ाने आया था तो कार से उतरते ही मैंने देखा कि पत्रकारों का एक बड़ा समूह सामने खड़ा था। मेरे पूछने पर अमीर साहिब ने बताया कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में अमरीका में जो हृदय को अत्यधिक कष्ट देने वाली फिल्म बनाई गई है उस पर मुसलमानों में जो प्रतिक्रिया हो रही है उसके बारे में ये लोग देखने आए हैं कि अहमदियों की प्रतिक्रिया क्या है। मैंने कहा — ठीक है इन से कहें कि मैंने इसी विषय पर ख़ुत्बा (भाषण) देना है और अहमदियों की जो भी प्रतिक्रिया है वहीं वर्णन करूंगा। ये भी ख़ुदा तआला के ही कार्य हैं कि वह इतनी बड़ी संख्या में मीडिया को खींच कर यहां लाया और फिर मेरे हृदय में भी डाला कि इस विषय पर कुछ प्रकाश डालूं।....

अख़बार के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त टीवी चैनल्ज़ के प्रतिनिधि भी थे जिन में न्यूज़ नाइट जो बी.बी.सी. के अधीन है। इसी प्रकार बी.बी.सी. का प्रतिनिधि, न्यूज़ीलैंड नेशनल टेलीविज़न का प्रतिनिधि, फ्रान्स के टेलीविज़न का प्रतिनिधि तथा अन्य कई प्रतिनिधि सम्मिलित थे। न्यूज़ीलैंड का प्रतिनिधि जो मेरे बाईं ओर बैठा था उसे पहले अवसर प्राप्त हो गया उसने यही प्रश्न किया कि आप क्या सन्देश देना चाहते हैं। मैंने कहा - यह सन्देश तो तुम सुन चुके हो वह ख़ुत्बे की रिकार्डिंग सुन रहे थे और अनुवाद भी सुन रहे थे। आंहज़रत सल्लल्लाहो

अलैहि वसल्लम के पद और श्रेणी के बारे में मैं वर्णन कर चुका हूं कि आप[स.] का बहुत श्रेष्ठ स्थान है तथा आप[स.] का आदर्श हर मुसलमान के लिए अनुकरणीय है। मुसलमानों की जो शोक और क्रोधपूर्ण प्रतिक्रिया है वह एक दृष्टि से तो उचित है कि पैदा होनी चाहिए थी, यद्यपि कुछ स्थानों पर इसका ग़लत प्रदर्शन हो रहा है। हमारे हृदयों में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का जो स्थान है सांसारिक व्यक्ति की दृष्टि उस तक नहीं पहुंच सकती। इसलिए सांसारिक व्यक्ति को यह अहसास ही नहीं है कि किस सीमा तक और किस प्रकार हमें इन बातों से आघात पहुंचा है। ऐसी गतिविधियां विश्व की शान्ति को नष्ट करती हैं। न्यूज़ीलैंड के प्रतिनिधि का इस बात पर बहुत आग्रह था कि तुमने बड़े कठोर शब्दों में कहा है कि ये लोग जहन्नुम में जाएंगे। ये तो बड़े ही कठोर शब्द हैं और तुम भी उन लोगों में सम्मिलित हो गए हो। शब्द तो ये नहीं थे किन्तु उसकी शैली से यही लग रहा था। क्योंकि वह बार-बार इसी प्रश्न को दोहरा रहा था। मैंने उससे कहा कि ऐसे लोग जो ख़ुदा के प्रिय लोगों के बारे में ऐसी बातें करें, उन का उपहास करने का प्रयत्न करें तथा करते चले जाएं और किसी प्रकार समझाने से भी न रुकें, हंसी एवं ठट्ठे का निशाना बनाते रहें तो फिर अल्लाह तआला की भी एक तक़दीर है, वह चलती है और अज़ाब भी आ सकता है तथा वह पकड़ता भी है ऐसे लोगों को ..........

हम आतंकपूर्ण प्रदर्शन तथा तोड़-फोड़ पसन्द नहीं करते और तुम कभी किसी अहमदी को नहीं देखोगे कि इस प्रकार के उपद्रव एवं उपद्रवयुक्त प्रतिक्रिया का भाग हो। ख़बरें पढ़ने वाले ने मेरा यह उत्तर दिखा कर फिर आगे समीक्षा की कि यह जमाअत मुसलमानों की अल्पसंख्यक जमाअत है और इनके साथ भी मुसलमानों का अच्छा

व्यवहार नहीं होता। बहरहाल देखते हैं कि यह सन्देश जो इनके ख़लीफ़ा ने दिया है, उसकी आवाज़ और सन्देश का अहमदी मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य मुसलमानों पर भी कोई प्रभाव होता है या नहीं ? ......

न्यूज़ नाइट जो यहां का चैनल है, उसका प्रतिनिधि कहने लगा कि मैंने यह फिल्म देखी है इसमें तो कोई ऐसी बात नहीं जिस पर इतना अधिक शोर मचाया जाए और मुसलमान इस प्रकार की प्रतिक्रिया का प्रदर्शन करें और तुम ने भी बड़े विस्तार के साथ ख़ुत्बा दे दिया है और कुछ स्थानों पर बहुत कठोर शब्दों में इसका खण्डन किया है। यह तो मामूली सा मज़ाक था। इन्नालिल्लाह। यह इन लोगों के शिष्टाचार एवं आचरण के मापदण्ड की दशा है। मैंने कहा कि पता नहीं तुमने किस प्रकार देखा और तुम्हारा क्या मापदण्ड है ? तुम उस स्थान को जो हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुसलमानों की दृष्टि में है, उनके हृदय में है और उस प्रेम को जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक मुसलमान के हृदय में है तुम नहीं समझ सकते। मैंने उसे बताया कि मैंने फिल्म तो नहीं देखी परन्तु जिस देखने वाले ने एक-दो बातें मुझे बताई हैं वे असहनीय हैं और तुम कहते हो कि ऐसी कोई बात नहीं ये बातें सुनकर तो मैं कभी फिल्म देखने का साहस भी नहीं कर सकता उस में जो बातें वर्णन की गई हैं उनको सुनकर ही ख़ून खौलता है। मैंने उस से कहा कि तुम्हारे पिता को यदि कोई गाली दे, बुरा-भला कहे, अश्लील बातें कहे तो उसके बारे में तुम्हारी प्रतिक्रिया क्या होगी ? तुम प्रतिक्रिया का प्रदर्शन करोगे ? यह बताओगे कि उचित है कि नहीं ? हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान तो एक मुसलमान की दृष्टि में इस से बहुत श्रेष्ठ है उस स्थान तक कोई नहीं

पहुंच सकता ......

ये लोग तो अपनी गतिविधियों को नहीं छोड़ रहे और न ही छोड़ेंगे। सामान्यतः मुसलमान जो प्रतिक्रिया प्रदर्शित कर रहे हैं उस से लगता है कि ये लोग हमारे हृदयों को और अधिक घायल करने पर उतारु हैं। अपनी अशिष्ट हरकतों को एक देश से दूसरे देश में फैलाते चले जा रहे हैं। अब दो दिन पूर्व स्पेन के किसी अख़बार ने भी ये व्यंग्य चित्र बनाए थे और प्रकाशित किए हैं और यह कहा है कि यह तो मज़ाक है और यह मुसलमानों की प्रतिक्रिया का उत्तर भी है।

अतः हमें इन लोगों का मुँह बन्द करने के लिए और कम से कम शालीन एवं शिक्षित लोगों को बताने के लिए भरसक प्रयास करने की आवश्यकता है कि यह ग़लत तरीका एवं कार्य विश्व-शान्ति नष्ट कर रहा है ताकि जिस सीमा तक संभव हो इनके अत्याचारपूर्ण व्यवहार की वास्तविकता से हम संसार को अवगत करा सकें।

महारानी विक्टोरिया की जब डायमण्ड जुबली हुई थी तो उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने "तुहफ़ा क़ैसरिया" के नाम से पुस्तक लिख कर महारानी को भिजवाई थी। जिसमें जहां महारानी की न्यायप्रिय सरकार की प्रशंसा की थी वहां इस्लाम का सन्देश भी पहुंचाया था तथा विश्व में शान्ति की स्थापना तथा विभिन्न धर्मों के परस्पर सम्बन्धों एवं धार्मिक महापुरुषों तथा नबियों (अवतारों) के मान-सम्मान की ओर भी ध्यान दिलाया था और यह भी विस्तारपूर्वक बताया था कि शान्ति के क्या उपाय होने चाहिएं। अब जब महारानी एल्ज़ाबिथ की डायमण्ड जुबली हुई है तो तुहफ़ा क़ैसरिया का अनुवाद प्रकाशित करके सुन्दर जिल्द के साथ महारानी को भिजवाया गया था। महारानी का जो संबंधित विभाग है जिसको यह पुस्तक उपहार स्वरूप

जाकर दी गई थी और उसके साथ मेरा पत्र भी था उनकी ओर से मुझे धन्यवाद का उत्तर भी आया है तथा यह भी महारानी की पुस्तकों की जो Collection है वहां रख दी गई है और महारानी उसे पढ़ेंगी। बहरहाल पढ़ती हैं या नहीं किन्तु हमने अपने दायित्व को अदा करने का प्रयास किया है।

इस समय भी विश्व में अशान्ति की वह परिस्थितियां हैं जो उस युग में भी थीं अपितु कुछ दृष्टियों से बढ़ रही है और ये लोग इस्लाम पर आक्रमण, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अस्तित्व पर आक्रमण, आप[स.] पर उपहास करते चले जा रहे हैं और बहुत आगे बढ़ रहे हैं।

## विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए आवश्यक है कि ख़ुदा तआला के भेजे हुए अवतारों का सम्मान किया जाए

नबी भी जब ख़ुदा तआला की ओर से सन्देश लाने का दावा करते हैं तथा उनकी जमाअतें भी बढ़ रही होती हैं तो यह बात सिद्ध करती है कि यह जमाअत या ये लोग ख़ुदा तआला की ओर से हैं। अतः ख़ुदा तआला की ओर से आए हुए अवतारों का सम्मान करना चाहिए ताकि विश्व की शान्ति स्थापित रहे। इस बारे में एक भाग जिसमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि किस प्रकार शान्ति होनी चाहिए तथा नबियों का क्या स्थान होता है वह मैं इस समय प्रस्तुत करता हूं। आप फ़रमाते हैं कि :

"अतः यही क़ानून ख़ुदा तआला के अनादि नियम में से है।"

(अर्थात् वही कानून कि यदि सांसारिक सरकारें किसी ऐसी बात का अपनी ओर सम्बद्ध होना सहन नहीं करतीं जो नहीं कही गई तो अल्लाह तआला किस प्रकार सहन करेगा ? कहा) "अतः यही क़ानून ख़ुदा तआला के अनादि नियम में से है कि वह नबी होने का झूठा दावा करने वाले को ढील नहीं देता, अपितु ऐसा व्यक्ति शीघ्र पकड़ा जाता तथा अपने दण्ड को पहुंच जाता है। इस नियम की दृष्टि से हमें चाहिए कि हम उन समस्त लोगों को सम्मान की दृष्टि से देखें तथा उन्हें सच्चा समझें, जिन्होंने किसी युग में नबी होने का दावा किया और फिर उनका वह दावा जड़ पकड़ गया तथा उन का धर्म संसार में फैल गया और सुदृढ़ हो कर एक आयु पा गया। यदि हम उनकी धार्मिक पुस्तकों में दोष पाएं अथवा उस धर्म के धर्मानुयायियों को दुराचारों में ग्रस्त देखें तो हमारे लिए यह उचित नहीं कि उन दोषों को उन धर्मों के प्रवर्तकों पर आरोपित कर दें, क्योंकि पुस्तकों का अक्षरांतरण संभव है। विवेचनात्मक दोषों का व्याख्याओं में सम्मिलित हो जाना संभव है किन्तु यह कदापि संभव नहीं कि कोई व्यक्ति स्पष्ट तौर पर ख़ुदा पर झूठ बांधे और कहे कि मैं उसका नबी हूं तथा अपना कलाम प्रस्तुत करे और कहे कि "यह ख़ुदा का कलाम है।" हालांकि वह न नबी हो और न उसका कलाम ख़ुदा का कलाम हो और फिर ख़ुदा उसे सच्चों के समान ढील दे" (यह सब कुछ हो और ख़ुदा उसे सच्चों की तरह मुहलत दे) और सच्चों के समान उसकी मान्यता बढ़ाए।"

इसलिए यह सिद्धान्त नितान्त उचित तथा मैत्री की नींव डालने वाला है कि हम ऐसे समस्त नबियों को सच्चा ठहराएं जिन का धर्म स्थापित हो गया और आयु पा गया और करोड़ों लोग उस धर्म में सम्मिलित हो गए। यह सिद्धान्त अति उत्तम सिद्धान्त है। यदि इस

सिद्धान्त का समस्त विश्व पालन करे तो हज़ारों उपद्रव एवं धर्म का अपमान जो प्रजा में पूर्णतः अमन एवं शान्ति के बाधक हैं समाप्त हो जाएं। यह तो स्पष्ट है कि जो लोग किसी धर्म के अनुयायियों को एक ऐसे व्यक्ति का अनुयायी समझते हैं जो उनके विचार में वास्तव में वह झूठा और झूठ बनाने वाला है तो वे इस विचार से बहुत से उपद्रवों की नींव डालते हैं तथा वे अवश्य ही धर्मों के अपमान के अपराधी होते हैं और उस नबी की शान में नितान्त धृष्टतायुक्त शब्दों का प्रयोग करते हैं तथा अपनी बातों को गालियों की सीमा तक पहुंचाते हैं तथा मैत्री और पूर्णतः प्रजा के अमन को भंग करते हैं हालांकि उनका यह विचार सर्वथा ग़लत होता है। वे अपने धृष्ट कथनों में ख़ुदा की दृष्टि में अत्याचारी होते हैं। ख़ुदा जो दयालु और कृपालु है वह कदापि पसन्द नहीं करता कि एक झूठे को अकारण उन्नति देकर और उसके धर्म की जड़ सुदृढ़ कर लोगों को धोखे में डाले और न वैध रखता है कि एक व्यक्ति महा झूठा और ख़ुदा पर झूठ घड़ने के बावजूद संसार की दृष्टि में सच्चे नबियों के समान हो जाए।

अतः यह सिद्धान्त नितान्त प्रिय, शान्तिदायक तथा मैत्री की नींव डालने वाला और नैतिक अवस्थाओं का सहायक है कि हम उन समस्त नबियों को सच्चा समझ लें जो संसार में आए। चाहे वे हिन्दुस्तान में प्रकट हुए, या फारस में या चीन में या किसी अन्य देश में और ख़ुदा ने करोड़ों हृदयों में उनकी श्रेष्ठता एवं सम्मान स्थापित कर दिया तथा उनके धर्म की जड़ सुदृढ़ कर दी तथा कई शताब्दियों तक वह धर्म चला आया। यही सिद्धान्त है जिसकी पवित्र क़ुर्आन ने हमें शिक्षा दी। इसी सिद्धान्त के अनुसार हम प्रत्येक धर्म के पेशवा को जिन के जीवन-चरित्र इस परिभाषा के अन्तर्गत आ गए हैं सम्मान की दृष्टि से देखते

हैं, यद्यपि वे हिन्दुओं के धर्म के पेशवा हों या पारसियों के धर्म के या चीनियों के धर्म के या यहूदियों के धर्म के या ईसाइयों के धर्म के। किन्तु खेद कि हमारे विरोधी हम से यह व्यवहार नहीं कर सकते तथा ख़ुदा का यह पवित्र और अपरिवर्तनीय कानून उन्हें स्मरण नहीं कि वह झूठे नबी को वह बरकत तथा सम्मान नहीं देता जो सच्चे को देता है और झूठे नबी का धर्म जड़ नहीं पकड़ता और न आयु पाता है जैसा कि सच्चे का जड़ पकड़ता है और आयु पाता है। अत: ऐसी आस्था रखने वाले लोग जो क़ौमों के नबियों को झूठा ठहराकर बुरा कहते रहते हैं हमेशा मैत्री और अमन के शत्रु होते हैं, क्योंकि क़ौमों के महापुरुषों को गालियां देना इस से अधिक उपद्रव को जन्म देने वाली अन्य कोई बात नहीं। प्राय: मनुष्य मरना भी पसन्द करता है परन्तु यह नहीं चाहता कि उसके पेशवा को बुरा कहा जाए। यदि हमें किसी धर्म की शिक्षा पर आपत्ति हो तो हमें उसके नबी के सम्मान पर आक्रमण नहीं करना चाहिए और न यह कि उसे बुरे शब्दों से स्मरण करें। अपितु हमें चाहिए कि उस क़ौम की वर्तमान कार्य-प्रणाली पर आक्षेप करें" (अर्थात् यदि वे दोष उस क़ौम में हैं तो उस क़ौम के उन दोषों पर आक्षेप करें न कि नबियों पर। कहा) "और विश्वास रखे वह नबी जो ख़ुदा तआला की ओर से करोड़ों लोगों में सम्मान प्राप्त कर गया और सैकड़ों वर्षों से उसकी मान्यता चली आती है यही ठोस प्रमाण उसके अल्लाह की ओर से होने का है। यदि वह ख़ुदा का मान्य न होता तो इतना अधिक सम्मान न पाता। झूठ घड़ने वाले को सम्मान देना तथा उसके धर्म को करोड़ों लोगों में फैलाना और युगों तक उस के बनाए हुए धर्म को सुरक्षित रखना ख़ुदा का नियम नहीं है। अत: जो धर्म संसार में फैल जाए और जड़ पकड़ जाए तथा सम्मान एवं आयु पा जाए वह अपने

मूल की दृष्टि से कदापि झूठा नहीं हो सकता। अत: यदि वह शिक्षा आक्षेप करने योग्य है तो उसका कारण या तो यह होगा कि" (आप[अ.] ने उसके तीन कारण बताए हैं कि यदि वह धर्म वर्तमान युग में आपत्तिजनक होता है तो उसके तीन कारण हैं न.1) "उस नबी के निर्देशों में परिवर्तन किया गया है" (अर्थात नबी ने जो निर्देश दिए थे उनको परिवर्तित किया गया न. 2) "और या यह कारण होगा कि उन निर्देशों की व्याख्या करने में ग़लती हुई है" (इनकी व्याख्या गलत रंग में की गई और तीसरी बात यह) "या यह भी संभव है कि हम स्वयं आक्षेप करने में सत्य पर न हों" (एक बात की समझ ही नहीं आई और आपत्ति खड़ी कर दी और ऐतराज़ कर दिया। जिस प्रकार आजकल उठते हैं और आंहज़रत[स.अ.व.] के अस्तित्व पर आरोप लगा देते हैं, हालांकि न इतिहास पढ़ा, न घटनाओं का अध्ययन किया, न क़ुर्आन की समझ आई। फ़रमाया कि) "अत: देखा जाता है कि कुछ पादरी लोग अपने अल्प-बोध के कारण पवित्र क़ुर्आन की उन बातों पर ऐतराज़ कर देते हैं जिन्हें तौरात में सही और ख़ुदा की शिक्षा स्वीकार कर चुके हैं। अत: ऐसा आरोप स्वयं अपनी ग़लती या जल्दबाज़ी होती है।"

(फिर फ़रमाया) - "सारांश यह कि संसार के कल्याण, अमन, मैत्री, संयम तथा ख़ुदा का भय इसी सिद्धान्त में है कि हम उन नबियों को कदापि झूठा न ठहराएं, जिनकी सच्चाई के बारे में करोड़ों लोगों की सैकड़ों वर्षों से राय स्थापित हो चुकी हो और ख़ुदा के समर्थन हमेशा से उन के साथ रहे हों और मैं विश्वास रखता हूं कि एक सत्याभिलाषी चाहे वह एशियाई हो या यूरोपियन हमारे इस सिद्धान्त को पसन्द करेगा और आह भर कर कहेगा कि खेद है हमारा सिद्धान्त ऐसा क्यों न हुआ।"

(महारानी को लिखते हैं कि) "मैं इस सिद्धान्त को इस उद्देश्य से हज़रत महारानी क़ैसरा-ए-हिन्द एवं इंग्लैण्ड" (उस समय तो हिन्दुस्तान पर भी महारानी का शासन था) "की सेवा में प्रस्तुत करता हूं कि विश्व में शान्ति को फैलाने वाला मात्र यही एक सिद्धान्त है जो हमारा सिद्धान्त है। इस्लाम गर्व कर सकता है कि इस प्रिय और मनमोहक सिद्धान्त को विशेष तौर पर अपने साथ रखता है। क्या हमारे लिए उचित है कि ऐसे महापुरुषों का अपमान करें ? ख़ुदा की कृपा ने एक संसार को उनके अधीन कर दिया तथा सैकड़ों वर्षों से बादशाहों की गर्दनें उनके आगे झुकती चली आईं ? क्या हमारे लिए उचित है कि हम ख़ुदा के बारे में यह कुधारणा रखें कि वह झूठों को सच्चों की शान देकर तथा सच्चों के समान करोड़ों लोगों का पेशवा बनाकर उनके धर्म को एक लम्बी आयु देकर तथा उनके धर्म के समर्थन में आकाशीय निशान प्रकट करके संसार को धोखा देना चाहता है ? यदि ख़ुदा ही हमें धोखा दे तो फिर हम सत्य और असत्य में क्योंकर अन्तर कर सकते हैं ?"

(फ़रमाया) "यह बड़ा आवश्यक विषय है कि झूठे नबी की प्रतिष्ठा, वैभव, क़ुबूलियत और महानता ऐसी नहीं फैलनी चाहिए जिस प्रकार कि सच्चे की तथा झूठों की योजनाओं में वह शोभा उत्पन्न नहीं होनी चाहिए जैसी कि सच्चे के कारोबार में पैदा होनी चाहिए। इसीलिए सच्चे का प्रथम लक्षण यही है कि ख़ुदा के अनश्वर समर्थनों की श्रृंखला उसके साथ हो और ख़ुदा उसके धर्म के पौधे को करोड़ों हृदयों में लगा दे तथा आयु प्रदान करे। अतः जिस नबी के धर्म में हम ये लक्षण पाएं, हमें चाहिए कि हम अपनी मृत्यु और न्याय के दिन को स्मरण करके ऐसे महान पेशवा का अपमान न करें अपितु सच्चा सम्मान और सच्चा प्रेम करें। अतः यह वह प्रथम सिद्धान्त है जो हमें ख़ुदा ने सिखाया है,

जिसके द्वारा हम एक बड़े नैतिक भाग के उत्तराधिकारी हो गए हैं।"

(तुहफ़ा क़ैसरिया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 12, पृष्ठ 258-262)

आप[अ.] ने यह भी फ़रमाया कि ऐसी कान्फ्रेंसें होनी चाहिए जहां विभिन्न धर्मों के लोग अपने धर्म के बारे में विशेषताएं भी वर्णन करें।

(उद्धृत तुहफ़ा क़ैसरिया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 12, पृष्ठ 279)

और इस समय यदि देखा जाए तो क्रियात्मक रूप में इस्लाम संसार का प्रथम धर्म है और संख्या की दृष्टि से यह बहरहाल संसार का दूसरा बड़ा धर्म है। इसलिए संसार के दूसरे धर्मों को मुसलमानों का बहरहाल सम्मान करना चाहिए और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के मान-सम्मान का जो अधिकार है वह अदा करने का प्रयास करना चाहिए, नहीं तो संसार में उत्पात और अशान्ति पैदा होगी। इसलिए जब हम संसार के धर्मों का मान-सम्मान करते हैं, उनके महापुरुषों और नबियों (अवतारों) को ख़ुदा तआला का भेजा हुआ समझते हैं तो केवल उस सुन्दर शिक्षा के कारण जो हमें पवित्र क़ुर्आन ने दी है और जो हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] ने हमें सिखाई। इस्लाम के विरोधी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के बारे में अनुचित शब्दों का प्रयोग करने के बावजूद अश्लील प्रकार के चित्र भी बनाते हैं, परन्तु हम किसी धर्म के नबी और महापुरुष को उत्तर में ग़लत शब्दों से नहीं पुकारते या उनका उपहास नहीं करते। इसके बावजूद मुसलमानों को निशाना बनाया जाता है कि ये शान्ति भंग करने वाले हैं। पहले ये लोग स्वयं शान्ति नष्ट करने वाली गतिविधियां करते हैं, भावनाओं को भड़काने का प्रयत्न करते हैं और जब भावनाएं भड़क जाएं तो कहते हैं कि देखो मुसलमान हैं ही हिंसाप्रिय। इसलिए इनके विरुद्ध हर प्रकार की कार्यवाही करो .......

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस सन्देश की जो मैंने पढ़ा है भलीभांति प्रसिद्धि करें ताकि संसार को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का ज्ञान हो सके। सांसारिक लोगों को यह ज्ञात ही नहीं है कि हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] का स्थान हमारे हृदय में और सच्चे मुसलमान के हृदय में क्या है ? आप[स.अ.व.] की शिक्षा और आप[स.अ.व.] का उत्तम आदर्श कितना सुन्दर है और उसमें क्या सौन्दर्य है ? एक सच्चे मुसलमान को आप[स.] से कितना प्रेम है उसका ये लोग अनुमान भी नहीं लगा सकते। आप[स.] से प्रेम और मुहब्बत का प्रकटन आज से चौदह सौ वर्ष पूर्व केवल हज़रत हस्सान बिन साबित ने ही अपने इस शे'र में नहीं किया था कि :-

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِىْ فَعَمِيَ عَلَيْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَآءَ بَعْدَكَ فَلْيَمُتْ فَعَلَيْكَ كُنْتُ اُحَاذِرُ

अर्थात् हे मुहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ! तू तो मेरी आंख की पुतली था, आज तेरे मरने से मेरी आंख अन्धी हो गई है। अब तेरे मरने के बाद कोई मरे मुझे कुछ परवाह नहीं। मैं तो तेरी मृत्यु से ही डरता था। यह शे'र आप की मृत्यु पर हस्सान[रज़ि.] बिन साबित ने कहा था, परन्तु हमारे अन्दर इस युग में भी हज़रत मसीह मौऊद[अ.] ने आंहज़रत[स.अ.व.] से घनिष्ठ प्रेम और मुहब्बत, पैदा की है। हमारे हृदय में इस प्रेम की ज्योति जलाई है। आप[अ.] एक स्थान पर इस प्रेम का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाते हैं :

आप[अ.] का जो बड़ा लम्बा क़सीदा है उसके कुछ शे'र हैं कि :

قَوْمٌ رَأَوْكَ وَ اُمَّةٌ قَدْ اُخْبِرَتْ
مِنْ ذٰلِكَ الْبَدْرِ الَّذِىْ اَصْبَانِىْ

कि एक क़ौम ने तुझे देखा है और एक उम्मत ने ख़बर सुनी है

उस बद्र (चौदहवीं के चन्द्रमा) की जिसने मुझे अपना प्रेमी बनाया।

يَبْكُونَ مِنْ ذِكْرِ الْجَمَالِ صَبَابَةً
وَتَأَلُّمًا مِّنْ لَوْعَةِ الْهِجْرَانِ

वे तेरे सौन्दर्य की याद में प्रेम के कारण रोते हैं और पृथकता की जलन के कष्ट उठाने से भी रोते हैं।

وَأَرَى الْقُلُوبَ لَدَى الْحَنَاجِرِ كُرْبَةً
وَأَرَى الْغُرُوبَ تُسِيْلُهَا الْعَيْنَانِ

और मैं देखता हूं कि हृदय बेचैनी से कंठ तक आ गए हैं और मैं देखता हूं कि आंखें आंसू बहा रही हैं (यह क़सीदा बहुत से लोगों को अपितु अब तो हमारे बच्चों को भी याद है। इस लम्बे क़सीदे का अन्तिम शे'र यह है कि)

جِسْمِيْ يَطِيْرُ اِلَيْكَ مِنْ شَوْقٍ عَلَا
يَالَيْتَ كَانَتْ قُوَّةُ الطَّيَرَانِ

कि मेरा शरीर तो रुचि की अधिकता के कारण तेरी ओर उड़ना चाहता है। ए काश मेरे अन्दर उड़ने की शक्ति होती।

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-5, पृष्ठ - 590, 594)

अतः हमें तो आंहज़रत[स.अ.व.] से प्रेम के ये पाठ सिखाए गए हैं और ये सांसारिक लोग कहते हैं कि क्या फ़र्क पड़ता है ? हल्का-फुल्का मज़ाक है। जब शिष्टाचार इस सीमा तक गिर जाते हैं कि शिष्टाचार के मापदण्ड ऊंचे जाने के स्थान पर पतन को छूने लगें तो तब संसार की शान्ति भी बरबाद हो जाती है ................ परन्तु जैसा कि मैंने कहा है, हमारा काम है कि अधिक से अधिक प्रयत्न करके आंहज़रत[स.अ.व.] के जीवन के विभिन्न पहलुओं को संसार के समक्ष प्रस्तुत करें। इसके लिए संक्षिप्त और बड़ी व्यापक पुस्तक

LIFE OF MUHAMMAD या तफ़्सीरुल क़ुर्आन की भूमिका का जीवन-चरित्र वाला भाग है, उसे हर अहमदी को पढ़ना चाहिए। उसमें जीवन चरित्र के लगभग समस्त पहलू वर्णन हो गए हैं या यह कह सकते हैं कि आवश्यक पहलू वर्णन हो गए हैं। फिर अपनी रुचि, शौक़ और ज्ञान संबंधी योग्यता की दृष्टि से दूसरी जीवनी की पुस्तकें भी पढ़ें और संसार को भिन्न-भिन्न उपायों से, सम्पर्कों से, लेखों से, पम्फ्लट से आंहज़रत[स.अ.व.] के आदर्श एवं उपकारों से अवगत कराएं। अल्लाह तआला इस महत्त्वपूर्ण कार्य और कर्त्तव्य को पूर्ण करने का प्रत्येक अहमदी को सामर्थ्य प्रदान करे और संसार को बुद्धि दे कि उसका एक बुद्धिमान वर्ग स्वयं इस प्रकार के अश्लील और अत्याचारपूर्ण मज़ाक करने वालों या शत्रुताओं को प्रकट करने वालों का खण्डन करे ताकि विश्व अशान्ति से भी बच सके और ख़ुदा तआला के अज़ाब से भी बच सके। ख़ुदा करे कि ऐसा ही हो।

(ख़ुत्बा जुमा, 28 सितम्बर 2012 ई. से)

## अहमदी की प्रतिक्रिया की पद्धति

जब सन् 2006 ई. में डेनमार्क में रहमतुल्लिल आलमीन मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के बारे में अत्यन्त अश्लील, अपमानजनक तथा मुसलमानों की भावनाओं को भड़काने वाले कार्टूनों को प्रकाशित कराया गया तो हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब पंचम ख़लीफ़ा ने उसकी कठोर शब्दों में निन्दा करते हुए जुमा के ख़ुत्बे दिए। उस समय मुसलमान देशों में जबकि प्रतिक्रिया स्वरूप प्रदर्शन के तौर पर तोड़-फोड़ की जा रही थी और अपने ही देशों में आगें

लगाकर अपनी ही हानि की जा रही थी, तो हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया ने अपनी जमाअत को विशेषतया और मुसलमानों को सामान्यतया आग्रहपूर्वक नसीहत करते हुए प्रतिक्रिया का उचित मार्ग-दर्शन करते हुए फ़रमाया -

"जैसा कि मैंने कहा था शायद बल्कि निश्चित तौर पर सब से अधिक इस कृत्य पर हमारे दिल छलनी हैं, परन्तु हमारी प्रतिक्रिया के ढंग और हैं। यहां मैं यह भी बता दूं कि कुछ दूर नहीं कि सदैव की भांति समय समय पर ये ऐसी भड़काने वाली बातें भविष्य में भी करते रहें। कोई न कोई ऐसा कृत्य कर जाएं जिस से फिर मुसलमानों के दिलों को कष्ट पहुंचे। इसके पीछे एक उद्‌देश्य यह भी हो सकता है कि कानूनी तौर पर मुसलमानों पर विशेषतः पूरब से आने वाले तथा पाकिस्तान और हिन्दुस्तान से आने वाले मुसलमानों पर इस बहाने प्रतिबंध लगाने का प्रयास किया जाए। बहरहाल इस से दृष्टि हटाते हुए कि ये लोग प्रतिबंध लगाते हैं या नहीं, हमें अपने आचरण इस्लामी मूल्यों एवं शिक्षा के अनुसार ढालने चाहिएं।

जैसा कि मैंने कहा था कि इस्लाम तथा आंहज़रत[स.अ.व.] के विरुद्ध प्रारंभ से ही ये षडयंत्र चल रहे हैं, परन्तु अल्लाह तआला ने चूंकि उसकी रक्षा करनी है, वादा है, इसलिए वह रक्षा करता चला आ रहा है। समस्त विरोधात्मक प्रयास असफल हो जाते हैं।"

## इस्लाम और हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के विरुद्ध षड्यंत्रों की प्रतिरक्षा मसीह मौऊद[अ.] ने करनी थी

इस युग में उसने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस

उद्देश्य के लिए भेजा है तथा इस युग में आंहज़रत[स.अ.व.] के अस्तित्व पर जो हमले हुए और जिस प्रकार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तथा बाद में आपकी शिक्षा का पालन करते हुए आप[अ.] के ख़लीफ़ों ने जमाअत का मार्ग-दर्शन किया तथा प्रतिक्रिया प्रकट की और फिर उसके जो परिणाम निकले उसके एक दो उदाहरण प्रस्तुत करता हूं ताकि वे लोग जो अहमदियों पर यह आरोप लगाते हैं कि हड़तालें न करके और उन में सम्मिलित न होकर हम यह सिद्ध कर रहे हैं कि हमें आंहज़रत[स.अ.व.] के अस्तित्व पर कीचड़ उछालने की कोई पीड़ा नहीं है, उन पर जमाअत के कारनामे स्पष्ट हो जाएं।

हमारी प्रतिक्रिया सदैव ऐसी होती है और होनी चाहिए जिस से आंहज़रत[स.अ.व.] की शिक्षा और आदर्श निखर कर सामने आए। पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा निखर कर सामने आए। आंहज़रत[स.अ.व.] के अस्तित्व पर अपवित्र हमले देख कर विनाशकारी कार्यवाहियां करने की बजाए अल्लाह तआला के समक्ष झुकते हुए उससे सहायता मांगने वाले हम बनते हैं। अब मैं आंहज़रत[स.अ.व.] के सच्चे प्रेमी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के रसूल[स.] से प्रेम के स्वाभिमान पर दो उदाहरण प्रस्तुत करता हूं -

प्रथम उदाहरण अब्दुल्लाह आथम का है जो ईसाई था। उसने अपनी पुस्तक में आंहज़रत[स.अ.व.] के बारे में अपनी अत्यन्त गन्दी मानसिकता का प्रदर्शन करते हुए दज्जाल का शब्द (नऊज़ुबिल्लाह) प्रयोग किया। उस समय हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ इस्लाम और ईसाइयत के बारे में एक मुबाहसा भी चल रहा था, एक बहस हो रही थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि मैं पन्द्रह दिन तक बहस में व्यस्त रहा, बहस चलती रही और गुप्त तौर

पर आथम की भर्त्सना के लिए दुआ मांगता रहा अर्थात् जो शब्द उसने कहे हैं उसकी पकड़ के लिए। हज़रत मसीह मौऊद[अ.] फरमाते हैं कि जब बहस समाप्त हुई तो मैंने उससे कहा कि एक बहस तो समाप्त हो गई परन्तु एक रंग का मुकाबला शेष रहा जो ख़ुदा की ओर से है और वह यह है कि आपने अपनी पुस्तक "अन्दरूना बाइबल" में हमारे नबी[स.अ.व.] को दज्जाल के नाम से पुकारा है और मैं आंहज़रत[स.अ.व.] को सच्चा और सत्यनिष्ठ जानता हूं तथा इस्लाम धर्म के ख़ुदा की ओर से होने पर विश्वास रखता हूं। अत: यह वह मुक़ाबला है कि आसमानी फैसला यह है कि हम दोनों में से जो व्यक्ति अपने कथन में झूठा है और अकारण रसूल को झूठा और दज्जाल कहता है तथा सच्चाई का शत्रु है वह आज के दिन से पन्द्रह महीने तक उस व्यक्ति के जीवन में ही जो सत्य पर है हाविय: में गिरेगा, इस शर्त पर कि सत्य की ओर न आए अर्थात् सच्चे एवं सत्यनिष्ठ नबी को दज्जाल कहने से न रुके तथा अशिष्टता और अपशब्दों को न छोड़े। यह इसलिए कहा गया कि केवल किसी धर्म का इन्कार कर देना संसार में दण्ड का पात्र नहीं ठहरता अपितु धृष्टता और चपलता तथा अपशब्द दण्डनीय ठहरते हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कहते हैं - जब मैंने यह कहा तो उस का रंग उड़ गया, चेहरा पीला पड़ गया, हाथ कांपने लगे, तब उसने अविलम्ब अपनी जीभ मुख से निकाली और दोनों हाथ कानों पर रख लिए और हाथों को सर सहित हिलाना आरंभ कर दिया जैसा एक भयभीत अपराधी एक आरोप का कठोरता के साथ इन्कार करे तौब: और विनयपूर्वक स्वयं को प्रकट करता है और बार-बार कहता था कि तौब: तौब: मैंने अपमान और धृष्टता नहीं की और बाद में भी इस्लाम के विरुद्ध कभी नहीं बोला।

तो यह था आंहज़रत[स.अ.व.] का स्वाभिमान रखने वाले ख़ुदा के शेर की प्रतिक्रिया। वह ललकारते थे ऐसी हरकतें करने वालों को।

फिर एक व्यक्ति लेखराम था जो आंहज़रत[स.अ.व.] को गालियां निकालता था उसकी इस निर्लज्जता पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उसे रोकने का प्रयास किया। वह न रुका। अन्त में आप[अ.] ने दुआ की तो अल्लाह तआला ने उसकी कष्टदायक मृत्यु की सूचना दी।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में कहते हैं कि ख़ुदा तआला ने अल्लाह और रसूल के एक शत्रु के बारे में जो आंहज़रत[स.अ.व.] को गालियां देता है और अपवित्र शब्द मुँह से निकालता है जिसका नाम लेखराम है मुझे वादा दिया और मेरी दुआ सुनी और जब मैंने उस पर बद-दुआ की तो ख़ुदा ने मुझे शुभसंदेश दिया कि वह छः वर्ष के अन्दर मृत्यु का शिकार हो जाएगा। यह उनके लिए निशान है जो सच्चे धर्म को ढूंढते हैं। अत: ऐसा ही हुआ और वह बड़ी कष्टदायक मृत्यु से मरा।

## हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] का उच्च आदर्श संसार के समक्ष प्रस्तुत करो

यही ढंग हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सिखाए कि इस प्रकार की हरकत करने वालों को समझाओ। आंहज़रत[स.अ.व.] की अच्छाइयां वर्णन करो, संसार को उन सुन्दर और प्रकाशमान पहलुओं से अवगत कराओ जो संसार की दृष्टि से ओझल हैं और अल्लाह से दुआ करो कि या तो अल्लाह तआला उनको इन हरकतों से रोके या

फिर स्वयं उनकी पकड़ करे। अल्लाह तआला की पकड़ के अपने ढंग हैं। वह अधिक उचित जानता है कि उसने किस ढंग से किस को पकड़ना है।

फिर दूसरी ख़िलाफ़त के समय में एक अत्यन्त अश्लील पुस्तक "रंगीला रसूल" के नाम से लिखी गई। फिर एक पत्रिका "वर्तमान" ने एक अश्लील लेख प्रकाशित किया जिस पर हिन्दुस्तान के मुसलमानों में एक उत्तेजना पैदा हो गई। हर ओर मुसलमानों में एक जोश था और बड़ी कठोर प्रतिक्रिया थी।

इस पर हज़रत मुस्लिह मौऊद[रज़ि.] द्वितीय ख़लीफ़ा ने मुसलमानों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि -

"हे भाइयो ! मैं दर्द भरे हृदय से पुनः आप को कहता हूं कि बहादुर वह नहीं जो लड़ पड़ता है, वह कायर है क्योंकि वह अपनी मनोवृत्ति से दब गया है" (अब यह हदीस के अनुसार है कि क्रोध को दबाने वाला वास्तव में बहादुर होता है। कहा कि) "बहादुर वह है जो एक स्थायी इरादा कर लेता है और जब तक उसे पूरा न करे उस से पीछे नहीं हटता (आप[रज़ि.] ने फ़रमाया) इस्लाम की उन्नति के लिए तीन बातों का प्रण करो। **प्रथम बात** यह कि आप ख़ुदा के भय से काम लेंगे और धर्म को लापरवाही की दृष्टि से नहीं देखेंगे। पहले स्वयं अपने कर्म ठीक करो। **दूसरे** यह कि इस्लाम के प्रचार में पूर्ण रुचि लेंगे। इस्लाम की शिक्षा विश्व के प्रत्येक व्यक्ति को पता लगे। आंहज़रत[स.अ.व.] की विशेषताएं, सुन्दर जीवन की अच्छाइयों का पता लगे, आदर्श का पता लगे। **तीसरे** यह कि आप मुसलमानों को सामाजिक एवं आर्थिक दासता से बचाने के लिए भरसक प्रयत्न करेंगे।

(अन्वारुल उलूम जिल्द - 9, पृष्ठ - 555-556)

अब प्रत्येक मुसलमान का, सामान्य मनुष्य का तथा लीडरों का भी कर्त्तव्य है। अब देखें कि स्वतंत्रता के बावजूद ये मुसलमान देश जो स्वतंत्र कहलाते हैं, इसके बावजूद अभी तक सामाजिक एवं आर्थिक दासता का शिकार हैं, इन पश्चिमी क़ौमों के कृतज्ञ हैं उनकी नक़ल करने की ओर लगे हुए हैं, स्वयं कार्य नहीं करते। हम अधिकतर उन्हीं पर निर्भर हैं तथा इसीलिए ये लोग कभी-कभी मुसलमानों की भावनाओं से खेलते भी रहते हैं। फिर आप[रज़ि.] ने हज़रत नबी करीम[स.अ.व.] के जीवन पर जल्से भी आरंभ कराए। ये उपाय हैं विरोध प्रदर्शन के, न कि तोड़-फोड़ करना, उपद्रव फैलाना। इन बातों में जो आप ने मुसलमानों को सम्बोधन करते हुए की थीं सब से अधिक अहमदी सम्बोधित हैं।

इन देशों की कुछ ग़लत परम्पराएं जाने-अनजाने हमारे ख़ानदानों में प्रवेश कर रही हैं। मैं अहमदियों को कहता हूं कि आप लोग भी सम्बोधित थे उनके रहन-सहन की ये जो अच्छी बातें हैं वे तो अपनाएं परन्तु जो ग़लत बातें हैं उनसे हमें बचना चाहिए। अतः हमारी प्रतिक्रिया यही होनी चाहिए कि तोड़-फोड़ करने की बजाए हमें आत्म विश्लेषण करने की ओर ध्यान देना चाहिए। हम देखें कि हमारे कर्म क्या हैं, हमारे अन्दर ख़ुदा का भय कितना है, उसकी उपासना की ओर कितना ध्यान है, धार्मिक आदेशों का पालन करने की ओर कितना ध्यान है, अल्लाह तआला का सन्देश पहुंचाने की ओर कितना ध्यान है।

फिर देखें कि जमाअत अहमदिया की चौथी ख़िलाफ़त का दौर था जब रुश्दी ने बड़ी अपमानजनक पुस्तक लिखी थी। उस समय हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह चतुर्थ रह. ने ख़ुत्बे भी दिए थे और एक पुस्तक भी लिखवाई थी। फिर जिस प्रकार कि मैंने कहा ये हरकतें होती रहती हैं। गत

वर्ष के प्रारंभ में भी हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के बारे में इस प्रकार का एक लेख आया था, उस समय भी मैंने जमाअत को भी तथा अधीनस्थ संगठनों का भी इस ओर ध्यान आकृष्ट कराया था कि लेख लिखें, पत्र लिखें, सम्पर्क बढ़ाएं, आंहज़रत[स.अ.व.] के जीवन की विशेषताएं और उन की अच्छाइयों पर प्रकाश डालें। अतः यह तो आप[स.] के जीवन के सुन्दर पहलुओं को संसार के समक्ष प्रदर्शित करने का प्रश्न है, यह तोड़-फोड़ से प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए यदि प्रत्येक वर्ग के अहमदी हर देश में दूसरे शिक्षित और समझदार मुसलमानों को भी सम्मिलित करें कि तुम भी इस प्रकार शान्तिपूर्ण ढंग से यह प्रतिक्रिया प्रकट करो, अपने सम्पर्क बढ़ाओ और लिखो तो प्रत्येक देश में प्रत्येक वर्ग में समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाएगा और फिर जो करेगा उसका मामला ख़ुदा के साथ है।

अल्लाह तआला ने तो हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] को समस्त लोकों के लिए रहमत बना कर भेजा है जैसा स्वयं उसका कथन है -

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (सूरह अलअंबिया - 108)

कि हमने तुझे नहीं भेजा किन्तु समस्त लोकों के लिए दया के तौर पर। रहमत बांटने के लिए आप से बड़ी हस्ती न पहले कभी पैदा हुई और न बाद में हो सकती है। हां आप का आदर्श है जो सदैव स्थापित है तथा उस का अनुसरण करने का प्रत्येक मुसलमान को प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए सबसे अधिक दायित्व अहमदी का है, हम पर ही लागू होता है। अतः बहरहाल आप[स.अ.व.] तो समस्त लोकों के लिए रहमत थे और ये लोग आप का यह चित्र प्रस्तुत करते हैं जिस से अत्यन्त भयानक कल्पना उभरती है। अतः हमें आंहज़रत[स.अ.व.] प्रेम एवं दया के आदर्श को संसार को बताना चाहिए। स्पष्ट है कि इसको बताने के लिए मुसलमानों को अपने आचरण भी परिवर्तित करने होंगे।

उग्रवाद का तो प्रश्न ही पैदा नहीं होता। आंहज़रत[स.अ.व.] ने तो युद्ध से बचने का भी हमेशा प्रयत्न किया है। जब तक कि आप पर मदीना में आकर युद्ध थोपा नहीं गया। फिर बहरहाल अल्लाह तआला की अनुमति से प्रतिरक्षास्वरूप युद्ध करना पड़ा परन्तु वहां भी क्या आदेश था किम -

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ

(अलबक़रह - 191)

कि हे मुसलमानो ! अल्लाह के मार्ग में लड़ो जो तुम से लड़ते हैं किन्तु अत्याचार न करो। अल्लाह तआला निश्चय ही अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करता।

आंहज़रत[स.अ.व.] सब से बढ़कर स्वयं पर उतरने वाली शरीअत (धार्मिक विधान) पर कार्यरत होने वाले थे। उनके बारे में ऐसे अनुचित विचारों को प्रकट करना बहुत बड़ा अन्याय है।

## जमाअत अहमदिया की कार्टूनों के प्रकाशन के विरुद्ध त्वरित कार्यवाही

अन्य मुसलमानों को तो यह जोश है कि हड़तालें कर रहे हैं क्योंकि उनकी प्रतिक्रिया यही है कि तोड़-फोड़ हो तथा हड़तालें हों और जमाअत अहमदिया की इस घटना के पश्चात् जो त्वरित प्रक्रिया होनी चाहिए थी वह हुई। अहमदी की प्रतिक्रिया यह थी कि उन्होंने तुरन्त अख़बारों से सम्पर्क किया और यह कोई आज की बात नहीं कि 2006 ई. की फ़रवरी में हड़तालें हो रही हैं। यह घटना तो पिछले वर्ष की है। सितम्बर में यह हरकत हुई थी तो उस समय हमने क्या किया था। यह जैसा कि मैंने कहा कि सितम्बर की हरकत है या

अक्तूबर के आरंभ की कह लें। हमारे प्रचारक ने उस समय तुरन्त एक विस्तृत लेख तैयार किया और जिस अख़बार में कार्टून प्रकाशित हुआ था उनको यह भिजवाया और चित्रों के प्रकाशित करने पर विरोध प्रकट किया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की शिक्षा के बारे में बताया कि यह हमारी प्रतिक्रिया इस प्रकार है, हम जुलूस तो नहीं निकालेंगे परन्तु क़लम का जिहाद हम तुम्हारे साथ करेंगे। चित्र के प्रकाशक पर खेद प्रकट करते हैं। उसको बताया कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तो होगी परन्तु उसका तात्पर्य यह तो नहीं है कि दूसरों के हृदयों को कष्ट पहुंचाया जाए। बहरहाल इसकी सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई। अख़बार को एक लेख भी भेजा गया जो अख़बार ने प्रकाशित कर दिया। डेनिश लोगों की ओर से बड़ी उत्तम प्रतिक्रिया हुई क्योंकि मिशन में फोन और पत्रों द्वारा उन्होंने हमारे लेख को बहुत पसन्द किया, सन्देश आए। फिर एक मीटिंग में जर्नलिस्ट यूनियन के अध्यक्ष की ओर से सम्मिलित होने का निमंत्रण प्राप्त हुआ वहां गए, स्पष्टीकरण किया कि ठीक है तुम्हारा क़ानून अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की अनुमति देता है परन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं कि दूसरों के धार्मिक पथ-प्रदर्शकों तथा सम्माननीय पुरुषों को अपमान की दृष्टि से देखो और उनका तिरस्कार करो। यहां जो मुसलमान और ईसाई इस समाज में इकट्ठे रह रहे हैं उनकी भावनाओं का बहरहाल ध्यान रखना आवश्यक है, क्योंकि इसके बिना शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।

फिर उन्हें बताया कि आंहज़रत[स.अ.व.] की कितनी सुन्दर शिक्षा है और कैसा उत्तम आदर्श है तथा आप[स.] कितने उच्च शिष्टाचार के मालिक थे और लोगों के कितने हमदर्द थे। किस प्रकार हमदर्द थे ख़ुदा की प्रजा के, और हमदर्दी एवं सहानुभूति के द्योतक थे। कुछ

वृतांत जब उनको बताए गए कि बोलो जो ऐसी शिक्षा वाला तथा ऐसे कर्मों वाला व्यक्ति है उसके बारे में इस प्रकार का चित्र बनाना उचित है ? जब ये बातें हमारे मिशनरी की हुईं तो उन्होंने इसे बहुत पसन्द किया तथा सराहना की तथा एक कार्टून निर्माता ने नि:संकोच यह कहा कि यदि इस प्रकार की मीटिंग पहले हो जाती तो वह कदापि यह कार्टून न बनाते। अब उन्हें पता चला है कि इस्लाम की शिक्षा क्या है और सभी ने इस बात को प्रकट किया कि ठीक है डायलाग (Dialogue) का क्रम चलता रहना चाहिए।

फिर यूनियन के अध्यक्ष की ओर से भी प्रेस रिलीज़ जारी की गई जिसका मसौदा भी सब के सामने सुनाया गया और टीवी पर इन्टरव्यू हुआ जो बड़ा अच्छा रहा। फिर मिनिस्टर से भी मीटिंग हुई। तो बहरहाल जमाअत प्रयत्न करती है। दूसरे देशों में भी इस प्रकार हुआ है। अत: जहां इसका केन्द्र था वहां जमाअत ने पर्याप्त कार्य किया है। कार्टून का जो कारण बना है वह यह है कि डेनमार्क में एक डेनिश राइटर ने एक पुस्तक लिखी है जिसका अनुवाद यह है कि "आंहज़रत[स.अ.व.] का जीवन और क़ुर्आन" जो बाज़ार में आ चुकी है। इस पुस्तक वाले ने आंहज़रत[स.अ.व.] के कुछ चित्र बनाकर भेजने को कहा था तो कुछ लोगों ने बनाए। जिनके वे चित्र थे, उन्होंने अपना नाम प्रकट नहीं किया कि मुसलमानों की प्रतिक्रिया होगी। बहरहाल यह पुस्तक है जो कारण बन रही है। इस अख़बार में भी कार्टून ही कारण बना था। अत: इस बारे में उनको स्थायी प्रयत्न करते रहना चाहिए तथा संसार में प्रत्येक स्थान पर यदि इस को पढ़कर जहां-जहां भी आपत्तिजनक बातें हों वे प्रस्तुत करनी चाहिएं तथा उत्तर देने चाहिएं, परन्तु डेनमार्क में यह भी कल्पना है - कहते हैं कुछ मुसलमानों द्वारा ग़लत कार्टून जो हमने प्रकाशित ही

नहीं किए वे दिखा कर मुस्लिम जगत को उभारने का प्रयास किया जा रहा है। पता नहीं यह सच है या झूठ लेकिन हमारी इस शीघ्र कार्यवाही से उनमें यह एहसास अवश्य पैदा हुआ है। यह उसी समय प्रारंभ हो गया था, इन लोगों को तो आज पता लग रहा है जबकि यह तीन माह पूर्व की बात है।

अत: जैसा कि मैंने कहा था कि **प्रत्येक देश में हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के जीवन के पहलुओं को उजागर करने की आवश्यकता है**। विशेषत: जो इस्लाम के बारे में लड़ाकू और उन्मादी होने की एक कल्पना है उसका तर्कों के साथ खण्डन करना हमारा कर्त्तव्य है। इस से पूर्व भी मैंने कहा था कि अख़बारों में भी निरन्तर लिखें। अख़बारों तथा लिखने वालों को जीवनी की पुस्तकें भी भेजी जा सकती हैं।

## अहमदी युवाओं को पत्रकारिता में जाना चाहिए

फिर यह भी एक प्रस्ताव है भविष्य के लिए। जमाअत को यह भी प्लान (Plan) करना चाहिए कि युवा वर्ग जरनलिज़्म (Journalism) में अधिक से अधिक जाने का प्रयास करें, जिनको इस ओर अधिक रुचि हो ताकि अख़बारों के अन्दर भी, उन स्थानों पर भी, उन लोगों के साथ भी हमारा सम्पर्क रहे क्योंकि यह गतिविधियां कभी-कभी होती रहती हैं। यदि मीडिया के साथ अधिक से अधिक व्यापक संबंध स्थापित होगा तो इन अश्लील एवं व्यर्थ बातों को रोका जा सकता है। यदि इसके पश्चात् फिर भी कोई धृष्टता प्रदर्शित करता है तो फिर ऐसे लोग उस वर्ग में आते हैं, जिन पर अल्लाह ने इस लोक में ला'नत डाली है और परलोक में भी।

जैसा कि उसका कथन है -

اِنَّ الَّذِیۡنَ یُؤۡذُوۡنَ اللّٰہَ وَرَسُوۡلَہٗ لَعَنَہُمُ اللّٰہُ فِی الدُّنۡیَا وَالۡاٰخِرَۃِ وَاَعَدَّ لَہُمۡ عَذَابًا مُّہِیۡنًا ○ (अलअहज़ाब - 58)

अर्थात् वे लोग जो अल्लाह और उसके रसूल को कष्ट पहुंचाते हैं अल्लाह ने उन पर संसार में भी ला'नत डाली है और आख़िरत (परलोक) में भी और उसने उनके लिए अपमानित करने वाला अज़ाब तैयार किया है।

यह आदेश समाप्त नहीं हो गया हमारे नबी[स.अ.व.] जीवित नबी हैं। आप[स.] की शिक्षा सदैव जीवन देने वाली शिक्षा है। आप की शरीअत प्रत्येक युग की समस्याओं का समाधान करने वाली शरीअत है। आप[स.] का अनुसरण करने से अल्लाह तआला का सानिध्य प्राप्त होता है। अत: यह कष्ट जो आपके अनुयायियों को पहुंचाया जा रहा है किसी भी मायध्म से आज उस पर भी चरितार्थ होता है। अल्लाह तआला की हस्ती जीवित है वह देख रही है कि कैसी गतिविधियां की जा रही हैं।

अत: संसार को अवगत कराना हमारा कर्त्तव्य है। संसार को हमें बताना होगा कि जो दु:ख या कष्ट तुम पहुंचाते हो अल्लाह तआला उसका दण्ड आज भी देने की शक्ति रखता है। इसलिए अल्लाह तआला तथा उसके रसूल का हृदय दुखाना छोड़ दो, परन्तु जहां इसके लिए इस्लाम की शिक्षा और आंहज़रत[स.अ.व.] के आदर्श के बारे में संसार को बताना है वहां हमें अपने कर्म भी ठीक करने होंगे, क्योंकि हमारे अपने कर्म ही हैं जो संसार के मुख बन्द करेंगे और यही हैं जो संसार का मुख बन्द करने में सब से प्रमुख भूमिका अदा करते हैं। जैसा कि मैंने रिपोर्ट में बताया था वहां एक मुसलमान विद्वान पर दोगलेपन का यही आरोप लगाया जा रहा है कि हमें कुछ कहता है

और वहां जा कर कुछ करता है, उभारता है। वह रिपोर्ट कदाचित मैंने पढ़ी नहीं। अत: हमें अपने बाह्य और आन्तरिक को, अपने कथन और कर्म को एक करके ये क्रियात्मक आदर्श दिखाने होंगे।

## झण्डे जलाने या तोड़-फोड़ करने से हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] का सम्मान स्थापित नहीं हो सकता।

मुसलमान कहलाने वालों को भी मैं यह कहता हूं कि इस बात को छोड़ते हुए कि अहमदी हैं या नहीं, शिया हैं या सुन्नी हैं या किसी भी अन्य मुसलमान समुदाय से संबंध रखने वाले हैं। आप[स.] के अस्तित्व पर जब आक्रमण हो तो सामयिक जोश की बजाए, झण्डे जलाने की बजाए, तोड़-फोड़ करने की बजाए, दूतावासों पर आक्रमण करने की बजाए अपने आचरण को ठीक करें कि अन्य को उंगली उठाने का अवसर ही न मिले। क्या ये आगें लगाने से समझते हैं कि आंहज़रत[स.अ.व.] के सम्मान और स्थान का मात्र इतना ही महत्त्व है कि झण्डे जलाने से या किसी दूतावास का सामान जलाने से प्रतिशोध ले लिया। नहीं, हम तो नबी के मानने वाले हैं जो आग बुझाने आया था, वह प्रेम का दूत बन कर आया था, वह अमन का शहज़ादा था। अत: किसी भी कठोर क़दम उठाने की बजाए संसार को समझाएं और आप की सुन्दर शिक्षा के बारे में बताएं।

## एक अहमदी की वास्तविक प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए ?

अल्लाह तआला मुसलमानों को बुद्धि और समझ दे परन्तु मैं अहमदियों से यह कहता हूं कि इन का तो ज्ञात नहीं यह बुद्धि और बोध आए कि न आए परन्तु आप में से हर बच्चा हर बूढ़ा हर युवा, हर पुरुष

और हर स्त्री अश्लील कार्टून प्रकाशित होने की प्रतिक्रिया के तौर पर स्वयं को ऐसी आग लगाने वालों में सम्मिलित करें जो कभी न बुझने वाली आग हो जो किसी देश के झण्डे या सम्पत्तियों को लगाने वाली आग न हो जो कुछ ही मिनटों में या कुछ घंटों में बुझ जाए। अब बड़े जोश से लोग खड़े हैं (पाकिस्तान का एक चित्र था) आग लगा रहे हैं जिस प्रकार कोई बड़ा युद्ध जीत रहे हैं। यह आग पांच मिनट में बुझ जाएगी। हमारी आग तो ऐसी होनी चाहिए जो सदैव लगी रहने वाली आग हो। वह आग है आंहज़रत[स.अ.व.] से प्रेम और मुहब्बत की आग जो आप[स.] के प्रत्येक आदर्श को अपनाने और संसार को दिखाने की आग हो जो आपके हृदयों और सीनों में लगे तो फिर लगी रहे। यह आग ऐसी हो जो दुआओं में भी ढले और उसके शोले हर समय आकाश तक पहुंचते रहें।

## अपनी पीड़ा को दुआओं में ढालें, आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर अत्यधिक दरूद भेजें

अत: यह आग है जो प्रत्येक अहमदी ने अपने हृदय में लगानी है और अपनी पीड़ा को दुआओं में ढालना है किन्तु इसके लिए फिर माध्यम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] ने ही बनना है। अपनी दुआओं की स्वीकारिता के लिए और अल्लाह तआला के प्रेम को खींचने के लिए, संसार की व्यर्थ बातों से बचने के लिए इस प्रकार के उपद्रव उठते हैं उनसे स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम को हृदयों में सुलगता रखने के लिए अपना यह लोक और परलोक संवारने के लिए आंहज़रत[स.अ.व.] पर असंख्य दरूद भेजना चाहिए। इस उपद्रवपूर्ण युग में स्वयं को आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रेम में लीन रखने के लिए अपनी नस्लों को अहमदियत तथा इस्लाम पर स्थापित रखने के लिए प्रत्येक अहमदी को

अल्लाह तआला के इस आदेश का पालन करना चाहिए कि -

اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوۡنَ عَلَی النَّبِیِّ ؕ یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا صَلُّوۡا عَلَیۡہِ وَسَلِّمُوۡا تَسۡلِیۡمًا ○

(अलअहज़ाब - 57)

कि हे लोगो ! जो ईमान लाए हो तुम भी उस पर दरूद और सलाम भेजा करो क्योंकि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं।

(ख़ुत्बा जुमा 10 फ़रवरी 2006 ई. मस्जिद बैतुल फ़ुतूह, लन्दन, उस्वए-रसूल[स.अ.व.] और व्यंग्य चित्रों की वास्तविकता द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 9 से 20 तक उद्धृत)

## दूसरों की भावनाओं से खेलना न तो प्रजातंत्र है और न ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम ने पश्चिम को भी दूसरों की भावनाओं से खेलने पर चेतावनी दी कि यह अल्लाह के प्रकोप को भड़काने का कारण हुआ करता है आपने कहा कि :

जहां हम संसार को समझाते है कि किसी भी धर्म की पवित्र हस्तियों के बारे में किसी भी प्रकार का अनुचित विचार प्रकट करना, किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता की श्रेणी में नहीं आता। तुम जो प्रजातंत्र और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के चैम्पियन बन कर दूसरों की भावनाओं से खेलते हो यह न तो प्रजातंत्र है और न ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता है। प्रत्येक वस्तु की एक सीमा होती है तथा कुछ शिष्टाचार-प्रणाली होती है। जिस प्रकार प्रत्येक व्यवसाय में एक शिष्टाचार प्रणाली होती है तथा इसी प्रकार कोई भी शासन-प्रणाली हो उसकी भी प्रणाली और नियम होते हैं।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का यह अर्थ कदापि नहीं है कि दूसरों की भावनाओं से खेला जाए, उसको कष्ट पहुंचाया जाए। यदि यही स्वतंत्रता है जिस पर पश्चिम को गर्व है तो यह स्वतंत्रता उन्नति की ओर ले जाने वाली नहीं है अपितु यह अवनति की ओर ले जाने वाली स्वतंत्रता है।"

## हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के अपमान पर आधारित गतिविधियों पर आग्रह ख़ुदा के आक्रोश को भड़काने का कारण है।

पश्चिम बड़ी तीव्र गति से धर्म को त्याग कर स्वतंत्रता के नाम पर प्रत्येक मैदान में नैतिक मूल्यों की क्षति कर रहा है। उसे ज्ञान नहीं कि ये लोग किस प्रकार अपने विनाश को निमंत्रण दे रहे हैं। अभी इटली में एक मंत्री साहिब ने एक नई बात छेड़ी है कि ये अश्लील तथा अपवित्र कार्टून टी शर्ट पर छाप कर पहनने आरंभ कर दिए हैं अपितु दूसरों को भी कहा है मुझ से लो। सुना है वहां बच्चे भी जा रहे हैं। कहते हैं कि मुसलमानों का इलाज यही है। अतः इन लोगों को समझ लेना चाहिए कि हमें यह तो मालूम नहीं कि मुसलमानों का यह इलाज है या नहीं, परन्तु इन हरकतों से ख़ुदा के आक्रोश को भड़काने का साधन अवश्य बन रहे हैं। जो कुछ मूर्खतावश हो गया वह तो हो गया, परन्तु इसे निरन्तर धृष्टतापूर्वक किए जाना और फिर उसी पर दृढ़ रहना कि जो कुछ हम कर रहे हैं उचित है, यह बात ख़ुदा तआला के आक्रोश को अवश्य भड़काती है।

# इन परिस्थितियों में अहमदी की क्या प्रतिक्रिया होनी चाहिए ?

बहरहाल जैसा कि मैंने कहा था कि शेष मुसलमानों की प्रतिक्रिया तो वे जानें, परन्तु एक अहमदी मुसलमान की प्रतिक्रिया यह होनी चाहिए कि उनको समझाएं, ख़ुदा के आक्रोश से डराएं, जैसा कि मैं पहले भी कह चुका हूं आंहज़रत[स.अ.व.] का सुन्दर चित्र संसार के सामने प्रस्तुत करें तथा अपने सामर्थ्यवान तथा अधिकार रखने वाले ख़ुदा के आगे झुकें और उससे सहायता मांगें। यदि ये लोग अज़ाब की ओर ही बढ़ रहे हैं तो वह ख़ुदा जो अपना और अपने प्रिय लोगों का स्वाभिमान रखने वाला है अपनी प्रकोपपूर्ण झलकियों के साथ आने की भी शक्ति रखता है, वह जो सब शक्तियों का स्वामी है, वह जो मानव-निर्मित कानून का पाबन्द नहीं है, प्रत्येक वस्तु पर समर्थ है। उसकी चक्की जब चलती है तो फिर मनुष्य की सोच उसे परिधि में नहीं ले सकती, फिर उस से कोई बच नहीं सकता।

अतः अहमदियों को पश्चिम के कुछ लोगों के या कुछ देशों के ये आचरण देख कर ख़ुदा के समक्ष और अधिक झुकना चाहिए। ख़ुदा के मसीह ने यूरोप को भी चेतावनी दी हुई है और अमरीका को भी चेतावनी दी हुई है। ये भूकम्प, ये तूफान और ये आपदाएं जो संसार में आ रही हैं ये केवल एशिया के लिए विशेष नहीं हैं, अमरीका ने तो इसकी एक झलक देख ली है। अतः हे यूरोप ! तू भी सुरक्षित नहीं है। इसलिए कुछ ख़ुदा का भय करो तथा ख़ुदा के स्वाभिमान को न ललकारो, किन्तु साथ ही मैं यह भी कहता हूं कि मुसलमान देश या मुसलमान कहलाने वाले भी अपने आचरण को

ठीक करें। ऐसे आचरण और ऐसी प्रतिक्रिया प्रकट करें जिन से आंहज़रत[स.अ.व.] के स्थान को, आप[स.] के सौन्दर्य को संसार के समक्ष रखें उनको दिखाएं तो यह वह उचित प्रतिक्रिया है जो एक मोमिन की होनी चाहिए।

(ख़ुत्बा जुमा 24 फ़रवरी 2006 ई. मस्जिद बैतुल फ़ुतूह, लन्दन, उस्वए-रसूल[स.अ.व.] और व्यंग्य चित्रों की वास्तविकता द्वितीय संस्करण, पृष्ठ 25 - 27 से उद्धृत)

# ग़ैर मुस्लिमों के साथ सद्व्यवहार के संबंध में इस्लाम की सुन्दर शिक्षा

अभिव्यक्ति तथा धार्मिक स्वतंत्रता के बारे में इस्लाम की सुन्दर शिक्षा क्या है। इस बारे में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह पंचम फरमाते हैं -

"पवित्र क़ुर्आन में अनेकों स्थान पर इस्लाम की उस सुन्दर शिक्षा का वर्णन मिलता है जिसमें ग़ैर मुस्लिमों से सद्व्यवहार, उन के अधिकारों का ध्यान रखना, उन से न्याय करना, उनके धर्म पर किसी प्रकार की ज़बरदस्ती न करना, धर्म के बारे में कोई सख्ती न करना इत्यादि के बहुत से आदेश अपनों के अतिरिक्त ग़ैर मुस्लिमों के लिए हैं। हां कुछ परिस्थितियों में युद्धों की भी आज्ञा है परन्तु वह इस स्थिति में जब शत्रु पहल करे, समझौतों को तोड़े, न्याय का त्याग करे, अत्याचार को चरम सीमा तक पहुंचाए या अन्याय करे, परन्तु इसमें भी किसी देश के किसी गिरोह या जमाअत का अधिकार नहीं है अपितु यह सरकार का कार्य है कि निर्णय करे कि क्या करना है, इस अन्याय को किस प्रकार समाप्त करना है न कि प्रत्येक जिहादी संगठन उठे

और यह कार्य आरंभ कर दे।

## मक्का के काफ़िरों तथा इस्लाम के शत्रुओं के अत्याचारों एवं अन्यायों के सामने हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] का महान आदर्श

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के युग में भी युद्धों की विशिष्ट परिस्थितियां उत्पन्न की गई थीं जिन से विवश हो कर मुसलमानों को प्रतिरक्षात्मक युद्ध करने पड़े, परन्तु जैसा कि मैंने कहा है कि वर्तमान युग के जिहादी संगठनों ने बिना वैध कारणों तथा उचित अधिकारों के अपने युद्ध वाले नारों तथा आचरण से अन्य धर्मावलम्बियों को यह अवसर दिया है तथा उनमें इतना साहस पैदा हो गया है कि उन्होंने नितान्त धृष्टता और निर्लज्जता से हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के पवित्र अस्तित्व पर अश्लील आक्रमण किए हैं और करते हैं जबकि उस साक्षात् दया तथा मानवता पर उपकार करने वाले एवं मानवाधिकारों के महान रक्षक की तो यह दशा थी कि आप युद्ध की स्थिति में भी कोई ऐसा अवसर हाथ से न जाने देते थे जो शत्रु को सुविधा उपलब्ध न करता हो। आपके जीवन का प्रत्येक कर्म, प्रत्येक कार्य, आप के जीवन का पल-पल, क्षण-क्षण इस बात का साक्षी है कि आप साक्षात् दया थे और आप के सीने में वह हृदय धड़क रहा था कि जिस से बढ़कर कोई हृदय दया के वे सर्वोच्च मापदण्ड पूर्ण नहीं कर सकता जो आपने किए। अमन में भी और युद्ध में भी और बाहर भी, दैनिक क्रियाओं में भी तथा अन्य धर्मावलम्बियों से किए गए समझौतों में भी। आप ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धर्म और सहानुभूति के मापदण्ड

स्थापित करने के आदर्श स्थापित कर दिए। फिर जब महान विजेता की हैसियत से मक्का में प्रवेश किया तो जहां पराजित क़ौम से क्षमा और माफी का व्यवहार किया वहां धर्म की स्वतंत्रता का भी पूर्ण अधिकार दिया तथा पवित्र क़ुर्आन के उस आदेश का सर्वोच्च आदर्श स्थापित कर दिया कि

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ (अलबक़रह - 257)

कि धर्म तुम्हारे हृदय का मामला है। मेरी इच्छा तो यह है कि तुम सच्चे धर्म को मान लो और अपना यह संसार और परलोक ठीक कर लो, अपनी क्षमा के साधन कर लो परन्तु कोई ज़बरदस्ती नहीं। आप का जीवन सहानुभूति, अभिव्यक्ति एवं धार्मिक स्वतंत्रता के ऐसे असंख्य प्रकाशमान उदाहरणों से भरा पड़ा है। उनमें से कुछ एक का वर्णन करता हूं -

कोई नहीं जानता कि मक्का में आपके नबुव्वत के दावे के पश्चात् का तेरह वर्षीय जीवन कितना कठोर एवं कष्टप्रद था तथा आप[स.] के सहाबा[रज़ि.] ने कितने दुःख और संकट सहन किए। दोपहर के समय तपती गर्म रेत पर लिटाए गए, उनके सीनों पर गर्म पत्थर रखे गए, कोड़ों से मारे गए, स्त्रियों को टांगें चीर कर मारा गया, वध किया गया, शहीद किया गया, आप[स.] पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार किए गए ; कई बार सज्दे की अवस्था में ऊंट की ओझड़ी (आंतें) लाकर आप की कमर पर रख दी गईं, जिसके भार के कारण आप उठ नहीं सकते थे, तायफ़ की यात्रा में बच्चे आप पर पथराव करते रहे, अश्लील और अपवित्र भाषा का प्रयोग करते रहे, उनके सरदार उनको प्रोत्साहन देते रहे, उनको उकसाते रहे। आप इतने घायल हो गए कि सर से पैर तक लहू लुहान हैं, ऊपर से बहता हुआ रक्त जूतों

में भी आ गया। शअब अबी तालिब नामक घाटी की घटना है - आप[स.] को आपके ख़ानदान को आप के अनुयायियों को कई वर्ष तक घेरे में रखा गया, खाने को कुछ नहीं था, पीने को कुछ नहीं था, बच्चे भी भूख-प्यास से बिलख रहे थे। किसी सहाबी को इन परिस्थितियों में अंधेरे में पृथ्वी पर पड़ी कोई नर्म वस्तु पैरों में महसूस हुई तो उसी को उठाकर मुख में डाल लिया कि कदाचित् कोई खाने की वस्तु हो। भूख की व्याकुलता के कारण यह परिस्थिति थी। अन्ततः जब इन परिस्थितियों से विवश होकर प्रवास करना पड़ा और प्रवास करके मदीना में आए तो वहां भी शत्रु ने पीछा नहीं छोड़ा तथा आक्रमणकारी हुए। मदीना निवासी यहूदियों को आपके विरुद्ध भड़काने का प्रयास किया। इन परिस्थितियों में जिन का मैंने संक्षिप्त वर्णन किया है यदि युद्ध की स्थिति पैदा हो और पीड़ित को भी उत्तर देने का अवसर प्राप्त हो, बदला लेने का अवसर मिले तो वह यही प्रयास करता है कि फिर उस अत्याचार का प्रतिशोध भी अत्याचार से लिया जाए। कहते हैं कि युद्ध में सब कुछ वैध होता है, परन्तु हमारे नबी[स.अ.व.] ने इस अवस्था में भी सहानुभूति और दया ने सर्वोच्च मापदण्ड स्थापित किए। मक्का से आए हुए अभी कुछ समय ही हुआ था, समस्त कष्टों के घाव अभी ताज़ा थे। आपको अपने अनुयायियों के कष्टों का आभास अपने कष्टों से भी अधिक हुआ करता था, परन्तु फिर भी इस्लामी शिक्षा, सिद्धान्त एवं अनुशासन को आपने नहीं तोड़ा। जो नैतिक मापदण्ड आपके स्वभाव का भाग थे तथा जो शिक्षा का अंग थे उनको नहीं तोड़ा। आज देख लें कुछ पश्चिमी देश जिन से युद्ध कर रहे हैं उन से क्या कुछ नहीं करते परन्तु उन की तुलना में आपका आदर्श देखें जिसका इतिहास में, एक रिवायत में यों वर्णन मिलता है :

बद्र के युद्ध के अवसर पर जिस स्थान पर इस्लामी सेना ने पड़ाव डाला था वह कोई ऐसा अच्छा स्थान न था। इस पर ख़ुबाब बिन मुन्ज़िर[रज़ि.] ने आप[स.] से पूछा कि जहां आपने पड़ाव डालने के लिए स्थान चुना है क्या यह ख़ुदा के किसी इल्हाम के अन्तर्गत है, आपको अल्लाह तआला ने बताया है या यह स्थान आप[स.] ने स्वयं पसन्द किया है ? आप[स.] का विचार है कि युद्ध रणनीति के तौर पर यह अच्छा स्थान है ? तो आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा कि यह तो मात्र युद्ध रणनीति के कारण मेरा विचार था कि यह स्थान उचित है, ऊंचा स्थान है तो ख़ुबाब[रज़ि.] ने कहा कि यह उचित स्थान नहीं है। आप[स.] लोगों को लेकर चलें और पानी के झरने पर अधिकार कर लें। वहां एक हौज़ बना लेंगे और फिर युद्ध करेंगे। इस प्रकार हम तो पानी पी सकेंगे परन्तु शत्रु को पीने के लिए पानी नहीं मिलेगा। आप ने कहा कि उचित है चलो तुम्हारी राय स्वीकार कर लेते हैं। अतः सहाबा चल पड़े और वहां पड़ाव डाला। थोड़ी देर बाद क़ुरैश के कुछ लोग पानी पीने के लिए हौज़ पर आए तो सहाबा ने रोकने का प्रयास किया तो आप[स.] ने कहा -

नहीं, इनको पानी ले लेने दो।

(अस्सीरतुन्नबविय्यह लिब्ने हिशाम, जिल्द - 2, पृष्ठ - 284, ग़ज़्वः बद्रुल कुबरा, मशवरतुल ख़ुबाब अलर्रसूल[स.अ.व.])

## इस्लाम तलवार के बल पर नहीं बल्कि सद्व्यवहार एवं अभिव्यक्ति तथा धार्मिक स्वतंत्रता की शिक्षा से फैला है।

अतः यह है सर्वोच्च मापदण्ड आंहज़रत[स.अ.व.] के शिष्टाचार का कि इसके बावजूद कि शत्रु ने कुछ समय पूर्व मुसलमानों के बच्चों तक का

दाना पानी बन्द किया हुआ था परन्तु इससे दृष्टि हटाते हुए शत्रु के सैनिकों को जो पानी के तालाब तक पानी लेने के लिए आए थे और जिस पर आप का अधिकार था, आपके क़ब्ज़े में था, उन्हें पानी लेने से न रोका, क्योंकि यह नैतिकता के नियमों से गिरी हुई बात थी। इस्लाम पर सबसे बड़ा आरोप यही लगाया जाता है कि तलवार के बल पर फैलाया गया। ये लोग जो पानी लेने आए थे उनसे ज़बरदस्ती भी की जा सकती थी कि पानी लेना है तो हमारी शर्तें मान लो। काफ़िर लोग कई युद्धों में ऐसा करते रहे हैं परन्तु नहीं, आप[स.] ने इस प्रकार नहीं कहा। यहां कहा जा सकता है कि अभी मुसलमानों में पूरी शक्ति नहीं थी, कमज़ोरी थी, इसलिए कदाचित् युद्ध से बचने के लिए यह उपकार करने का प्रयास किया है। हालांकि यह ग़लत बात है। मुसलमानों के बच्चे-बच्चे को यह मालूम था कि मक्का के काफ़िर मुसलमानों के रक्त के प्यासे हैं तथा मुसलमानों की शक्ल देखते ही उनकी आंखों में रक्त उतर आता है। इसलिए यह सुधारणा किसी को नहीं थी तथा आंहज़रत[स.अ.व.] को तो इस प्रकार की सुधारणा का तो प्रश्न ही नहीं उठता। आप[स.] ने तो यह सब कुछ, यह नर्मी का व्यवहार, साक्षात् दया होने तथा मानव-मूल्यों के पक्षपात के कारण किया था क्योंकि आप[स.] ने ही उन मूल्यों को पहचानने की शिक्षा देनी थी।

## हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के न्याय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अद्वितीय मापदण्ड

फिर उस इस्लाम के शत्रु की घटना देखें जिसका वध करने का आदेश जारी हो चुका था, परन्तु आप[स.] ने न केवल उसे क्षमा किया

अपितु मुसलमानों में रहते हुए उसे अपने धर्म पर स्थापित रहने की अनुमति भी प्रदान की। अतः इस घटना का वर्णन इस प्रकार मिलता है कि :-

अबू जहल का बेटा अकरमा अपने पिता की तरह जीवन-पर्यन्त आंहज़रत[स.अ.व.] से युद्ध करता रहा। मक्का-विजय के अवसर पर रसूले करीम[स.अ.व.] की क्षमा और अमन की घोषणा के बावजूद सेना के एक भाग पर आक्रमणकारी हुआ और हरम में अपने युद्ध-अपराधों के कारण ही वध करने योग्य ठहराया गया था, परन्तु मुसलमानों के सामने उस समय कोई नहीं ठहर सका था। इसलिए मक्का-विजय के पश्चात् प्राण बचाने के लिए वह यमन की ओर भाग गया। उसकी पत्नी आप[स.] से उसको क्षमा करने की अभिलाषी हुई तो आपने बड़ी सहानुभूतिपूर्वक उसे क्षमा कर दिया। अतः जब वह अपने पति को लेने स्वयं गई तो अकरमा को इस क्षमा पर विश्वास नहीं आता था कि मैंने इतने अत्याचार किए हैं, इतने मुसलमान क़त्ल किए हैं। अन्तिम दिन तक मैं लड़ाई करता रहा तो मुझे किस प्रकार क्षमा किया जा सकता है। बहरहाल वह किसी प्रकार विश्वास दिला कर अपने पति अकरमा को वापस ले आई। अतः जब अकरमा वापस आए तो आप[स.] के दरबार में उपस्थित हुए और इस बात की पुष्टि चाही तो उसके आने पर आप[स.] ने उपकार का आश्चर्यजनक व्यवहार किया। प्रथम तो आप शत्रुक़ौम के सम्मान के लिए खड़े हो गए कि यह शत्रु क़ौम का सरदार है इसलिए उसका सम्मान करना है। फिर अकरमा के पूछने पर कहा कि मैंने निश्चित रूप से तुम्हें क्षमा कर दिया है।

(मुअत्ता इमाम मालिक किताबुन्निकाह, निकाहुल मुश्रिक इज़ा असलमत ज़ौजतहू कब्लहू)

अकरमा ने पुनः पूछा - कि अपने धर्म पर रहते हुए ? अर्थात् मैं

मुसलमान नहीं हुआ। इस शिर्क की स्थिति में आप ने मुझे क्षमा किया है, आप[स.] ने मुझे माफ़ कर दिया है। तो आपने कहा कि - हां। इस पर अकरमा का सीना इस्लाम के लिए खुल गया तथा निःसंकोच कह उठा कि हे मुहम्मद (स.अ.व.) आप निश्चय ही अत्यन्त शालीन, कृपालु तथा अपने परिवार वालों से प्रेम करने वाले हैं। आप[स.] के सदाचार एवं उपकार का यह चमत्कार देख कर अकरमा मुसलमान हो गया।

(अस्सीरतुल हलविय्यः, जिल्द - 3, पृष्ठ - 109, प्रकाशित-बैरूत बाब ज़िक्र मग़ाज़ियह[स.अ.व.] फ़तह मक्का)

अतः इस प्रकार इस्लाम सदाचार से तथा अभिव्यक्ति और धर्म की स्वतंत्रता प्रकट करने की अनुमति से फैला है। सदाचार और धर्म की स्वतंत्रता का यह बाण एक मिनट में अकरमा जैसे व्यक्ति को घायल कर गया। आंहज़रत[स.अ.व.] ने क़ैदियों और दासों तक को यह अनुमति प्रदान की थी कि जो धर्म चाहो अपनाओ, परन्तु इस्लाम का प्रचार इसलिए है कि अल्लाह तआला ने आदेश दिया है कि इस्लाम की शिक्षा के बारे में बताओ क्योंकि लोगों को ज्ञान नहीं है। यह इच्छा इसलिए है कि यह तुम्हें ख़ुदा का सानिध्य प्रदान करेगी तथा तुम्हारी सहानुभूति के लिए हम तुम से यह कहते हैं।

अतः एक क़ैदी की एक घटना इस प्रकार से वर्णन हुई है। सईद बिन अबी सईद वर्णन करते हैं कि उन्होंने हज़रत अबू हुरैरा[रज़ि.] को यह कहते हुए सुना कि रसूले करीम[स.अ.व.] ने नजद की ओर सेना भेजी तो बनू हनीफ़ा के एक व्यक्ति को क़ैदी बना कर लाए, जिसका नाम समामा बिन असाल था। सहाबा[रज़ि.] ने उसे मस्जिदे नबवी[स.] के स्तंभ के साथ बांध दिया। रसूले करीम[स.अ.व.] उसके पास आए और कहा कि

हे समामा ! तेरे पास क्या बहाना है या तेरा क्या विचार है कि तुझ से क्या मामला होगा। उसने कहा मेरा अनुमान अच्छा है। यदि आप[स.] मुझे क़त्ल कर दें तो आप एक ख़ून बहाने वाले व्यक्ति को क़त्ल करेंगे और यदि आप इनाम करें तो आप एक ऐसे व्यक्ति पर इनाम करेंगे जो उपकार के महत्त्व को समझने वाला है और यदि आप धन चाहते हैं तो जितना चाहें ले लें। उसके लिए उसकी क़ौम की ओर से इतना धन दिया जा सकता था, यहां तक कि अगला दिन चढ़ आया। आप फिर पधारे और समामा से पूछा क्या इरादा है ? अतः समामा ने कहा कि मैं तो कल ही आप से कह चुका था कि यदि आप इनाम करें तो आप एक ऐसे व्यक्ति पर इनाम करेंगे जो कि उपकार के गुण को पहचानने वाला है। आप[स.] ने उसे वहीं छोड़ा। फिर तीसरा दिन चढ़ा आप[स.] ने उस से कहा - हे समामा ! तेरा क्या इरादा है ? उसने कहा कि मैंने जो कुछ कहना था वह कह चुका हूं। आप[स.अ.व.] ने कहा - इसे आज़ाद कर दो। अतः समामा को आज़ाद कर दिया गया। इस पर वह मस्जिद के निकट खजूरों के बाग़ में गया और स्नान किया तथा मस्जिद में प्रवेश करके शहादत का कलिमा पढ़ा और कहा - हे मुहम्मद[स.अ.व.] ! ख़ुदा की क़सम मुझे संसार में सर्वाधिक अप्रिय आपका चेहरा हुआ करता था और अब यह दशा है कि मुझे सर्वाधिक प्रिय आप[स.] का चेहरा है। ख़ुदा की क़सम मुझे संसार में सर्वाधिक अप्रिय आपका धर्म हुआ करता था परन्तु अब यह दशा है कि सर्वाधिक प्रिय धर्म आप का लाया हुआ धर्म है। ख़ुदा की क़सम मुझे सर्वाधिक अप्रिय आपका शहर था अब यही शहर मेरा सर्वाधिक प्रिय शहर है। आप के घुड़सवारों ने मुझे पकड़ लिया जबकि मैं उमरा करना चाहता था। आप[स.] इसके बारे में क्या आदेश देना चाहते हैं।

रसूले करीम[स.अ.व.] से पूछा कि जा तो मैं उमरा करने के लिए रहा था, अब आप का क्या उपदेश है। तो आपने उसे ख़ुशख़बरी दी, मुबारकबाद दी इस्लाम स्वीकार करने की और उसे आदेश दिया कि उमरा करो, अल्लाह स्वीकार करेगा। जब वह मक्का पहुंचा तो किसी ने कहा कि क्या तू साबी हो गया है ? तो उसने उत्तर दिया कि नहीं अपितु मैं मुहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.] पर ईमान ले आया हूं और ख़ुदा की क़सम अब भविष्य में यमामा की ओर से गेहूं का एक दाना भी तुम्हारे पास नहीं आएगा, यहां तक कि नबी[स.अ.व.] इसकी अनुमति प्रदान कर दें।

(बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी, बाब वफ़द बनी हनीफ़ा व हदीस सुमामा बिन असाल)

एक अन्य रिवायत में है कि इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात् वह उमरा करने गए तो मक्का के काफ़िरों ने उनके इस्लाम का मालूम होने पर उन्हें मारने का प्रयास किया या मारा। इस पर उन्होंने कहा- कि कोई दाना नहीं आएगा और यह उस समय तक नहीं आएगा जब तक नबी करीम[स.अ.व.] की ओर से अनुमति न आ जाए। अत: उस ने जाकर अपनी क़ौम से कहा और वहां से अनाज आना बन्द हो गया। काफी बुरी दशा हो गई। अत: अबू सुफ़ियान आंहज़रत[स.अ.व.] की सेवा में विनती लेकर पहुंचे कि इस प्रकार भूखे मर रहे हैं अपनी क़ौम पर कुछ दया-दृष्टि करें। तो आप[स.] ने यह नहीं कहा कि अनाज उस समय मिलेगा जब तुम मुसलमान हो जाओ अपितु तुरन्त सुमामा को सन्देश भिजवाया कि यह पाबन्दी समाप्त करो, यह अन्याय है। बच्चों, बड़ों, रोगियों, वृद्धों को भोजन की आवश्यकता होती है उन्हें उपलब्ध होनी चाहिए।

(अस्सीरतुन्नबविय्यह लिब्ने हिशाम आसर सुमामा बिन असाल अल हनफ़ी व इस्लामहू, ख़ुरूजुहू इला मक्का व क़िस्सा माअ क़ुरैश)

दूसरे यह देखें कि क़ैदी सुमामा से यह नहीं कहा कि अब तुम

हमारे काबू में हो तो मुसलमान हो जाओ। तीन दिन तक उनके साथ अच्छा व्यवहार होता रहा और फिर अच्छे व्यवहार के भी उच्च मापदण्ड स्थापित किए, आज़ाद कर दिया फिर देखें सुमामा भी विवेकशील थे। उस आज़ादी को प्राप्त करते ही उन्होंने स्वयं को आंहज़रत[स.अ.व.] की दासता में जकड़े जाने के लिए प्रस्तुत कर दिया कि इसी दासता में मेरे धर्म और इस संसार की भलाई है।

फिर एक यहूदी दास को विवश नहीं किया कि तुम दास हो, मेरे अधिकार में हो, इसलिए जो मैं कहता हूं करो। यहां तक कि उसके रोग की ऐसी स्थिति हुई जब देखा कि उसकी स्थिति ख़तरे में है तो उसके शुभ अन्त होने की चिन्ता हुई। चिन्ता यह थी कि वह इस स्थिति में संसार से न जाए कि ख़ुदा की अन्तिम शरीअत का सत्यापन न कर रहा हो अपितु ऐसी स्थिति में जाए कि सत्यापन कर रहा हो ताकि अल्लाह तआला की क्षमा के सामान हों। तब रोगी का हाल पूछने तथा उस को ढारस देने के लिए गए, उसके सरहाने बैठ गए और कहा - तू इस्लाम स्वीकार कर ले। एक अन्य रिवायत में है उसने अपने बड़ों की ओर देखा परन्तु उसने अनुमति मिलने पर या स्वयं ही विचार करके इस्लाम स्वीकार कर लिया।

(सही बुख़ारी, किताबुल जनायज़, बाब इज़ा अस्लमस्सबिय्ययो फ़माता ........ हदीस नं. 1356)

अत: उसने जो इस्लाम स्वीकार किया वह निश्चय ही उस प्रेम-व्यवहार तथा आज़ादी का प्रभाव था जो उस लड़के पर आप[स.] की दासता के कारण था कि निश्चय ही यह सच्चा धर्म है, इसलिए उसे स्वीकार करने में सुरक्षा है क्योंकि हो नहीं सकता कि यह साक्षात् सहानुभूति एवं दया मेरी बुराई का सोचे। आप निश्चय ही सच्चाई पर हैं और सदैव दूसरे को अच्छाई की ओर ही बुलाते हैं, उत्तम कार्य की ओर ही निमंत्रण देते हैं

उसी की नसीहत करते हैं। अतः यह स्वतंत्रता है जो आपने स्थापित की। संसार में कभी इसका कोई उदाहरण नहीं मिल सकता।

आप[स.अ.व.] नबी होने के दावे से पूर्व भी अभिव्यक्ति और धर्म की स्वतंत्रता तथा जीवन की स्वतंत्रता को प्रिय समझते थे और दासता को अप्रिय समझे थे। अतः जब ख़दीजा[रज़ि.] ने विवाह के पश्चात् अपना धन और दास आप को दे दिए तो आपने हज़रत ख़दीजा से कहा कि यदि ये समस्त वस्तुएं मुझे दे रही हो तो यह सब मेरे अधिकार में होंगे और जो मैं चाहूंगा करूंगा। उन्होंने कहा कि मैं इसीलिए दे रही हूं। आप[स.] ने कहा कि मैं दासों को भी आज़ाद कर दूंगा। हज़रत ख़दीजा[रज़ि.] ने कहा आप जो चाहें करें मैंने आप को दे दिया, मेरा अब कोई अधिकार नहीं है। यह धन आप[स.] का है। अतः आप[स.] ने उसी समय हज़रत ख़दीजा[रज़ि.] के दासों को बुलाया और कहा कि तुम सब लोग आज से आज़ाद हो तथा धन का अधिकांश भाग भी निर्धनों में बांट दिया।

जो दास आप[स.] ने आज़ाद किए उनमें एक दास 'ज़ैद' नामक भी थे। ऐसा प्रतीत होता है कि वह दूसरे दासों से अधिक चतुर थे, बुद्धिमान थे। उन्होंने इस बात को समझ लिया कि मुझे जो आज़ादी मिली है, यह आज़ादी तो अब मिल गई, दासता की मुहर जो लगी थी वह समाप्त हो गई किन्तु मेरी अच्छाई इसी में है कि मैं अब आप[स.अ.व.] की दासता में ही हमेशा रहूं। उन्होंने कहा उचित है आपने मुझे आज़ाद कर दिया है परन्तु मैं आज़ाद नहीं होता। मैं तो आप[स.] के साथ ही दास बन कर रहूंगा। अतः आप (ज़ैद) आंहज़रत[स.अ.व.] के पास ही रहे। यह दोनों ओर से प्रेम का संबंध बढ़ता ही चला गया। ज़ैद एक धनाढ्य ख़ानदान के व्यक्ति थे, अच्छे खाते-पीते घराने के रहने वाले थे डाकुओं ने उनका अपहरण कर लिया था और फिर उनको बेचते रहे

और बिकते-बिकते वह यहां तक पहुंचे थे। उनके माता-पिता, सगे-संबंधी भी खोज में थे अन्ततः उन्हें पता लगा कि यह लड़का मक्का में है तो मक्का आ गए फिर जब पता लगा कि आंहज़रत[स.अ.व.] के पास है तो आप की सभा में पहुंचे और वहां जाकर कहा कि आप जितना धन चाहें हम से ले लें और हमारे बेटे को आज़ाद कर दें। इसकी मां का रो-रो का बुरा हाल हो गया है। आप[स.] ने कहा कि मैं तो उसे पहले ही आज़ाद कर चुका हूं। यह आज़ाद है, जाना चाहता है तो चला जाए और मुझे पैसे की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा - बेटे चलो। बेटे ने उत्तर दिया कि आप से मिल लिया, इतना ही पर्याप्त है। कभी अवसर मिला तो मां से भी भेंट हो जाएगी, परन्तु अब मैं आपके साथ नहीं जा सकता। मैं तो आंहज़रत[स.अ.व.] का दास हो चुका हूं। आप[स.] से पृथक होने का प्रश्न ही नहीं। माता-पिता से अधिक प्रेम अब मुझे आप[स.] से है। ज़ैद के पिता और चाचा इत्यादि ने बहुत ज़ोर लगाया परन्तु उन्होंने इन्कार कर दिया। ज़ैद के इस प्रेम को देख कर आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा था कि ज़ैद आज़ाद तो पहले ही था परन्तु आज से यह मेरा बेटा है। इस परिस्थिति को देखकर ज़ैद के माता-पिता और चाचा वहां से अपने घर वापस चले गए और फिर ज़ैद हमेशा वहीं रहे।

(सार - दीबाचः तफ़्सीरुल क़ुर्आन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि.] पृष्ठ - 112)

अतः नबुव्वत के पश्चात् तो आप[स.] के इन स्वतंत्रता के मापदण्डों को चार चांद लग गए थे। अब तो आप के सद्स्वभाव के साथ आप पर उतरने वाली शरीअत का भी आदेश था कि दासों को उनके अधिकार दो। यदि नहीं दे सकते तो आज़ाद कर दो।

अतः एक रिवायत में आता है कि एक सहाबी अपने दास को

मार रहे थे। आंहज़रत[स.अ.व.] ने देखा और बड़े क्रोध को प्रकट किया। इस पर उस सहाबी ने उस दास को आज़ाद कर दिया। कहा कि मैं इसे आज़ाद करता हूं तो आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा यदि तुम आज़ाद न करते अल्लाह की पकड़ के नीचे आते।

(सही मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाब सुहबतुल ममालीक ..... हदीस सं 4308)

देखें यह है आज़ादी। फिर अन्य धर्म के लोगों के लिए अपनी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार और स्वतंत्रता का भी एक उदाहरण देखिए। अपने शासन में जबकि आप[स.] का शासन मदीना में स्थापित हो चुका था, उस समय उस आज़ादी का नमूना मिलता है।

एक रिवायत में है - हज़रत अबू हुरैरा[रज़ि.] से रिवायत है कि दो व्यक्ति आपस में गाली-गलौज करने लगे। एक मुसलमान था और दूसरा यहूदी। मुसलमान ने कहा - उस हस्ती की क़सम जिसने मुहम्मद[स.अ.व.] को समस्त लोकों पर चयन करके श्रेष्ठता प्रदान की। इस पर यहूदी ने कहा - उस हस्ती की क़सम, जिसने मूसा को समस्त लोकों पर श्रेष्ठता दी है और चुन लिया। इस पर मुसलमान ने हाथ उठाया और यहूदी के थप्पड़ मार दिया। यहूदी शिकायत लेकर आंहज़रत[स.अ.व.] के पास उपस्थित हुआ, जिस पर आंहज़रत[स.अ.व.] ने मुसलमान से विवरण पूछा और फिर कहा - لَا تُخَيِّرُونِي عَلَى مُوسَى कि मुझे मूसा पर श्रेष्ठता न दो।

(बुख़ारी किताबुल ख़ुसूमात बाब मा युज़करो फ़िलअश्ख़ास वल ख़ुसूमह बैनल मुस्लिम वलयहूद)

अतः यह था आप का आज़ादी का मापदण्ड, अभिव्यक्ति और धर्म की स्वतंत्रता कि अपना शासन है। मदीना प्रवास के पश्चात् आप[स.]

ने मदीना के क़बीलों तथा यहूदियों से अमन और शान्ति का वातावरण स्थापित रखने के लिए एक समझौता किया था जिसके अनुसार मुसलमानों का बहुमत होने के कारण या मुसलमानों के साथ जो लोग मिल गए थे वे मुसलमान नहीं भी हुए थे उनके कारण शासन आप[स.] के हाथ में था, परन्तु उस शासन का यह अर्थ नहीं था कि दूसरी प्रजा के लोगों की भावनाओं का ध्यान न रखा जाए। पवित्र क़ुर्आन की इस साक्ष्य के बावजूद कि आप[स.] समस्त रसूलों से श्रेष्ठ हैं आपने यह उचित नहीं समझा कि अंबिया (अवतारों) के मुकाबले के कारण वातावरण को गन्दा किया जाए। आप[स.] ने उस यहूदी की बात सुनकर मुसलमानों की ही डांट-डपट की कि तुम लोग अपने झगड़ों में नबियों को न लाया करो। यह ठीक है कि तुम्हारे निकट मैं समस्त रसूलों से श्रेष्ठ हूं। अल्लाह तआला भी इसकी साक्ष्य दे रहा है परन्तु हमारे शासन में एक व्यक्ति का हृदय दुखाना इसलिए नहीं होना चाहिए कि उसके नबी को किसी ने कुछ कहा है। इसकी मैं अनुमति नहीं दे सकता। मेरा सम्मान करने के लिए तुम्हें दूसरे नबियों का भी सम्मान करना होगा।

यह थे आप के न्याय और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के मापदण्ड जो अपनों तथा दूसरों का ध्यान रखने के लिए आप[स.] ने स्थापित किए थे अपितु कभी-कभी अन्य लोगों की भावनाओं का अधिक ध्यान रखा जाता था।

# मानव-मूल्यों को स्थापित करने तथा धार्मिक सहिष्णुता के लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] का अद्वितीय व्यावहारिक आदर्श

आप[स.] का मानव-मूल्यों को स्थापित करने तथा आप[स.] की सहनशीलता का एक और उदाहरण है। रिवायत में आता है कि अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला वर्णन करते हैं कि सहल बिन हनीफ़ और क़ैस बिन सअद क़ादसिया के स्थान पर बैठे हुए थे कि उनके पास से एक जनाज़ा (शव) गुज़रा, तो वे दोनों खड़े हो गए। जब उनको बताया गया कि यह ज़िम्मियों में से है तो दोनों ने कहा कि एक बार नबी करीम[स.अ.व.] के पास से एक जनाज़ा गुज़रा तो आप सम्मान करने के लिए खड़े हो गए। आप[स.] को बताया गया कि यह तो एक यहूदी का जनाज़ा है। इस पर रसूले करीम[स.अ.व.] ने कहा कि اَلَيْسَتْ نَفْسًا क्या वह इन्सान नहीं है।

(सही बुख़ारी, किताबुल जनायज़, बाब मन क़ामा लि जनाज़ते यहूदी)

अतः यह सम्मान है दूसरे धर्म का भी तथा मानवता का भी। यह प्रकटन और ये आदर्श हैं जिन से धार्मिक सहिष्णुता का वातावरण पैदा होता है। यह प्रकटन ही है जिन से एक दूसरे के लिए नर्म भावनाएं जन्म लेती हैं और ये भवनाएं ही हैं जिनसे प्रेम, मुहब्बत तथा शान्ति का वातावरण पैदा होता है, न कि वर्तमान लोगों के कर्मों के समान कि नफ़रतों एवं घृणाओं का वातावरण पैदा करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

फिर एक रिवायत में आता है ख़ैबर-विजय के मध्य तौरात की कुछ प्रतियां मुसलमानों को मिलीं। यहूदी आंहज़रत[स.अ.व.] की सेवा में

उपस्थित हुए कि हमारी पवित्र पुस्तक वापस की जाए। रसूले करीम[स.अ.व.] ने सहाबा को आदेश दिया कि यहूदियों की धार्मिक पुस्तकें उनको वापस कर दो।

(अस्सीरतुल हलबिय्यह, बाब ज़िक्र मग़ाज़ियह[स.अ.व.] ग़ज़्व-ए-ख़ैबर जिल्द-3, पृष्ठ - 49)

यहूदियों के ग़लत व्यवहार के कारण उनको दण्ड मिल रहे थे उसके बावजूद आप[स.] ने यह सहन नहीं किया कि शत्रु से भी ऐसा व्यवहार किया जाए, जिस से उसकी धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचे।

## हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] का यहूदियों से अमन का समझौता

मैंने ये कुछ व्यक्तिगत घटनाएं वर्णन की हैं तथा मैंने वर्णन किया था कि मदीना में एक समझौता हुआ था। उस समझौते के अन्तर्गत आंहज़रत[स.अ.व.] ने जो शर्तें निर्धारित की थीं रिवायतों के अनुसार उन का वर्णन करता हूं कि किस प्रकार उस वातावरण में जाकर आप[स.] ने सहिष्णुता का वातावरण पैदा करने का प्रयत्न किया है तथा उस समाज में शान्ति की स्थापना के लिए आप क्या चाहते थे ? ताकि समाज में भी अमन स्थापित हो और मानवता का सम्मान भी स्थापित हो। मदीना पहुंचने के पश्चात् आप[स.] ने यहूदियों से जो समझौता किया उसकी कुछ शर्तें ये थीं कि :-

1. मुसलमान और यहूदी आपस में सहानुभूति और निष्कपटता के साथ रहेंगे और एक दूसरे के विरुद्ध अनीति या अत्याचार से काम न लेंगे (और बावजूद इसके कि यहूदी हमेशा इस शर्त का उल्लंघन करते रहे किन्तु आप उपकार का व्यवहार करते रहे यहां तक कि जब मामला चरम सीमा को पहुंच गया तो विवश होकर यहूदियों के विरुद्ध

कठोर कार्रवाई करना पड़ी)

2. दूसरी शर्त यह थी कि हर क़ौम को धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी (मुसलमानों की बहुसंख्या के बावजूद तुम अपने धर्म में स्वतंत्र हो।

3. तीसरी शर्त यह थी कि समस्त निवासियों के प्राण और धन सुरक्षित होंगे और उनका सम्मान किया जाएगा, सिवाए इसके कि कोई व्यक्ति अपराध या अत्याचार करने वाला हो। इसमें भी अब कोई मतभेद नहीं है। अपराध करने वाला चाहे वह मुसलमान हो या ग़ैर मुस्लिम हो उसे बहरहाल दण्ड मिलेगा। शेष रक्षा करना सामूहिक कार्य है, सरकार का कार्य है।

4. फिर यह कि "हर प्रकार के मतभेद और विवाद निर्णय के लिए रसूलुल्लाह[स.अ.व.] के सामने प्रस्तु होंगे और प्रत्येक निर्णय ख़ुदा के आदेशानुसार किया जाएगा।" (और ख़ुदा के आदेश की परिभाषा यह है कि प्रत्येक क़ौम की अपनी शरीअत के अनुसार। निर्णय बहरहाल आंहज़रत[स.अ.व.] के समक्ष प्रस्तुत होना है क्योंकि तत्कालीन शासन के मुख्य शासक आप थे। इसलिए निर्णय आप[स.] ने ही करना, परन्तु निर्णय उस शरीअत के अनुसार होगा और अब यहूदियों के कुछ निर्णय उनकी शरीअत के अनुसार ऐसे हुए तो उस पर अब ईसाई आरोप लगाते हैं या अन्य विरोधी आपत्तियां करते हैं कि अन्याय हुआ, हालांकि उनके कहने के अनुसार उनकी शर्तों पर ही फ़ैसले हुए थे)

फिर एक शर्त यह है कि - "कोई पक्ष आंहज़रत[स.अ.व.] की आज्ञा के बिना युद्ध के लिए नहीं निकलेगा। (इसलिए सरकार के अन्दर रहते हुए उस सरकार का पाबन्द होना आवश्यक है। यह शर्त आजकल के जिहादी संगठनों के लिए भी मार्ग-दर्शक है कि सरकार में रह रहे हैं

उसकी आज्ञा के बिना किसी प्रकार का जिहाद नहीं कर सकते, सिवाए इसके कि उस सरकार की सेना में सम्मिलित हो जाएं और फिर यदि देश युद्ध करे तो फिर ठीक है।)

फिर एक शर्त यह है कि -

"यदि यहूदियों और मुसलमानों के विरुद्ध कोई क़ौम युद्ध करेगी तो वे एक-दूसरे की सहायता में खड़े होंगे तथा शत्रु से संधि की स्थिति में मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दोनों को यदि संधि में कोई लाभ प्राप्त हो रहा है तो उस लाभ में से प्रत्येक को उस का भाग प्राप्त होगा) इसी प्रकार यदि मदीना पर कोई आक्रमण करेगा तो सब मिलकर उसका मुक़ाबला करंगे।"

फिर एक शर्त यह है कि -

मक्का के क़ुरैश तथा उनके सहयोगियों को यहूदियों की ओर से किसी प्रकार की सहायता या शरण नहीं दी जाएगी।" (क्योंकि मक्का के विरोधियों ने ही मुसलमानों को वहां से निकाला था। मुसलमानों ने यहां आकर शरण ली थी। इसलिए अब इस सरकार में रहने वाले उस शत्रु क़ौम से किसी प्रकार का समझौता नहीं कर सकते और न कोई सहायता लेंगे।)

"प्रत्येक क़ौम अपने ख़र्च स्वयं वहन करेगी" (अर्थात् अपने-अपने ख़र्चे स्वयं करेंगे) इस समझौते के अनुसार कोई अत्याचारी या दोषी या उपद्रवी इस बात से सुरक्षित नहीं होगा कि उसे दण्ड दिया जाए या उससे प्रतिशोध लिया जाए।" (अर्थात् जैसा कि पहले भी आ चुका है कि जो कोई भी अत्याचारी होगा उसे बहरहाल दण्ड मिलेगा, पकड़ होगी और यह बिना किसी पक्षपात के होगी चाहे वह मुसलमान है या यहूदी है या कोई और है।)

(सार - सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन[स.] लेखक - हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब[रज़ि.] पृष्ठ - 279 से)

# धर्म की स्वतंत्रता तथा नजरान वालों के लिए सुरक्षा पत्र

फिर इसी धार्मिक सहनशीलता और स्वतंत्रता को स्थापित रखने के लिए आप[स.] ने नजरान के प्रतिनिधि मंडल को मस्जिद-ए-नबवी में उपासना करने की अनुमति प्रदान की। उन्होंने पूर्व की ओर मुख करके अपनी उपासना की, जबकि सहाबा का विचार था कि नहीं करनी चाहिए। आप[स.] ने कहा कोई अन्तर नहीं पड़ता।

फिर नजरान वालों को आपने जो सुरक्षा-पत्र दिया उसका भी वर्णन मिलता है। उसमें आप[स.] ने स्वयं पर यह दायित्व स्वीकार किया कि मुसलमान सेना के द्वारा इन ईसाइयों की (जो नजरान से आए थे) सीमाओं की रक्षा की जाएगी, उनके गिरजे, उनके उपासना-गृह, यात्री निवास चाहे वे सुदूर क्षेत्रों में हों या शहरों में हों या पर्वतों में हों या जंगलों में हों उनकी सुरक्षा मुसलमानों का दायित्व है। उन्हें अपने धर्म के अनुसार उपासना करने की स्वतंत्रता होगी तथा उनकी इस उपासना की स्वतंत्रता की रक्षा भी मुसलमानों पर अनिवार्य है तथा आप[स.] ने कहा - चूंकि अब ये लोग मुसलमान सरकार की प्रजा हैं इसलिए इन की रक्षा करना मुझ पर इस दृष्टि से भी अनिवार्य है कि अब ये मेरी प्रजा बन चुके हैं।

फिर आगे है कि इसी प्रकार मुसलमान अपने युद्धों में उन्हें (ईसाइयों को) उनकी इच्छा के बिना सम्मिलित नहीं करेंगे। उनके पादरी और धार्मिक लीडर जिस पद और पोज़ीशन पर हैं वे वहां से पदहीन नहीं किए जाएंगे। वे अपने कार्य यथावत् करते रहेंगे, उनके

उपासना स्थलों में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा, वे किसी भी स्थिति में किसी अन्य प्रयोग में नहीं लाए जाएंगे। न सराय बनाई जाएंगी और न वहां किसी को ठहराया जाएगा और न किसी अन्य उद्देश्य में उन की अनुमति के बिना प्रयोग में लाया जाएगा। उलेमा और राहिब जहाँ कहीं भी हों उनसे जिज़ियाऔर खराज (कर) नहीं लिया जाएगा। यदि किसी मुसलमान की ईसाई पत्नी होगी तो उसे पूर्ण स्वतंत्रता होगी कि वह अपने ढंग पर उपासना करे। यदि कोई अपने उलेमा के पास जाकर धार्मिक मामलों को पूछना चाहे तो जाए। गिरजों इत्यादि की मरम्मत के लिए आप[स.] ने कहा कि यदि वे मुसलमानों से आर्थिक सहायता लें तो मुसलमानों को उनकी सहायता करनी चाहिए क्योंकि यह उत्तम बात है तथा ऐसी सहायता न कर्ज़ होगी और न ही उपकार होगी अपितु उस समझौते को उत्तम करने का एक प्रयास होगा कि इस प्रकार के सामाजिक सम्बन्ध तथा एक-दूसरे की सहायता के कार्य किए जाएं।

(सारांश ज़ादुल मआद फ़ी हुदा ख़ैरिल इबाद, फ़स्ल फ़ी क़ुदूमे वफ़्द नजरान)

ये थे शान्ति स्थापना के लिए आप[स.] के धार्मिक स्वतंत्रता और सहनशीलता के मापदण्ड ! इसके बावजूद आप[स.] पर अन्याय और तलवार के बल पर इस्लाम फैलाने का आरोप लगाना अत्यन्त अत्याचार एवं अन्यायपूर्ण कार्य है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि :

"अत: जबकि अहले किताब और अरब के अनेकेश्वरवादी नितान्त दुराचारी हो चुके थे और बुराई करके समझते थे कि हमने भलाई का कर्म किया है तथा अपराध करने से नहीं रुकते थे और सार्वजनिक शान्ति को भंग करते थे तो ख़ुदा तआला ने अपने नबी[स.] के हाथ में शासन की बागडोर देकर उनके हाथ से निर्धनों को बचाना

चाहा और चूंकि अरब का देश पूर्णतः बे लगाम था और लोग किसी बादशाह की सरकार के अधीन न थे। इसलिए प्रत्येक समुदाय नितान्त स्वच्छंदता और निर्भीकता से जीवन-यापन कर रहा था।" (कोई कानून नहीं था क्योंकि किसी के अधीन नहीं थे)

"और चूंकि उनके लिए कोई दण्ड-विधान नहीं था। इसलिए वे लोग दिन-प्रतिदिन अपराधों में बढ़ते जाते थे अतः ख़ुदा ने उस देश पर दया करके ........ आंहज़रत[स.अ.व.] को उस देश के लिए न केवल रसूल बनाकर भेजा अपितु उस देश का बादशाह बना दिया और पवित्र क़ुर्आन को एक ऐसे विधान के समान पूर्ण कर दिया, जिसमें दीवानी, फौजदारी तथा आर्थिक सभी निर्देश हैं। अतः आंहज़रत[स.अ.व.] एक बादशाह की हैसियत से समस्त समुदायों के शासक थे और प्रत्येक धर्म के लोग अपने मुक़द्दमों का फैसला आप[स.] से कराते थे।

पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि एक बार एक मुसलमान और एक यहूदी का मुक़द्दमा आप[स.] की अदालत में आया तो आपने जांच-पड़ताल के पश्चात् यहूदी को सच्चा ठहराया और मुसलमान पर उसके दावे की डिग्री की।" (इसका वर्णन मैं कर चुका हूं)

"अतः कुछ मूर्ख विरोधी जो पवित्र क़ुर्आन को ध्यानपूर्वक नहीं पढ़ते वे प्रत्येक स्थान को आंहज़रत[स.अ.व.] की रिसालत के अन्तर्गत ले आते हैं। हालांकि ऐसे दण्ड ख़िलाफ़त अर्थात् बादशाहत की हैसियत से दिए जाते थे।" (अर्थात् यह सरकार का कार्य है)

"बनी इस्राईल में हज़रत मूसा[अ.] के पश्चात् नबी पृथक होते थे और बादशाह पृथक होते थे जो राजनीतिक मामलों के द्वारा शान्ति स्थापित रखते थे, परन्तु आंहज़रत[स.अ.व.] के समय में ख़ुदा तआला ने ये दोनों पद आप[स.] को ही प्रदान किए और अपराधी प्रकृति रखने वालों

को पृथक-पृथक करके शेष लोगों के साथ जो व्यवहार था वह निम्नलिखित आयत से प्रकट होता है और वह यह है -

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ (आले इमरान - 19)

और हे पैग़म्बर अहले किताब और अरब के अनपढ़ लोगों को कहो कि क्या तुम इस्लाम धर्म में प्रवेश करते हो। अत: यदि इस्लाम स्वीकार कर लें तो हिदायत (मार्ग-दर्शन) पा गए और यदि मुख मोड़ लें तो तुम्हारा तो केवल यही कार्य है कि ख़ुदा का आदेश पहुंचा दो। इस आयत में यह नहीं लिखा कि तुम्हारा यह भी कार्य है कि तुम उनसे युद्ध करो। इससे स्पष्ट है कि युद्ध केवल अपराधी प्रवृत्ति रखने वालों से था जो मुसलमानों का वध करते थे या सार्वजनिक शान्ति को भंग करते था तथा चोरी-डकैती में व्यस्त रहते थे और यह युद्ध बादशाह होने की हैसियत से था न कि रसूल होने की हैसियत से।" (अर्थात् जब आप[स.] शासन के सर्वोच्च शासक थे तब युद्ध करते थे। इसलिए नहीं कि नबी हैं।)

"जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ○

(सूरह अलबक़रह-191)

**अनुवाद** - तुम ख़ुदा के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो तुम से लड़ते हैं अर्थात् दूसरों से कुछ मतलब न रखो और हद से न बढ़ो ख़ुदा हद से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता।"

(चश्म-ए-मा'रिफ़त, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 23, पृष्ठ - 242, 243)

"अत: जिस पवित्र नबी[स.अ.व.] पर यह शरीअत उतरी है किस प्रकार

हो सकता है कि वह स्वयं पर उतरे हुए आदेशों के बारे में अनीति से काम लेता हो। आप[स.] ने मक्का-विजय के अवसर पर इस शर्त के बिना कि यदि इस्लाम में सम्मिलित हुए तो सुरक्षा प्राप्त होगी, सार्वजनिक क्षमा की घोषणा कर दी थी। इसका एक उदाहरण हम देख भी चुके हैं। इसके विभिन्न रूप थे, परन्तु उसमें यह नहीं था कि अवश्य इस्लाम स्वीकार करोगे तो क्षमा-प्राप्त होगी। भिन्न-भिन्न स्थानों पर जाने और प्रवेश करने और किसी के झण्डे के नीचे आने, काबा में जाने तथा किसी घर में जाने के कारण क्षमा की घोषणा थी। यह एक ऐसा श्रेष्ठ उदाहरण था जो हमें कहीं और देखने को नहीं मिला। पूर्ण रूप से यह घोषण कर दी कि - لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ जाओ आज तुम पर कोई पकड़ नहीं है। हज़ारों दरूद और सलाम हों आप[स.] पर जिन्होंने अपने ये सर्वोत्कृष्ट आदर्श स्थापित किए और हमें भी उसकी शिक्षा दी। अल्लाह तआला हमें इस पर कार्यरत होने की भी शक्ति दे।"

(ख़ुत्बः जुमा 10 मार्च 2006 ई., मस्जिद बैतुल फ़ुतूह, लन्दन उद्‌धृत उस्व-ए-रसूल[स.अ.व.] और ख़ाकों की हक़ीक़त, पृष्ठ 92-111)

# शान्ति की स्थापना तथा बोधभ्रमों के निवारण हेतु हज़रत प्रवर्तक जमाअत अहमदिया की उच्च शिक्षा एवं प्रस्ताव

विभिन्न धर्मों तथा लोगों के बोधभ्रमों के निवारण तथा परस्पर प्रेम और मुहब्बत, मैत्री एवं संधि के साथ रहने के लिए प्रवर्तक जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद एवं महदी-ए-मा'हूद अलैहिस्सलाम ने सर्वधर्म सम्मेलन के आयोजन का

प्रस्ताव प्रस्तुत किया था अतः आप[अ.] ने महारानी विक्टोरिया की डायमण्ड जुबली के अवसर पर उसे यह प्रस्ताव देते हुए कहा था कि :

"हां यह आवश्यक होगा कि इस सर्वधर्म सम्मेलन में प्रत्येक व्यक्ति अपने धर्म की विशेषताएं वर्णन करे, दूसरों से कुछ सम्बन्ध न रखे।"

(तुहफ़ा क़ैसरिया, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 12, पृष्ठ - 279)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सामान्यतः धार्मिक लीडर और पादरी लोग लोगों को ग़लत बातें बताते रहते हैं जिस के कारण उनमें आक्रोश फैलता है। आप[अ.] इसके अतिरिक्त कहते हैं कि :

"यदि उनमें सद्भावना होती तो वे क़ुर्आन पर ऐसे आक्षेप न करते जो मूसा[अ.] की तौरात पर भी हो सकते हैं। यदि उनको ख़ुदा का भय होता तो वे उन पुस्तकों के आक्षेप के समय उन पर अमल करने का बहाना बनाते जो मुसलमानों के निकट ग़ैर मुस्लिम और निश्चित सच्चाइयों से रिक्त है। इसलिए न्याय यही आदेश देता है कि यदि समस्त यूरोप फ़रिश्तों जैसा चरित्र भी रखे परन्तु पादरी इस से पृथक हैं। यूरोप के ईसाई जो इस्लाम को नफ़रत और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं उसका यही कारण है कि सदैव से ये ही पादरी लोग घटनाओं के विपरीत वृत्तान्तों को प्रस्तुत करके उनको तिरस्कार का पाठ पढ़ाते चले आए हैं।

हां मैं स्वीकार करता हूं कुछ मूर्ख मुसलमानों का आचरण अच्छा नहीं तथा उनमें मूर्खता की आदतें विद्यमान हैं, जैसा कि कुछ हिंसाप्रिय मुसलमान अत्याचारपूर्ण रक्तपात करने का नाम जिहाद रखते हैं तथा उन्हें ज्ञात नहीं कि प्रजा की न्यायवान राजा के साथ तुलना करना उसका नाम विद्रोह है न कि जिहाद। समझौता तोड़ना और भलाई के

स्थान पर बुराई करना तथा निर्दोष लोगों को मारना ऐसा कार्य करने वाला अत्याचारी कहलाता है न कि धर्मवीर।

ख़ुदा की वाणी अत्याचारपूर्ण तलवार उठाने के लिए तलवार का दण्ड वर्णन करता है न कि शान्ति स्थापित करने वालों, प्रजा-पालक तथा प्रत्येक क़ौम को स्वतंत्रता के अधिकार देने वालों के बारे में उद्दण्डता की शिक्षा देता है। ख़ुदा के कलाम (वाणी) को बदनाम करना यह अन्याय है इसलिए मानव-कल्याण के लिए यह बात नितान्त हित में है कि माननीया क़ैसरा-ए-हिन्द की ओर से धर्मों की वास्तविकता प्रकाशित करने के लिए सर्वधर्म सम्मेलन हो।"

(तुहफ़ा क़ैसरिया, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द - 12, पृष्ठ 280-281)

## प्रत्येक के साथ सहानुभूति करना ही मानवता है।

आप[अ.] फ़रमाते हैं कि :

"वह धर्म धर्म नहीं है जिसमें सार्वजनिक सहानुभूति की शिक्षा न हो और न वह मनुष्य मनुष्य है जिसमें सहानुभूति का तत्त्व न हो। हमारे ख़ुदा ने किसी क़ौम से पक्षपात नहीं किया। उदाहरणतया जो जो मानव शक्तियां और ताकतें आर्यवर्त की प्राचीन क़ौमों को दी गई हैं वही समस्त शक्तियां अरबों, फ़ारसियों, शामियों, चीनियों, जापानियों, यूरोप तथा अमरीका की क़ौमों को भी प्रदान की गई हैं। सब के लिए ख़ुदा की पृथ्वी फ़र्श का काम देती है और सब के लिए उसका सूर्य और चन्द्रमा तथा कई और सितारे प्रकाशमान दीपक का काम दे रहे हैं और दूसरी सेवाएं भी करते हैं। उसके पैदा किए हुए तत्त्व अर्थात् वायु, जल, अग्नि, मिट्टी और इसी प्रकार उसकी अन्य समस्त सृजन की हुई वस्तुएं अनाज, फल एवं औषधि आदि से समस्त क़ौमयां

लाभ उठा रही हैं। अत: ये ख़ुदा के आचरण हमें शिक्षा देते हैं कि हम भी अपनी मानव-क़ौम से प्रेम व्यवहार के साथ आचरण करें तथा अनुदार और कृपण न बनें। मित्रो !! निश्चय समझो कि यदि हम दोनों क़ौमों में से कोई क़ौम ख़ुदा के आचरण का सम्मान नहीं करेगी और उन पवित्र आचरणों के विपरीत अपना चाल-चलन बनाएगी तो वह क़ौम शीघ्र नष्ट हो जाएगी और न केवल स्वयं को अपितु अपनी सन्तान को भी विनाश में डालेगी। जब से संसार ने जन्म लिया है समस्त देशों के सत्यनिष्ठ लोग यह साक्ष्य देते आए हैं कि ख़ुदा के आचरणों का अनुयायी होना मानव की अनश्वरता के लिए एक अमृत है तथा मनुष्यों का शारीरिक एवं आध्यात्मिक जीवन इसी बात से संलग्न है कि वे ख़ुदा के समस्त पवित्र आचरणों का अनुसरण करें जो सुरक्षा के स्रोत हैं।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-23, पृष्ठ 439-440)

## किसी मान्य पैग़म्बर (अवतार) तथा मान्य इल्हामी किताब का अनादर न किया जाए

फिर अपने स्वर्गवास से एक दिन पूर्व लिखे जाने वाले भाषण - "पैग़ाम-ए-सुलह" में आप फ़रमाते हैं कि :

"ऐसे संवेदनशील समय में यह लेखक आप को मैत्री के लिए आमंत्रित करता है जब कि दोनों को मैत्री की अत्यन्त आवश्यकता है। संसार पर भिन्न-भिन्न प्रकार की परीक्षाएं आ रही हैं, भूकम्प आ रहे हैं, अकाल पड़ रहा है तथा प्लेग ने भी अभी पीछा नहीं छोड़ा और जो कुछ ख़ुदा ने मुझे सूचना दी है वह भी यही है कि यदि संसार अपने दुष्कृत्यों को नहीं छोड़गा और बुरे कर्मों से पश्चाताप नहीं करेगा तो

संसार पर कठोर से कठोर विपत्तियां आएंगी तथा एक विपत्ति अभी कम नहीं होगी कि दूसरी विपत्ति प्रकट हो जाएगी। अंततः लोग तंग हो जाएंगे कि यह क्या होने वाला है और बहुत से संकटों के मध्य आकर पागलों के समान हो जाएंगे। अतः हे देशवासी भाइयो ! इससे पूर्व कि वे दिन आएं सतर्क हो जाओ। चाहिए कि हिन्दू, मुसलमान परस्पर मैत्री कर लें और जिस क़ौम में कोई अनीति है जो मैत्री में बाधक हो वह क़ौम उस अनीति को त्याग दे अन्यथा परस्पर शत्रुता का सम्पूर्ण पाप उसी क़ौम की गर्दन पर होगा।

यदि कोई कहे यह क्योंकर हो सकता है कि मैत्री हो जाए, हालांकि परस्पर धार्मिक मतभेद मैत्री के लिए एक ऐसी बाधा है जो दिन-प्रतिदिन हृदयों में फूट डालती जाती है।

मैं इसके उत्तर में यह कहूंगा कि वास्तव में धार्मिक मतभेद केवल उस मतभेद का नाम है जिसका आधार दोनों ओर बुद्धि, न्याय एवं देखी हुई बातों पर हो अन्यथा मनुष्य को इसी बात के लिए बुद्धि प्रदान की गई है कि वह ऐसा पहलू धारण करे जो बुद्धि और न्याय से दूर न हो और महसूस तथा देखी जाने वाली बातों के विपरीत न हो और छोटे-छोटे मतभेद मैत्री के बाधक नहीं हो सकते अपितु वही मतभेद मैत्री का बाधक होगा जिसमें किसी के मान्य पैग़म्बर तथा मान्य इल्हामी किताब पर अपमान और झुठलाने के साथ प्रहार किया जाए।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-23, पृष्ठ - 444)

"हे प्रिय लोगो !! सदैव के अनुभव और बार-बार की परीक्षा ने इस बात को सिद्ध कर दिया है कि विभिन्न क़ौमों के नबियों तथा रसूलों को अपमानपूर्वक स्मरण करना और उन्हें गालियां देना एक ऐसा विष है कि अन्ततः न केवल शरीर को नष्ट करता है अपितु

आत्मा का भी विनाश करके धर्म एवं संसार दोनों का विनाश करता है। वह देश शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर सकता जिसके निवासी एक दूसरे के धार्मिक मार्ग-दर्शक के दोष निकालने तथा मान-हानि करने में व्यस्त रहें तथा उन क़ौमों में सच्ची एकता कदापि नहीं हो सकती जिनमें से एक क़ौम या दोनों एक-दूसरे के नबी या ऋषि तथा अवतार को बुराई या अपशब्दों के साथ स्मरण करते रहते हैं। अपने नबी या पेशवा का अपमान सुनकर किसे जोश नहीं आता। विशेषतः मुसलमान एक ऐसी क़ौम है कि वह यद्यपि अपने नबी को ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा तो नहीं बनाती परन्तु आप[स.] को उन समस्त भेजे हुए पुरुषों से श्रेष्ठतम जानती है कि जो मां के पेट से पैदा हुए। अतः एक सच्चे मुसलमान से मैत्री करना किसी स्थिति में इसके अतिरिक्त संभव नहीं कि उनके पवित्र नबी के बारे में जब वार्तालाप हो तो सम्मान और पवित्र शब्दों के अतिरिक्त स्मरण न किया जाए।

हम लोग अन्य क़ौमों के नबियों के बारे में कदापि अपशब्द नहीं निकालते अपितु हम यही आस्था रखते हैं कि संसार में विभिन्न क़ौमों के लिए जितने नबी आए हैं और करोड़ों लोगों ने उन्हें स्वीकार कर लिया है और संसार के किसी एक क्षेत्र में उनका प्रेम और श्रेष्ठता पैदा हो गई है तथा उस प्रेम की आस्था पर एक लम्बी अवधि गुज़र चुकी है। तो फिर उनकी सच्चाई के लिए यही एक तर्क पर्याप्त है क्योंकि यदि वे ख़ुदा की ओर से न होते तो करोड़ों लोगों के हृदय में यह मान्यता न फैलती। ख़ुदा अपने मान्य लोगों का सम्मान दूसरों को कदापि नहीं देता और यदि कोई झूठा उनकी कुर्सी पर बैठना चाहे तो शीघ्र तबाह होता तथा नष्ट किया जाता है।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-23, पष्ठ 452, 453)

# मैत्री में ही भलाई है

आप पुनः फ़रमाते हैं कि :

"प्रिय लोगो ! मैत्री जैसी कोई वस्तु नहीं। आओ हम इस समझौते के द्वारा एक हो जाएं तथा एक क़ौम बन जाएं। आप देखते हैं कि परस्पर झुठलाने से कुछ फूट पड़ गई है और देश को कितनी हानि पहुंचती है। आओ अब यह भी आज़मा कर देख लो कि परस्पर सत्यापन की कितने बरकतें हैं। मैत्री का उत्तम उपाय यही है अन्यथा किसी दूसरे पहलू से मैत्री करना ऐसा ही है जैसा कि एक फोड़े को जो साफ और चमकता हुआ दिखाई देता है उसी स्थिति में छोड़ दें और उसकी प्रत्यक्ष चमक पर प्रसन्न हो जाएं। हालांकि उसके अन्दर सड़ी हुई और दुर्गन्धयुक्त पीप मौजूद है।"

(पैग़ाम सुलह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 23, पृष्ठ - 456)

# धर्म का मुख्य उद्देश्य

"पैग़ाम-ए-सुलह" ही में आप फ़रमाते हैं कि :

"धर्म यह है कि ख़ुदा के निषेधादेशों से बचना और उसकी प्रसन्नता के मार्गों की ओर दौड़ना तथा उसकी समस्त प्रजा से नेकी और भलाई करना तथा सहानुभूतिपूर्वक व्यवहार करना और संसार के समस्त पवित्र नबियों तथा रसूलों को अपने-अपने समय में ख़ुदा की ओर से नबी और सुधारक मानना और उनमें फूट न डालना तथा प्रत्येक मनुष्य से सेवा के साथ व्यवहार करना हमारे धर्म का सार यही है किन्तु जो लोग अकारण ख़ुदा से निर्भीक होकर हमारे महान नबी

हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] को बुरे शब्दों से याद करते और आप[स.] पर अपवित्र आरोप लगाते तथा अपशब्दों को नहीं छोड़ते हैं उनसे हम क्योंकर मैत्री करें। मैं सच-सच कहता हूं कि हम शोरा भूमि के सांपों तथा जंगलों के भेड़ियों से मैत्री कर सकते हैं परन्तु हम उन लोगों से मैत्री नहीं कर सकते जो हमारे प्यारे नबी[स.] पर जो हमें अपने प्राण तथा माता-पिता से भी प्रिय है अपवित्र प्रहार करते हैं। ख़ुदा हमें इस्लाम पर मृत्यु दे। हम ऐसा कार्य करना नहीं चाहते जिसमें ईमान जाता रहे ......

नितान्त खेद से आह भरकर मुझे यह कहना पड़ा है कि इस्लाम वह पवित्र तथा मैत्री करने वाला धर्म है, जिसने किसी क़ौम के पेशवा पर प्रहार नहीं किया और क़ुर्आन वह सम्माननीय किताब है जिसने क़ौमों में मैत्री की नींव डाली और प्रत्येक क़ौम के नबी को स्वीकार कर लिया तथा समस्त संसार में यह गर्व विशेषतः पवित्र क़ुर्आन को प्राप्त है जिसने संसार के बारे में हमें यह शिक्षा प्रदान की कि -

لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ اَحَدٍ مِّنۡهُمۡ ۖ وَنَحۡنُ لَهٗ مُسۡلِمُوۡنَ ○

(सूरह अलबक़रह - 137)

अर्थात् तुम हे मुसलमानो ! यह कहो कि हम संसार के समस्त नबियों पर ईमान लाते हैं और उनमें फूट नहीं डालते कि कुछ को मानें और कुछ को न मानें। यदि ऐसी मैत्री कराने वाली कोई अन्य इल्हामी किताब है तो उसका नाम लो। पवित्र क़ुर्आन ने ख़ुदा की सामान्य दया को किसी खानदान के साथ विशेष्य नहीं किया। इस्राईल खानदान के जितने नबी थे क्या याक़ूब और क्या इस्हाक़ और क्या मूसा और क्या दाऊद और क्या ईसा। सब की नबुव्वत को स्वीकार कर लिया और प्रत्येक क़ौम के नबी चाहे हिन्द में गुज़रे हैं और चाहे फारस में, किसी को धोखेबाज़ और झूठा नहीं कहा अपितु स्पष्ट तौर पर कह दिया कि

प्रत्येक क़ौम और बस्ती में नबी गुज़रे हैं और समस्त क़ौमों के लिए मैत्री की नींव डाली, किन्तु खेद कि इस मैत्री के नबी[स.] को प्रत्येक क़ौम गाली देती है और तिरस्कार की दृष्टि से देखती है।

हे प्रिय देशवासियो !! मैंने यह वर्णन आपकी सेवा में इसलिए नहीं किया कि मैं आप को दुःख दूं या आपका हृदय दुखाऊं अपितु मैं नितान्त सद्भावना से यह कहना चाहता हूं कि जिन क़ौमों ने यह स्वभाव बना रखा है और यह अवैध ढंग से अपने धर्म में धारण कर लिया है कि दूसरी क़ौमों के नबियों को गालियों तथा अपशब्दों के साथ स्मरण करें वे न केवल अनुचित हस्तक्षेप से जिसके साथ उनके पास कोई प्रमाण नहीं ख़ुदा के पापी हैं अपितु वे इस पाप के भी करने वाले हैं कि मानव क़ौम में फूट एवं शत्रुता का बीज बोते हैं। आप हृदय थाम कर मुझे इस बात का उत्तर दें कि यदि कोई व्यक्ति किसी के पिता को गाली दे या उसकी मां पर कोई लांक्षन लगा दे तो क्या वह अपने पिता के सम्मान पर स्वयं प्रहार नहीं करता और यदि वह व्यक्ति जिसे ऐसी गाली दी गई है उत्तर में उसी प्रकार गाली सुना दे तो क्या यह कहना अनुचित होगा कि मुकाबले पर गाली दिए जाने का कारण वास्तव में वही व्यक्ति है जिसने गाली देने में पहल की। इस अवस्था में वह अपने माता-पिता के सम्मान का स्वयं शत्रु होगा।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द - 23, पृष्ठ 458-460)

## क्षमा मांगो ताकि विपत्तियों से बच जाओ।

जमाअत अहमदिया के प्रवर्तक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

**"स्मरण रहे कि ख़ुदा ने मुझे सामान्यतः भूकम्पों की सूचना दी**

**है। अतः निश्चय समझो कि जैसा कि भविष्यवाणी के अनुसार अमरीका में भूकम्प आए ऐसा ही यूरोप में भी आए तथा एशिया के विभिन्न क्षेत्रों में आएंगे और कुछ उनमें प्रलय का नमूना होंगे तथा इतनी मौतें होंगी कि रक्त की नहरें चलेंगी। इस मृत्यु से पशु-पक्षी भी बाहर नहीं होंगे और पृथ्वी पर इतना भीषण विनाश आएगा कि उस दिन से कि मनुष्य ने जन्म लिया ऐसा विनाश कभी नहीं आया होगा तथा अधिकतर स्थान उथल-पुथल हो जाएंगे कि जैसे उनमें कभी आबादी न थी तथा इसके साथ और भी विपत्तियां पृथ्वी और आकाश में भयंकर रूप में पैदा होंगी यहां तक कि प्रत्येक बुद्धिमान की दृष्टि में वे बातें असाधारण हो जाएंगी तथा खगोल शास्त्र एवं दर्शनशास्त्र की पुस्तकों के किसी पृष्ठ में उनका पता नहीं मिलेगा। तब मनुष्यों में व्याकुलता जन्म लेगी कि यह क्या होने वाला है तथा बहुत से लोग मुक्ति पाएंगे और बहुत से नष्ट हो जाएंगे। वे दिन निकट हैं अपितु मैं देखता हूं कि द्वार पर हैं कि संसार एक प्रलय का दृश्य देखेगा और न केवल भूकम्प अपितु और भी भयभीत करने वाली विपत्तियां प्रकट होंगी, कुछ आकाश से और कुछ पृथ्वी से। यह इसलिए कि मानव-क़ौम ने अपने ख़ुदा की उपासना को त्याग दिया है और सम्पूर्ण हृदय और सम्पूर्ण साहस तथा सम्पूर्ण विचारों से संसार पर ही गिर गए हैं। यदि मैं न आया होता तो इन विपत्तियों में कुछ विलम्ब हो जाता, परन्तु मेरे आने के साथ ख़ुदा के प्रकोप के वे गुप्त इरादे जो एक लम्बी अवधि से गुप्त थे प्रकट हो गए। जैसा कि ख़ुदा का कथन है :**

وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ○

(बनी इस्राईल - 16)

**और पश्चाताप करने वाले सुरक्षा पाएंगे और वे जो विपत्ति से पूर्व डरते हैं उन पर दया की जाएगी। क्या तुम विचार करते हो कि तुम इन भूकम्पों से अमन में रहोगे या तुम अपनी युक्तियों से स्वयं को बचा सकते हो ? कदापि नहीं। मानव कार्यों का उस दिन अन्त होगा। यह मत सोचो कि अमरीका आदि में भयंकर भूकम्प आए और तुम्हारा देश उन से सुरक्षित है। मैं तो देखता हूं कि कदाचित् उनसे अधिक संकट का मुख देखोगे। हे यूरोप तू भी अमन में नहीं और हे एशिया तू भी सुरक्षित नहीं और हे द्वीपों के रहने वालो ! कोई कृत्रिम ख़ुदा तुम्हारी सहायता नहीं करेगा, मैं शहरों को गिरते देखता हूं और आबादियों को वीरान (निर्जन) पाता हूं। वह अकेला और अद्वितीय एक समय तक ख़ामोश रहा और उसकी आंखों के सामने घृणित कार्य किए गए और वह मौन रहा, किन्तु अब वह प्रताप के साथ अपना चेहरा दिखाएगा, जिसके कान सुनने के हों सुने कि वह समय दूर नहीं। मैंने प्रयास किया कि ख़ुदा की सुरक्षा के नीचे सब को एकत्र करूं, परन्तु अवश्य था कि प्रारब्ध के लेखे पूर्ण होते। मैं सच-सच कहता हूं कि इस देश की बारी भी निकट आती जाती है। नूह का युग तुम्हारी आखों के सामने आ जाएगा और लूत की पृथ्वी की घटना तुम स्वयं अपनी आंखों से देख लोगे, परन्तु ख़ुदा क्रोध में धीमा है, पश्चाताप करो ताकि तुम पर दया की जाए। जो ख़ुदा को त्यागता है वह एक कीड़ा है न कि मनुष्य और जो उससे नहीं डरता वह मृत है न कि जीवित।"**

(हक़ीक़तुल वह्यी, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द-22, पृष्ठ 268-269)

# इस्लाम की खोई हुई श्रेष्ठता को यथावत् करने के लिए आवश्यक है कि मसीह मौऊद[अ.] की जमाअत में सम्मिलित होकर प्रयास किया जाए

अत: आज धर्म को जीवित करने के लिए इस्लाम की खोई हुई प्रतिष्ठा एवं वैभव को वापस लाने के लिए आंहज़रत[स.अ.व.] की प्रतिरक्षा में खड़े होने के लिए अल्लाह तआला ने जिस योद्धा को खड़ा किया है उसका अनुसरण करने से तथा उसके दिए हुए प्रमाणों एवं तर्कों से जो अल्लाह तआला ने उसे बताए हैं तथा उसकी शिक्षा पर कार्यरत होने से इस्लाम और आंहज़रत[स.अ.व.] का झण्डा पूर्ण आभा और चमक और पूरी प्रतिष्ठा एवं वैभव के साथ संसार में लहराएगा। इन्शाअल्लाह। और लहराता चला जाएगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस युग के महत्त्व का वर्णन करते हुए तथा लोगों का ध्यान आकृष्ट करते हुए फ़रमाते हैं - उसका सारांश यह है कि इस्लाम पर कैसे कठोर दिन हैं, इसलिए अल्लाह तआला ने एक जमाअत स्थापित की जो खोई हुई श्रेष्ठता को यथावत् करेगी। इसलिए मुसलमानों को कहा कि अब अपनी हठधर्मियों को त्याग दो और विचार करो कि क्या अल्लाह तआला ऐसी परिस्थितियों में भी कि आंहज़रत[स.अ.व.] की हस्ती पर चारों ओर से प्रहार हो रहे हैं उनका सम्मान स्थापित करने के लिए जोश में नहीं आया जबकि वह दरूद भेजता है ? पूरा वक्तव्य इस प्रकार है कि :

"यह युग कैसा मुबारक युग है कि ख़ुदा तआला ने इन संकट से भरे दिनों में मात्र अपनी कृपा से आंहज़रत[स.अ.व.] की श्रेष्ठता को प्रकट करने के लिए यह शुभ इरादा किया कि परोक्ष से इस्लाम की सहायता

का प्रबन्ध किया तथा एक जमाअत को स्थापित किया। मैं उन लोगों से पूछना चाहता हूं जो अपने हृदय में इस्लाम के लिए एक दर्द रखते हैं तथा उसका सम्मान और महत्त्व उनके हृदयों में है, वे बताएं कि क्या कोई युग इस युग से बढ़कर इस्लाम पर गुज़रा है जिसमें आंहज़रत[स.अ.व.] को इतनी गालियां दी गई हों एवं अपमान किया गया हो तथा पवित्र क़ुर्आन का अनादर हुआ हो ? फिर मुझे मुसलमानों की स्थिति पर खेद और हार्दिक शोक होता है और कभी-कभी मैं इस पीड़ा से व्याकुल हो जाता हूं कि इन में इतना अहसास भी शेष न रहा कि इस अपमान को महसूस कर लें। क्या आंहज़रत[स.अ.व.] का थोड़ा सम्मान भी ख़ुदा तआला को स्वीकार न था जो इतनी अधिक गालियों पर भी वह कोई आकाशीय जमाअत की स्थापना न करता और उन इस्लाम के विरोधियों के मुख बन्द करके आप[स.] की श्रेष्ठता एवं पवित्रता को विश्व में फैलाता जबकि स्वयं अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते आंहज़रत[स.अ.व.] पर दरूद भेजते हैं कि इस अपमान के समय में इस दरूद को प्रकट करना कितना आवश्यक है और इस का प्रकटन अल्लाह तआला ने इस जमाअत के रूप में किया है।"

यह वाक्य देखें कि इस प्रकार जमाअत अहमदिया पर बहुत बड़ा दायित्व आता है जो स्वयं को हज़रत मसीह मौऊद[अ.] की ओर सम्बद्ध करती है।

अतः जहां ऐसे समय में जब आंहज़रत[स.अ.व.] के विरुद्ध एक अशिष्टतापूर्ण तूफ़ान आया हुआ है निश्चय ही अल्लाह तआला के फ़रिश्ते आप[स.] पर दरूद भेजते होंगे, भेज रहे हैं। हमारा भी कर्त्तव्य है जिन्होंने स्वयं को आंहज़रत[स.अ.व.] के उस सच्चे प्रेमी तथा युग के इमाम के सिलसिला और उसकी जमाअत से संलग्न किया हुआ है कि अपनी

दुआओं को दरूद में ढाल दें और वातावरण में हार्दिक तौर पर इतना दर्द बिखेर दें कि वातावरण का कण-कण दरूद से सुगंधित हो उठे और हमारी समस्त दुआएं उस दरूद के माध्यम से ख़ुदा तआला के दरबार में पहुंचकर स्वीकारिता पाने वाली हों। यह है उस प्रेम और अनुराग का प्रकटन जो हमें आंहज़रत[स.अ.व.] के अस्तित्व से होना चाहिए तथा आप की सन्तान से होना चाहिए। अल्लाह तआला उम्मत-ए-मुस्लिमा को भी बुद्धि दे, बोध दे कि अल्लाह तआला के इस भेजे हुए को पहचानें तथा आंहज़रत[स.अ.व.] के इस अध्यात्मिक पुत्र की जमाअत में सम्मिलित हों जो मैत्री, अमन और प्रेम के वातावरण को पुनः संसार में पैदा करके आंहज़रत[स.अ.व.] के स्थान को बुलन्द कर रहा है। अल्लाह तआला इन लोगों को बुद्धि दे कि आंहज़रत[स.अ.व.] की ओर सम्बद्ध होने के बावजूद आज फिर देख लें। चौदह सौ वर्ष पश्चात् भी इस महीने में जब मुहर्रम का महीना ही चल रहा है और उसी पृथ्वी में फिर मुसलमान मुसलमान का रक्त बहा रहा है परन्तु पाठ कभी भी नहीं सीखा और अभी तक रक्त बहाते चले जा रहे हैं। अल्लाह तआला इन को सद्बुद्धि प्रदान करे कि इस प्रकार की गतिविधियों को त्याग दें और अपने हृदय में ख़ुदा का भय पैदा करें तथा इस्लाम की सच्ची शिक्षा का पालन करने वाले हों। यह सब कुछ जो ये लोग कर रहे हैं युग के इमाम को न पहचानने के कारण हो रहा है। आंहज़रत[स.अ.व.] के आदेश से इन्कार के कारण हो रहा है।

अतः आज प्रत्येक अहमदी का दायित्व है और बहुत बड़ा दायित्व है कि जिसने युग के इमाम को पहचाना है कि आंहज़रत[स.अ.व.] से प्रेम भावना के कारण अधिक से अधिक दरूद पढ़ें, दुआएं करें, अपने लिए भी और अन्य मुसलमानों के लिए भी ताकि अल्लाह तआला

उम्मत-ए-मुस्लिमा को विनाश से बचा ले।

आंहज़रत[स.अ.व.] से प्रेम की मांग यह है कि हम अपनी दुआओं में उम्मत-ए-मुस्लिमा को अधिक स्थान दें। दूसरे लोगों के इरादे भी ठीक नहीं हैं। अभी मालूम नहीं किन-किन अतिरिक्त संकटों और परीक्षाओं तथा विपत्तियों में उन लोगों ने गिरफ़्तार होना है और उन मुसलमानों को सामना करना पड़ता है तथा क्या-क्या योजनाएं उन के विरुद्ध बनाई जा रही हैं अल्लाह ही दया करे।

अल्लाह तआला हमें सदैव सद्मार्ग पर चलाता रहे। हम उसके कृतज्ञ बन्दे हों और उसका धन्यवाद करें कि उसने हमें इस युग के इमाम को मानने का सामर्थ्य प्रदान किया है और अब इस मानने के पश्चात् उसका हक़ अदा करने का भी सामर्थ्य प्रदान करे तथा सदैव अपनी प्रसन्नता के मार्गों का अनुसरण करने वाला बनाए।

(ख़ुत्बः जुमा 24 फ़रवरी 2006 ई. बैतुलफ़ुतूह लन्दन, उस्वा-ए-रसूल[स.अ.व.] और ख़ाक़ों की हक़ीक़त, पृष्ठ 62-65 से उद्धृत)

# हज़रत इमाम जमाअत अहमदिया मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब पंचम ख़लीफ़ा के 21 सितम्बर 2012 ई. के ख़ुत्बा-ए-जुमा तथा प्रेस कान्फ्रेन्स पर अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया की कुछ समीक्षाएं

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

प्रेस डेस्क लन्दन
22, सितम्बर 2012

# मुसलमानों के विश्वव्यापी मार्गदर्शक की इस्लाम विरोधी फ़िल्म की निन्दा

अहमदिया मुस्लिम जमाअत के प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा है कि मुसलमानों का शोक एवं क्रोध पूर्णतया उचित है किन्तु आतंकपूर्ण प्रतिक्रिया की निन्दा की जानी चाहिए। विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब पंचम ख़लीफ़ा ने सम्पूर्ण विश्व के मुसलमानों की भावनाओं को भड़काने वाली फ़िल्म Innocence of Muslims के विरुद्ध विरोध प्रकट करने के लिए पूरे विश्व के मुसलमानों को शान्तिपूर्ण ढंग से एक होने का परामर्श दिया है। आप ने प्रस्तावित किया कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाएं निर्धारित होनी चाहिएं ताकि समस्त लोगों की धार्मिक भावनाओं की रक्षा हो सके।

अपने साप्ताहिक ख़ुत्बा-ए-जुमा में जो आपने मस्जिद बैतुल फ़ुतूह लन्दन में 21 सितम्बर को दिया आपने कहा कि सम्पूर्ण संसार के मुसलमानों को उस फ़िल्म तथा एक फ्रान्सीसी पत्रिका की ओर से हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के व्यंग्य चित्र दोबारा छापने के फैसले से बहुत आघात पहुंचा है।

मीडिया के प्रतिनिधि जिनमें बीबीसी न्यूज़, बीबीसी न्यूज़ नाइट, स्काई न्यूज़, स्काई अरबी, राइटर्ज़, प्रेस एसोसिएशन तथा अन्य बहुत

से विभाग भी सम्मिलित हैं, इस अवसर पर मौजूद थे। उन्होंने जुमा के ख़ुत्बः के पश्चात् हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह से भेंट का सम्मान प्राप्त किया।

अपने भाषण में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने कहा कि इस्लाम विरोधी फ़िल्म और इस प्रकार के अन्य आक्रमणों के पीछे इस्लाम से एक स्थायी भय है। आपने कहा :-

"अत: यह उनकी इस्लाम के सामने पराजय है जो उनको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर अश्लीलता पर तत्पर कर रही है।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने विभिन्न मुसलमान देशों में आतंकप्रिय लोगों की ओर से अत्याचारपूर्ण प्रतिक्रिया की भरपूर निन्दा की। आपने कहा - राजदूतों तथा अन्य दूतावासों के स्टाफ सहित निर्दोष लोगों का वध करना इस्लामी शिक्षाओं के सर्वथा विरुद्ध है। आपने कहा - कि सम्पत्तियों तथा इमारतों को अग्नि के हवाले करना सर्वथा ग़लत है। इससे केवल उन लोगों को लाभ पहुंचा है जो इस्लाम को बदनाम करना चाहते हैं।

कुछ अधिकारों को कुछ अन्य अधिकारों पर प्रमुखता देने के बारे में विचार व्यक्त करते हुए आपने कहा :

"ऐसा न हो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर सम्पूर्ण विश्व का अमन नष्ट हो जाए।"

आपने विश्व के नेताओं तथा जनसाधारण से भी कहा कि उनको विचार करना चाहिए कि कहीं वे ऐसी फ़िल्में और व्यंग्य चित्र बनाने वाले लोगों के अधिकार का हर मूल्य पर समर्थन करने, जो दूसरों की भावनाओं को आहत करते तथा निर्दोष लोगों के लिए कष्ट का कारण

होते हैं संसार में घृणाओं को हवा देने में कोई भूमिका तो नहीं निभा रहे।

इन उत्तेजनात्मक कार्यवाहियों पर प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए आपने समस्त संसार के मुसलमानों को सामूहिक और प्रभावी उत्तर देने की नसीहत की। आपने कहा कि मुसलमान सरकारों और पश्चिमी देशों के रहने वाले मुसलमानों को चाहिए कि वे मिलकर इस्लाम और पवित्र क़ुर्आन की शान्तिपूर्ण शिक्षाओं को संसार के समक्ष उजागर करें।

आपने उन्हें हमेशा प्रत्येक स्तर पर इस्लाम तथा हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के पवित्र शिष्टाचार की प्रतिरक्षा के लिए संयुक्त एवं शान्तिपूर्ण दृष्टिकोण धारण करने की नसीहत की। आप ने कहा :

अतः आतंक फैलाना इस का उत्तर नहीं है। इसका उत्तर वही है जो मैं बता चुका हूं। कि अपने कर्मों का सुधार तथा उस नबी[स.अ.व.] पर दरूद और सलाम जो मानवता को मुक्ति दिलाने वाला है तथा सांसारिक प्रयासों के लिए मुसलमान देशों का सहमत होना, पश्चिमी देशों में रहने वाले मुसलमानों को अपने वोट की शक्ति स्वीकार कराना।"

आपने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट कराया कि गत कुछ वर्षों से इस्लाम पर ऐसे आक्रमणों में वृद्धि हुई है तथापि कुछ मुसलमानों के अनुचित आचरण भी निन्दनीय हैं। आप ने पुनः कहा कि यह बात नहीं भूलना चाहिए कि अधिकतर दूसरों ने उपद्रव का प्रेरक बनने में पहल की है।

आपने इस्लाम का सही चेहरा संसार के समक्ष प्रस्तुत करने की जमाअत अहमदिया के प्रयासों का वर्णन करते हुए कहा -

"हम अहमदी मुसलमान संसार की सेवा के लिए कोई भी कमी नहीं छोड़ते। अमरीका में रक्त की आवश्यकता पड़ी। गत वर्ष हम अहमदियों ने बारह हज़ार बोतलें एकत्र करके दीं। इस वर्ष पुनः वे

एकत्र कर रहे हैं। आजकल यह Drive चल रही थी। मैंने उनसे कहा कि हम अहमदी मुसलमान तो जीवन देने के लिए अपना रक्त दे रहे हैं और तुम लोग अपनी इन हरकतों से और इन हरकत करने वालों की हां में हां मिलाकर हमारे हृदयों को आघात पहुंचा रहे हो।"

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ने अन्त में हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के अपमान एवं तिरस्कार के समस्त प्रयासों की विफलता की चर्चा करते हुए फ़रमाया :

"युग के इमाम की यह बात स्मरण रखें कि प्रत्येक विजय आकाश से आती है और आकाश ने यह निर्णय कर छोड़ा है कि जिस रसूल का तुम अपमान करने का प्रयत्न कर रहे हो उसने विश्व पर विजयी होना है।"

जुमा के ख़ुत्बः के पश्चात् होने वाली प्रेस कान्फ्रेन्स को सम्बोधित करते हुए आपने प्रेस के प्रतिनिधियों को बताया कि मुसलमान हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] से अतुलनीय प्रेम करते हैं। आपने फ़रमाया कि यदि किसी की प्रियतम हस्ती का उपहास किया जाए तो हर किसी को कष्ट पहुंचता है। इसी प्रकार हज़रत रसूले करीम[स.अ.व.] पर होने वाला प्रत्येक आक्रमण समस्त मुसलमानों को घायल करता है।

कथित फ़िल्म जारी होने के परिणामस्वरूप होने वाले एक अत्याचारपूर्ण प्रदर्शन के बारे में प्रश्न के उत्तर में आपने कहा कि ऐसे प्रदर्शन अनुचित थे और राजदूतों एवं दूतावासों के स्टाफ सहित किसी भी निर्दोष का वध करना इस्लामी शिक्षाओं के सर्वथा विरुद्ध है। आपने कहा कि हर प्रकार के प्रदर्शन कानून की परिधि में रह कर तथा शान्तिपूर्ण ढंग पर होने चाहिएं।

THE EXPRESS
TRIBUNE

The Express Tribune

September 23, 2012

**इस्लाम की शत्रु फिल्म : इमाम जमाअत अहमदिया फ़रमाते हैं कि इस्लाम-शत्रु फ़िल्म पर मुसलमानों की ओर से शोक एवं क्रोध प्रत्येक दृष्टि से उचित है।**

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाओं को निर्धारित किया जाए ताकि लोगों की धार्मिक भावनाओं की रक्षा हो सके। इमाम जमाअत अहमदिया कहते हैं कि इस्लाम-शत्रु फ़िल्म के सन्दर्भ में मुसलमानों का शोक एवं क्रोध हर दृष्टि से उचित है तथापि हम अत्याचारपूर्ण प्रतिक्रिया की निन्दा करते हैं।

मिर्ज़ा मसरूर अहमद (इमाम जमाअत अहमदिया) ने मीडिया के लोगों से बात करते हुए कहा कि संसार में मौजूद समस्त मुसलमानों को सहमत होकर इस फिल्म के विरुद्ध शान्तिपूर्ण विरोध प्रकट करना चाहिए, जिसने समस्त इस्लामी संसार में बहुत दु:ख तथा शोक एवं क्रोध की भावनाओं को भड़काया है।

मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने इस बात की आवश्यकता पर भी बल दिया कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाओं को निर्धारित किया जाए ताकि लोगों की धार्मिक भावनाओं की रक्षा की जा सके।

जारी किए गए वर्णन में इमाम जमाअत अहमदिया का वक्तव्य निम्नलिखित है :

"अत: यह उनकी इस्लाम के सामने पराजय है जो उनको अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर अश्लीलता पर तत्पर कर रही है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर सम्पूर्ण विश्व की शान्ति को नष्ट करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।"

उन्होंने कई देशों में होने वाली कथित अत्याचारपूर्ण प्रतिक्रिया की कठोर शब्दों में निन्दा की जिसके परिणामस्वरूप कई निर्दोष लोग जिन में कुछ देशों के राजदूत भी थे वध किए गए।

उन्होंने कहा :

"सम्पत्तियों को हानि पहुंचाना तथा इमारतों को आग लगाना बिल्कुल ही अनुचित हरकत है तथा इस से किसी भी पक्ष को लाभ नहीं होता।"

Times of India

26 September, 2012

टाइम्स आफ इण्डिया अपने 26 सितम्बर 2012 ई. के प्रकाशन में रिपोर्ट करता है -

## इस्लाम विरोधी फिल्म : जमाअत अहमदिया अमन कान्फ्रेन्स आयोजित करेगी।

अमृतसर : जहां एक ओर समस्त संसार के मुसलमान विवादित फिल्म Innocence of Muslims जिसने उनकी धार्मिक भावनाओं को आहत किया है। अत्यधिक शोक एवं क्रोध प्रकट कर रहे हैं वहीं दूसरी ओर जमाअत अहमदिया ने अपने केन्द्र क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर में 30 सितम्बर को एक अमन कान्फ्रेन्स के आयोजन का निर्णय लिया है। यह निर्णय विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम के उस आदेश का पालन करते हुए किया गया है जिस में उन्होंने सम्पूर्ण विश्व के मुसलमानों से इस फिल्म के विरुद्ध शान्तिपूर्ण ढंग से संयुक्त हो जाने की मांग की है। इस फिल्म के ट्रेलर के प्रसारण के परिणामस्वरूप पैदा होने वाली हिंसा की लहर तथा निर्दोष लोगों के क़त्ल की घटनाओं पर मतभेद प्रकट करते हुए हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कई देशों में देखी जाने वाली हिंसापूर्ण प्रतिक्रिया की निन्दा की। उन्होंने कहा कि निर्दोष लोगों का वध करना जिन में देशों के राजदूत भी सम्मिलित हैं एक ऐसा कार्य है जो इस्लामी शिक्षाओं के सर्वथा विरुद्ध है। सम्पत्तियों को हानि पहुंचाना या इमारतों को आग

लगाना बिल्कुल अवैध कार्य है, इससे उन लोगों के अतिरिक्त जो इस्लाम को बदनाम करना चाहते हैं किसी भी पक्ष को कोई लाभ नहीं पहुंचेगा। हमें इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि क्या हम घृणाओं को हवा देने में कोई भूमिका निभा रहे हैं या हम एक सामूहिक और बुद्धिमत्तापूर्ण प्रतिक्रिया प्रकट कर रहे हैं।

आपने कहा कि मुसलमान सरकारों तथा पश्चिमी देशों में रहने वाले मुसलमानों को संसार में इस्लाम और क़ुर्आन की सच्ची और शान्तिप्रिय शिक्षाओं के विकास के लिए संयुक्त हो जाना चाहिए। आपने कहा :

"उन्हें प्रत्येक अवसर और स्थान पर इस्लाम तथा हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के पवित्र आचरण की प्रतिरक्षा में एक संयुक्त एवं शान्तिप्रिय विचारधारा अपनानी चाहिए।

जमाअत अहमदिया की प्रेस कमेटी के इन्चार्ज आदरणीय सय्यद तुफ़ैल अहमद शहबाज़ साहिब ने कहा कि उन्होंने राजनेताओं के साथ समस्त धर्मों के प्रतिनिधियों को इस अमन कान्फ्रेन्स में सम्मिलित होने का निमंत्रण दिया है।

Ottawa Citizen Newspaper

September 30, 2012

कनाडा का एक प्रसिद्ध दैनिक Ottawa Citizen 30 सितम्बर के प्रकाशन में लिखता है -

## OTTAWA के मुसलमान नेता की, इस्लाम विरोधी फिल्म के विरुद्ध उपद्रव की निन्दा

Ottawa में रहने वाले एक मुसलमान समुदाय के नेता ने अत्यन्त निरर्थक, व्यर्थ एवं भड़काने वाली फिल्म के विरुद्ध ऐसी हिंसक प्रतिक्रिया की निन्दा की है जिसमें रक्त-रंजित प्रदर्शन किए गए और Benghazi लीबिया में कौन्सिलेट पर आक्रमण करने के परिणामस्वरूप एक अमरीकी राजदूत तथा दूतावास के स्टाफ़ के तीन लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। Cumberland में अहमदिया जमाअत के आध्यात्मिक केन्द्र में सप्ताह की शाम को एक सभा में इमाम इम्तियाज़ ने जमाअत के लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि फिल्म Innocence of Muslims के विरुद्ध शान्तिपूर्वक भी विरोध प्रकट किया जा सकता है। यह चौदह मिनट की एक घटिया स्तर की अव्यावसायिक फिल्म है जो अमरीका में तैयार की गई और इन्टरनेट पर रिलीज़ की गई।

उन्होंने कहा कि फिल्म निर्माता ने यह फिल्म बनाकर एक लज्जाजनक, व्यर्थ एवं अश्लील कार्य किया है जिसने सम्पूर्ण इस्लामी संसार में बेचैनी को जन्म दिया है। प्रत्येक मुसलमान इस पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कर रहा है। वे झण्डों को जलाकर, तोड़-फोड़ करके तथा दूतावासों पर आक्रमण करके अपने क्रोध का प्रदर्शन कर रहे हैं।

उन्होंने कहा :

क्या वे (अर्थात् प्रदर्शन करने वाले) यह समझते हैं कि झण्डों को जलाकर तथा सम्पत्तियां और दूतावासों को जलाकर तथा राजदूतों का वध करके उन्होंने अपना प्रतिशोध ले लिया है ? निश्चय ही यह इस्लामी शिक्षाओं के विपरीत कार्य हैं। यह वास्तविक इस्लाम नहीं है।

अहमदी एक मुस्लिम अल्पसंख्यक फ़िर्क़ा है जो धर्मों के मध्य वार्तालाप का समर्थक है। अहमद के कथनानुसार Cumberland में होने वाले समारोह में भाग लेने वालों की संख्या पांच सौ थी।

अहमद साहिब ने कहा कि किसी भी धर्म से संबंध रखने वाली पवित्र हस्ती के बारे में हर प्रकार की अश्लीलता को किसी भी दृष्टि से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नाम नहीं दिया जा सकता।

गत सप्ताह लन्दन में विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम ने समस्त मुसलमानों को नसीहत की कि वे इस फिल्म के विरुद्ध शान्तिपूर्ण ढंग से एक हो जाएं। उन्होंने उपद्रव की निन्दा की। हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने प्रस्ताव भी प्रस्तुत किया कि धार्मिक आस्थाओं की सुरक्षा के लिए अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की कुछ सीमाएं निर्धारित होनी चाहिएं। उन्होंने कहा :

"अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर विश्व-शान्ति को नष्ट करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।"

मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया Ottawa के क़ाइद उवैस महमूद ने कहा कि वह पाकिस्तान में अपनी फैमिली के लोगों के बारे में चिन्तित हैं जहां AFP की सूचनानुसार इस फिल्म के परिणामस्वरूप होने वाले उपद्रवों में इक्कीस लोगों की हत्या और दो सौ से अधिक घायल हो चुके हैं।

महमूद साहिब ने कहा कि इस्लाम हमें वफ़ादारी का पाठ पढ़ाता है। हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] ने कहा कि देश-प्रेम ईमान का एक भाग है। पाकिस्तान में यह हो रहा है कि लोग अपनी ही सम्पत्तियों को नष्ट कर रहे हैं तथा अपने पड़ोसियों को हानि पहुंचा रहे हैं। अपने विचार प्रकट करने का यह उचित ढंग नहीं है।

स्त्रियों के संगठन की प्रमुख यासमीन मलिक साहिबा ने एक शान्तिपूर्ण समाधान प्रस्तुत करते हुए कहा :

"हम इस बात पर विश्वास रखते हैं कि उपद्रव फैलाने, आग लगाने और घिराव करने के स्थान पर हमें क़लम के साथ अपना सन्देश लोगों तक पहुंचाना चाहिए।"

Wandsworth Guardian UK
24th September 2012

# एक इस्लामी मार्गदर्शक ने फिल्म के विरुद्ध होने वाले हिंसात्मक प्रदर्शनों की निन्दा की है।

एक धार्मिक जमाअत के आध्यात्मिक मार्गदर्शक ने जुमा के दिन हज़ारों लोगों के सामने जो मस्जिद में उनका भाषण सुनने के लिए उपस्थित थे, एक इस्लाम दुश्मन फिल्म के विरुद्ध समस्त संसार में होने वाले हिंसापूर्ण प्रदर्शनों की निन्दा की।

जमाअत अहमदिया के लोग मस्जिद बैतुल फ़ुतूह लन्दन, मार्डन में हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद का भाषण सुनने के लिए एकत्र हुए जो एक घंटे का था। सम्पूर्ण संसार में सीधे तौर पर प्रसारण में अपने भाषण में उन्होंने प्रदर्शनकारियों के आचरण पर खेद प्रकट किया कि शान्तिपूर्ण ढंग से इस फिल्म की निन्दा की जानी चाहिए थी।

अमरीका में बनाई गई एक घटिया स्तर की अव्यावसायिक फिल्म INNOCENCE OF MUSLIMS के चौदह मिनट के विज्ञापन ने इस माह मिडिल ईस्ट, उत्तरी अफ्रीका, एशिया तथा आस्ट्रेलिया में हिंसात्मक उपद्रव को भड़काया है।

इस फिल्म के कई भाग यूट्यूब (YOUTUBE) पर जारी किए गए हैं जिसमें एक एक्टर हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] की भूमिका अदा कर रहा है जबकि यह हरकत इस्लामी संसार में नितान्त अवैध समझी जाती है।

यह बात मुसलमानों के क्रोध को और अधिक भड़काने का कारण बनी है कि इस फिल्म में मुहम्मद[स.अ.व.] को विभिन्न स्त्रियों के साथ

(ख़ुदा की शरण चाहते हैं) व्यभिचार करते हुए और बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न की अनुमति देते हुए दिखाया गया है।

ख़ुत्बः के पश्चात् आपने कहा :

"हम हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] की प्रतिष्ठा में तुच्छ से तुच्छ अशिष्टता भी सहन नहीं कर सकते। क्या इस बात को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का नाम दिया जा सकता है कि कोई आपके सामने आपके पिता का अपमान करे ? आप निश्चय ही इस प्रकार की गतिविधि पर कठोर प्रतिक्रिया दिखाएंगे।"

आपने दूसरे धर्मों के तिरस्कार को कानून के विरुद्ध ठहराए जाने का भी प्रस्ताव दिया। आपने कहा कि हिंसात्मक प्रदर्शन करने वाले निश्चय ही इस्लाम की वास्तविक शिक्षा का पालन नहीं कर रहे। यह सब कुछ नेतृत्व के अभाव का परिणाम है।

आपने पुनः फ़रमाया -

"ये मुसलमान जिस प्रकार विरोध प्रकट कर रहे हैं यह ढंग उचित नहीं है।"

अमरीका में बनाई गई फिल्म ने सम्पूर्ण इस्लामी संसार में मुसलमानों को ख़ूनी उपद्रव पर उकसाया है। पाकिस्तान में 21 सितम्बर जुमा को होने वाले हिंसापूर्ण प्रदर्शनों में इक्कीस लोगों की हत्या कर दी गई थी। शनिवार के दिन पाकिस्तान सरकार के एक मंत्री ने अख़बार के प्रतिनिधियों से बात करते हुए कहा कि जो व्यक्ति भी अमरीका में निर्मित इस फिल्म के निर्माता का वध करेगा वह उसे एक लाख डालर का पुरस्कार देगा तथा इसके अतिरिक्त उसने उग्रवादी संगठनों उदाहरणतया अलक़ाइदह और तालिबान से भी इस फिल्म निर्माता को जो इस समय छिपा हुआ है पकड़ने में सहायता मांगी है।

सदर लज्ना इमाउल्लाह नासिरा रहमान ने कहा कि जमाअत अहमदिया को बहुत कष्ट पहुंचा है तथा हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के पवित्र चरित्र पर धब्बा लगाने का प्रयत्न एक अत्यन्त दिल तोड़ने वाला कार्य है। हमारे दिल खून के आंसू रो रहे हैं।

विरोध प्रकट करने वालों के बारे में उन्होंने कहा कि यह मुसलमानों का कार्य नहीं कि वे इस प्रकार के उत्पात करने वालों को स्वयं ही दण्ड दें अपितु इस समस्या के समाधान के लिए लोगों को ख़ुदा से दुआ करनी चाहिए तथा मामलों को अपने हाथों में नहीं लेना चाहिए।

एक नमाज़ी अहमद मुर्तज़ा आफ पटनी ने कहा - अपनी गतिविधियों का उत्तर एक शान्तिपूर्ण और बुद्धिसंगत शास्त्रार्थ के रूप में ही दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा -

हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] से समस्त मुसलमान प्रेम करते हैं। इस बात की हमें बचपन से ही शिक्षा दी जाती है कि हमने हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] की हस्ती को समस्त मनुष्यों से अधिक प्रिय रखना है। हमें दूसरों के अधिकारों को नष्ट नहीं करना चाहिए प्रत्येक की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का कार्यक्षेत्र वहां समाप्त हो जाता है जहां दूसरों की भावनाओं की सीमा आ जाती है।

जमाअत अहमदिया के लोग स्वयं पाकिस्तान जैसे कठोरता करने वाले इस्लामी देशों में अत्याचार एवं आतंक का निशाना बने हुए हैं, क्योंकि वे अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शक (हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम) को इस्लाम में प्रकट होने वाला एक नबी मानते हैं जबकि मुसलमानों का बहुमत यह आस्था रखता है कि मुहम्मद[स.अ.व.] अन्तिम नबी थे। सन् 2010 ई. में इसी अख़बार ने इस बात से भी पर्दा उठाया था कि दक्षिणी लन्दन में कट्टर द्वेष रखने

वाले धार्मिक लोगों ने अहमदिया समुदाय के लोगों के साथ किस प्रकार घोषणात्मक रूप में अपमानजनक तथा पृथक आचरण रखा और Tooting में उनके आजीविका संबंधी संसाधनों एवं राजनीतिक प्रत्याशियों का वध कर दिया जबकि वे एक मस्जिद में उपासना कर रहे थे। इन क़त्ल किए गए लोगों में Sispara Gardens, Southfields के रहने वाले मुहम्मद अशरफ़ बिलाल भी सम्मिलित थे जो अपने व्यवसाय के संबंध में पाकिस्तान गए हुए थे।

News Track India
Mon, 24 September 2012

## अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर सम्पूर्ण विश्व का अमन बरबाद न होने दिया जाए- जमाअत अहमदिया के अन्तर्राष्ट्रीय प्रमुख

## जमाअत अहमदिया पाकिस्तान के प्रवक्ता ने कहा है कि इस्लाम दुश्मन फिल्म के सन्दर्भ से मुसलमानों का शोक एवं क्रोध प्रत्येक दृष्टिकोण से वैध है।

इस्लामाबाद - 24 सितम्बर 2012 ई. (ए.एन.आई.) जमाअत अहमदिया पाकिस्तान के प्रवक्ता ने कहा है कि इस्लाम दुश्मन फिल्म के सन्दर्भ से मुसलमानों का शोक एवं क्रोध प्रत्येक दृष्टि से वैध है तथापि उन्होंने हिंसापूर्ण प्रतिक्रिया की निन्दा की। The Express Tribune हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब के बयान से इबारत नक़ल करते हुए लिखता है :

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने कहा कि विश्व में मौजूद समस्त मुसलमानों को एक होकर इस फिल्म के विरुद्ध अमनपूर्ण विरोध प्रकट करना चाहिए, जिस फिल्म ने सम्पूर्ण इस्लामी संसार में अत्यन्त दुःख तथा शोक एवं क्रोध की भावनाओं को भड़काया है।

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने इस बात की भी मांग की कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाओं का निर्धारण किया जाए ताकि लोगों की धार्मिक भावनाओं की रक्षा की जा सके। उन्होंने अनेकों देशों में देखी गई हिंसात्मक प्रतिक्रिया की कठोरता के साथ निन्दा की जिनके परिणामस्वरूप निर्दोष लोगों को जिनमें कुछ देशों के राजदूत तथा दूतावास के स्टाफ के कर्मचारी भी सम्मिलित थे क़त्ल

किया गया। (ए.एन.आई)

एक इस्राईल नस्ल अमरीकी की बनाई हुई फिल्म ने जिसमें मुहम्मद रसूलुल्लाह[स.अ.व.] को (नऊज़ुबिल्लाह) धोखेबाज़, बच्चों के साथ यौन-उत्पीड़न करने वाला तथा स्त्रियों के रसिया के तौर पर दिखाया गया है। समस्त इस्लामी संसार में एक हलचल पैदा कर दी, जिस के फलस्वरूप अमरीका के विरुद्ध हिंसक तथा विश्वव्यापी प्रदर्शन देखने में आए।

Metro News Ottawa, Canada
By Graham Lanktree
September 28, 2012

# मुस्लिम प्रमुख की शान्ति की अपील लोगों को भड़काने वाली फिल्म अभिव्यक्ति की सीमाओं से परे है।

विश्वव्यापी जमाअत अहमदिया के इमाम हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद पंचम खलीफ़ा ने 21, सितम्बर 2012 को समस्त मुसलमानों से मांग की है कि वे इस फिल्म Innocence of Muslims के विरुद्ध शान्तिपूर्ण ढंग से एक हो जाएं।

एक अव्यावसायिक फिल्म जिसमें मुसलमानों के धर्म की कठोर आलोचना की गई है, के विरुद्ध कई सप्ताह से जारी हिंसापूर्ण प्रदर्शनों के पश्चात् Ottawa की एक मुस्लिम जमाअत शनिवार के दिन एक समारोह में इस हिंसा को समाप्त करने तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाएं निर्धारित करने की मांग करेगी।

एक इस्लामी प्रचारक और जमाअत के पदाधिकारी इम्तियाज़ अहमद ने कहा :

झण्डे जलाना, सम्पत्तियों को आग लगाना तथा निर्दोष लोगों को जिन में राजदूत भी सम्मिलित हैं क़त्ल करना इस्लामी शिक्षा के सर्वथा विरुद्ध है। निश्चय ही अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने में नितान्त सूक्ष्म दूरी की सीमा है। जब हमारी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के परिणामस्वरूप दूसरों की भावनाएं आहत

हों तो हमें उसकी एक सीमा निर्धारित करनी चाहिए।

इम्तियाज़ अहमद के कथनानुसार इस हिंसापूर्ण व्यवहार के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए Ottawa में मौजूद अहमदिया जमाअत, जो कि एक अल्पसंख्यक इस्लामी समुदाय है तथा पाकिस्तान में भेदभाव का शिकार है, के चार सौ लोग इकट्ठे होंगे। उन्होंने कहा -

ऐसी गतिविधियों के विरुद्ध विरोध प्रकट करने का उत्तम उपाय यह है कि हम ख़ुदा से दुआ के माध्यम से उसकी सहायता मांगें और व्यावहारिक तौर पर उत्तम इस्लामी आदर्श प्रस्तुत करें। हिंसा किसी समस्या का समाधान नहीं। इसी प्रकार हम अमरीका में बनाई जाने वाली फिल्म और फ्रांस में प्रकाशित होने वाले कार्टूनों की कठोर शब्दों में निन्दा करते हैं।

जमाअत अहमदिया के आध्यात्मिक प्रमुख हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ने 21 सितम्बर को इस बात की मांग की है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमाएं निर्धारित होनी चाहिएं ताकि समस्त लोगों की धार्मिक भावनाओं की रक्षा की जा सके।

इम्तियाज़ अहमद ने कहा कि हम कनाडा सरकार के कृतज्ञ हैं कि उन्होंने हमें अपने धर्म का पालन करने की पूर्ण स्वतंत्रता दी हुई है हालांकि हम अपने देश (पाकिस्तान) में स्वयं को मुसलमान भी नहीं कह सकते। उन्होंने पाकिस्तान में मौजूद 2 से 5 मिलियन अहमदियों पर होने वाले बहुत से अत्याचारों और हमलों का भी वर्णन किया। उन्होंने कहा -

"प्रत्येक धर्म अपने नबी का सम्मान करता है। ईसाई हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का सम्मान करते हैं परन्तु कभी-कभी मूर्ख पादरी लोगों की भावनाओं को व्यक्तिगत लाभों की प्राप्ति के लिए प्रयोग करते हैं।

हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] ने कभी यह शिक्षा नहीं दी कि विरोध प्रकट करने के लिए सड़कों पर निकला जाए और उपद्रव फैलाया जाए।"

इम्तियाज़ अहमद 29 सितम्बर शनिवार की शाम पांच बजे मारकीट स्ट्रीट कम्बरलैण्ड में एक वार्तालाप का प्रबन्ध करेंगे, जिसमें इस हिंसापूर्ण आचरण की निन्दा की जाएगी।

एक टीवी चैनल One News की रिपोर्ट

यूरोप में संतुलनप्रिय मुस्लिम मार्गदर्शक यह प्रयास कर रहे हैं कि इन हिंसापूर्ण विरोधों से अपने क्षेत्र को बचाएं। यूरोप में हमारे प्रतिनिधि Garth Bray को लन्दन में एक मस्जिद में प्रवेश करने की विशेष अनुमति मिली।

जैसा कि एशिया तथा मिडिल ईस्ट में अमरीकन झंडे जलाए जा रहे हैं तथा पेरिस में हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) के नग्न कार्टूनों के प्रकाशन से शान्तिपूर्ण रहने की समस्त अपीलें व्यर्थ जा रही हैं। ऐसा ही बर्तानिया में भी है।

"मुझे बड़ी रुचि के साथ अपने संतुलित विचार सुनाने के लिए निमंत्रित किया गया और उन दो महिला प्रतिनिधियों का भी स्वागत किया गया।"

ख़लीफ़ा ने फिल्म और कार्टून बनाने वालों की निन्दा की तथा कहा कि :

"अल्लाह तआला निश्चय ही इन लोगों से नर्क को भर देगा।"

परन्तु साथ ही श्रोताओं को यह भी स्मरण कराया कि यह उनका काम नहीं कि वे उपद्रवी को स्वयं दण्ड देते फिरें।

"हम किसी प्रकार के फ़साद और हिंसा पर विश्वास नहीं रखते। आपने कभी यह नहीं देखा होगा कि कोई अहमदी किसी प्रकार के विरोध प्रदर्शन या फ़साद में लिप्त पाया गया हो।"

जिन लोगों ने लन्दन के दक्षिण-पश्चिम में इस मस्जिद का निर्माण किया है उनका दावा है कि यह दक्षिणी यूरोप में सबसे बड़ी मस्जिद

है। इस मस्जिद में दिया जाने वाला ख़ुत्बः विश्व के सैकड़ों देशों में मौजूद लोगों ने सुना होगा, जिसमें उनसे इस बात का आग्रह किया गया है कि कार्टूनों और फिल्म से होने वाले उनके धर्म के अपमान का उत्तर केवल मुख से देना है, परन्तु उनके ख़लीफ़ा ने इस बात को स्वीकार किया कि बहुत से मुसलमान इससे भी अधिक हिंसापूर्ण विरोध प्रदर्शन करने पर तुले हुए हैं।

उन्होंने कहा -

यह केवल पश्चिम से घृणा का परिणाम नहीं अपितु इसके पीछे कुछ ऐसे लोग लिप्त हैं जो हिंसा के द्वारा अपने अनुयायियों में वृद्धि चाहते हैं।

निश्चय ही एक अल्पसंख्यक समुदाय के पथ-प्रदर्शक की हैसियत से यह आशा नहीं की जा सकती कि उनकी नसीहत पर अधिकांश लोग कान धरेंगे या पेशावर जैसे क्षेत्रों में यह नसीहत हिंसा को दबाने में किसी प्रकार से सहायक सिद्ध होगी।

اَلْفَضْلُ مَا شَهِدَتْ بِهِ الاَعْدَآءُ

(श्रेष्ठता वह है जिस की शत्रु भी गवाही दे)

# इस्लाम के प्रवर्तक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में कुछ मार्गदर्शकों, इतिहासकारों तथा पूर्वी भाषाओं के यूरोपीय विद्वानों के कुछ विचार

# हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] की शान में अन्य लोगों के प्रशंसनीय विचार

**जार्ज सेल (George Sale) एक लेखक हैं जिन्होंने अंग्रेज़ी में क़ुर्आन का अनुवाद किया है। अनुवाद से पूर्व एक लम्बा परिचय नोट लिखा। जिसके अध्याय To the reader में Spanhemius के हवाले से लिखता है कि :**

"मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पूर्णतया स्वाभाविक योग्यताओं से सुसज्जित थे। रूप में अत्यन्त सुन्दर, विवेकशील तथा दूरदर्शी बुद्धि वाले, प्रिय एवं सदाचारी, दीन-दुखियों पर दया करने वाले, प्रत्येक की आवभगत करने वाले, शत्रुओं के मुक़ाबले में सुदृढ़ एवं शूरवीर, सब से बढ़कर यह कि ख़ुदा तआला के नाम का नितान्त मान-सम्मान करने वाले थे, झूठी क़सम खाने वालों, व्यभिचारियों, निर्दयी लोगों, झूठा लांछन लगाने वालों, अपव्यय करने वालों, लालचियों तथा झूठी साक्ष्य देने वालों के विरुद्ध बहुत कठोर थे। सहनशीलता, दान-पुण्य, कृपा एवं दया, कृतज्ञता, माता-पिता एवं बड़ों का आदर सत्कार करने पर बल देने वाले तथा ख़ुदा की स्तुति एवं प्रशंसा में बड़ी तन्मयता के साथ व्यस्त रहने वाले थे।"

(George Sale. To the Reader. In:*The Koran: Commonly called the Alkoran of Mohammad*. J.B. Lippincot & Co., PA. pp. vi-vii (1860))

एक लेखक स्टेनले लेन पूल (Stanley Lane-Poole) लिखता है कि :

"मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने पूर्वजों के शहर

मक्का में जब विजयी होकर प्रवेश किया तथा मक्का निवासी आप के प्राणों के शत्रु और खून के प्यासे थे तो उन सब को क्षमा कर दिया। यह ऐसी विजय थी तथा ऐसा पवित्र विजय-प्रवेश था, जिसका उदाहरण मानव-इतिहास में नहीं मिलता।"

(Stanley Lane-Poole. Introduction. In: Speeches and Table Talk of the Prophet Muhammad Macmillan & Co., London. p xlvi (1882))

**The outline of history के लेखक हैं प्रोफ़ेसर एच.जी. वेल्ज़ (H. G. Wells) यह कहते हैं :**

"इस्लाम के पैग़म्बर की सच्चाई का यही बड़ा प्रमाण है कि जो आप को सबसे अधिक जानते थे, वही आप पर सर्वप्रथम ईमान लाए .... हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) झूठे दावेदार कदापि न थे ...... इस वास्तविकता से इन्कार नहीं किया जा सकता था कि इस्लाम में बड़ी विशेषताएं तथा महान गुण विद्यमान हैं ...... इस्लाम के पैग़म्बर ने एक ऐसी सोसायटी की नींव रखी जिसमें अत्याचार और निर्दयता को समाप्त किया गया।"

(H. G. Wells. Part II: Muhammad and Islam. In: The Outline of History, University of Michigan Library., Ml. p 269 (1920))

De Lacy O'Leary (डी. लेसी ओलेरी) अपनी पुस्तक "इस्लाम ऐट दी क्रास रोड्स (Islam at the Cross roads) में लिखता है कि :-

"इतिहास ने इस बात को खोलकर रख दिया है कि आतंकवादी

मुसलमानों का विश्व पर विजय प्राप्त कर लेना और तलवार की नोक पर अधिकृत क़ौमों में इस्लाम को लागू कर देना इतिहासकारों के वर्णित वृत्तान्तों में से अत्यन्त व्यर्थ एवं अनोखा क़िस्सा है।"

(De Lacy O'Leary. Islam at the Crossroads. Kegan Paul., London, p.8 (1923))

**फिर महात्मा गांधी एक पत्रिका Young India में लिखते हैं कि :-**

"मैं उस व्यक्ति के जीवन के संबंध में सब कुछ ज्ञात कर लेना चाहता था, जिसने बिना किसी मतभेद के लाखों लोगों पर शासन किया। उसके जीवन का अध्ययन करके मेरा इस बात पर पहले से भी अधिक अटल विश्वास हो गया कि इस्लाम ने उस युग में तलवार के कारण लोगों के हृदयों में स्थान नहीं बनाया, अपितु उस पैग़म्बर की सादगी, अपने कार्य में मग्न रहने की आदत, अत्यन्त सूक्ष्मताओं के साथ अपने वचनों को पूर्ण करना और अपने मित्रों एवं अनुयायियों के साथ नितान्त श्रद्धा रखना, बेबाक और निर्भीक होना तथा ख़ुदा के अस्तित्व और अपने मिशन पर पूर्ण विश्वास होना, उसकी यही बातें थीं, जिन्होंने प्रत्येक संकट को सहन किया और जो सब को साथ लेकर चलीं। जब मैंने उस पैगम्बर की जीवनी पर लिखी जाने वाली पुस्तक का दूसरा भाग भी शीघ्र समाप्त कर लिया तो मुझ पर उस पुस्तक के समाप्त हो जाने के कारण उदासी छा गई।"

(Mahatma Gandhi, Young India, September 23rd 1924)

**सर जॉन बगट ग्लब (Sir John Bagot Glubb) जो लेफ्टिनेन्ट जनरल थे, 1986 ई. में उन का निधन हुआ। लिखते हैं कि :**

पाठक इस पुस्तक के अन्त पर जो भी राय स्थापित करे, इस बात का इन्कार संभव नहीं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आध्यात्मिक अनुभव अपने अन्दर पुराने और नए अहदनामों के क़िस्सों तथा ईसाई महापुरुषों के आध्यात्मिक अनुभवों से आश्चर्यजनक सीमा तक समानता रखते हैं। इसी प्रकार संभव है कि हिन्दुओं और अन्य धर्मों के अनुयायी लोगों के अनगिनत स्वप्नों और कश्फ़ों से भी समानता रखते हों। इसके अतिरिक्त यह कि प्राय: ऐसे अनुभव पवित्र एवं श्रेयष्कर जीवन के प्रारंभिक लक्षण होते हैं। ऐसी घटनाओं को नफसानी धोखा ठहराना उचित स्पष्टीकरण मालूम नहीं होता, क्योंकि ये घटनाएं तो बहुत से लोगों में एक समान रही हैं। ऐसे लोग जिन के मध्य हज़ारों वर्षों का अन्तर तथा हज़ारों मीलों की दूरियां थीं, जिन्होंने एक दूसरे के बारे में सुना तक न होगा, परन्तु इसके बावजूद उन की घटनाओं में एक असाधारण एकरूपता पाई जाती है। यह राय उचित नहीं कि उन समस्त लोगों ने आश्चर्यजनक सीमा तक समान स्वप्न और कश्फ़ अपने तौर पर ही बना लिए हों। बावजूद इसके कि ये लोग एक-दूसरे के अस्तित्व से ही अपरिचित थे।"

फिर जिन लोगों ने हब्शा की ओर प्रवास किया था उनके बारे में लिखता है :

"इस तालिका से ज्ञात होता है कि उसमें लगभग समस्त वे लोग जो कि इस्लाम स्वीकार कर चुके थे और रसूलुल्लाह[स.अ.व.] मक्का के अत्याचारी निवासियों के मध्य निश्चय ही बहुत कम अनुयायियों के साथ

रह गए थे। यह एक ऐसी अवस्था है जो सिद्ध करती है कि आप[स.अ.व.] नैतिक साहस तथा ईमान की दृढ़ता के उच्च स्तर पर क़ायम थे।"

(John Bagot Glubb. *The Life and Times of Muhammad*, Hodder & Stoughton. 1970 (reprint 2002))

**John William Draper अपनी पुस्तक History of the intellectual Development of Europe में लिखते हैं कि :**

Justinian के निधन के चार वर्ष पश्चात् 569 ई. में मक्का में एक ऐसा व्यक्ति पैदा हुआ जिसने समस्त लोगों में अपना सब से अधिक प्रभाव मानव-क़ौम पर छोड़ा और वह व्यक्ति मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम.) जिसे कुछ यूरोपियन लोग झूठा कहते हैं किन्तु मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अन्दर ऐसी विशेषताएं थीं जिनके कारण कई क़ौमों के भाग्य का फैसला हुआ। वह एक प्रचार करने वाले सिपाही थे। मंच सरस और सुबोध शैली से भरपूर होता, मैदान में उतरते तो योद्धा होते। उनका धर्म केवल यही था कि ख़ुदा एक है। इस सच्चाई का वर्णन करने के लिए उन्होंने परम्परागत बहसों को नहीं अपनाया अपितु अपने अनुयायियों को पवित्रता, नमाज़, रोज़ा जैसे मामलों की शिक्षा देते हुए उनकी सामाजिक अवस्थाओं को व्यावहारिक तौर पर उत्तम बनाया। उस व्यक्ति ने दान-पुण्य को शेष समस्त कार्यों पर प्राथमिकता दी।"

(John William Draper M.D., L.L.D. *A History of the Intellectual Development of Europe*. Harper and Brothers Publishers., NY. p.244 (1863))

**एक प्रसिद्ध एशियाई भाषाओं के यूरोपीय विद्वान William Montgomery अपनी पुस्तक Muhammad at Madina में लिखते हैं कि :**

"मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और इस्लाम के प्रारंभिक इतिहास पर जितना विचार करें उतना ही आप की सफलताओं की विशालता को देखकर मनुष्य दंग रह जाता है। उस समय की परिस्थितियों ने आपको एक ऐसा अवसर उपलब्ध कराया जो बहुत कम लोगों को मिलता है। मानो आप उस युग के लिए अत्यन्त उचित व्यक्ति थे। यदि आप के पास दूरदर्शिता, शासन चलाने की योग्यताएं, ख़ुदा पर भरोसा तथा इस बात पर विश्वास कि अल्लाह तआला ने आप को भेजा है न होता तो मानव इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण अध्याय लिखने से रह जाता। मुझे आशा है कि आप (स.अ.व.) की जीवनी के संबंध में यह पुस्तक महावैभवशाली मानव को समझने और उस के महत्त्व को समझने में सहायक होगी।"

(William Montgomery Watt. Muhammad at Madina Oxford University Press. pp. 335 (1981))

**प्रसिद्ध ईसाई इतिहासकार Reginald Bosworth Smith लिखता है कि :**

"धर्म एवं शासन के मार्गदर्शक तथा गवर्नर की हैसियत से पोप और क़ैसर के दो व्यक्तित्व हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के एक अस्तित्व में संकलित थे। आप पोप थे किन्तु पोप की तरह दिखावों से पवित्र, आप क़ैसर थे परन्तु क़ैसर के धन-दौलत से निस्पृह, यदि संसार में किसी व्यक्ति को यह कहने का अधिकार

प्राप्त है कि उसने नियमित सेना के बिना, शाही महल के बिना तथा लगान वसूली के बिना मात्र ख़ुदा के नाम पर संसार में अमन और अनुशासन स्थापित रखा तो वह केवल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं। आप को इन साधनों के बिना ही समस्त शक्तियां प्राप्त थीं।"

(Rev. Bosworth Smith. Character of Mohammad. In : *MOHAMMAD AND MOHAMMADANISM* Smith, Elder & Co., London, p. 235 (1876))

**यही Bosworth Smith अपनी पुस्तक Mohammad and Mohammadanism में लिखता है कि :**

"आप के मिशन को सर्वप्रथम स्वीकार करने वाले वे लोग थे जो आप (स.अ.व.) को भलीभांति जानते थे। उदाहरणतया आपकी धर्मपत्नी, आप का दास, आप का चचेरा भाई और आपका पुराना मित्र जिसके बारे में हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने कहा था कि इस्लाम में प्रवेश करने वालों में से वह एकमात्र व्यक्ति था जिसने कभी अपनी पीठ नहीं मोड़ी थी और न ही वह कभी परेशान हुआ था। सामान्य पैग़म्बरों की तरह हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का भाग्य साधारण न था, क्योंकि आपकी श्रेष्ठता का इन्कार करने वाले केवल वही लोग हैं जिन्हें आप के बारे में उचित ज्ञान नहीं था।"

(पृष्ठ - 127)

यही लेखक आगे लिखता है कि :

"वह रस्म व रिवाज जिन से मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मना किया, न केवल आपने उनका निषेध किया अपितु

उनका पूर्णतया उन्मूलन किया, जैसे मानव बलिदान, छोटी मासूम बच्चियों का वध, ख़ूनी झगड़े, स्त्रियों के साथ अनेकों निकाह, दासों के साथ कभी समाप्त न होने वाले अत्याचार एवं यातनाएं, मदिरापान और जुआ। यह क्रम बिना किसी बाधा के जारी रहता तथा आपने इन सब को समाप्त कर दिया।"

(पृष्ठ - 125)

फिर वही आगे कहता है कि :-

"हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने अपने मकसद की सच्चाई और नेकी में अत्यंत गहरा ईमान रख कर जो कुछ किया था, कोई दूसरा व्यक्ति उसमें गहरे विश्वास के बिना कुछ भी नहीं कर सकता।" (पृष्ठ - 127)

वह कहता है कि :-

"आप के जीवन की प्रत्येक घटना आप को ऐसा यथार्थप्रिय और जोशीला मनुष्य सिद्ध करती है जो अपनी मान्य आस्थाओं एवं विचारधाराओं तक धीरे-धीरे कष्ट सहन करते हुए पहुंचने का प्रयास करता है।" (पृष्ठ - 127)

पुनः लिखता है कि :

"यह कहना कि अरब को क्रान्ति की आवश्यकता थी या दूसरे शब्दों में यह कहना कि नवीन पैग़म्बर के प्रादुर्भाव का समय आ गया था। यदि ऐसा ही था तो फिर हज़रत मुहम्मद ही वह पैग़म्बर क्यों न हों ? इस विषय पर वर्तमान युग के लेखक स्पिंगर ने यह सिद्ध किया है कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के आगमन से वर्षों पूर्व एक पैग़म्बर के प्रकट होने की आशा भी थी और भविष्यवाणी भी थी।" (पृष्ठ - 133)

फिर आगे यही Bosworth ही वर्णन करता है कि :

"सामूहिक तौर पर मुझे यह आश्चर्य नहीं कि हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) विभिन्न परिस्थितियों में कितने बदल गए थे अपितु आश्चर्य तो यह है कि आपके व्यक्तित्व में कितना कम परिवर्तन हुआ था। मरुस्थलीय रेवड़ की रखवाली के दिनों में, शामी व्यापारी के तौर पर, हिरा नामक गुफ़ा में एकान्त के दिनों में, अल्पसंख्यक जमाअत के सुधारक की हैसियत से, मदीना में मक्का से निष्कासित होने के दिनों में, एक मान्य विजेता की हैसियत से, यूनानी राजाओं तथा ईरानी हिरकलों के समान पदवाले होने की स्थिति में हम आप के व्यक्तित्व में एक दृढ़ स्थायित्व को देख सकते हैं।"

कहता है कि :

"मुझे नहीं लगता कि यदि किसी अन्य व्यक्ति की बाह्य परिस्थितियां इतनी अधिक परिवर्तित हो जातीं तो उस के अस्तित्व में कभी इतना कम परिवर्तन प्रकट होता। हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बाह्य परिस्थितियां तो परिवर्तित होती रहीं किन्तु उन समस्त परिस्थितियों में मुझे उनके अस्तित्व का जौहर एक समान ही दिखाई देता है।"

(पृष्ठ - 133)

**वाशिंगटन इरविंग (Washington Irving) अपनी पुस्तक Life of Mahomet में लिखता है कि :**

"आपकी युद्ध में विजयों ने आप (स.अ.व.) के अन्दर न तो अभिमान पैदा किया न कोई अहंकार और न किसी प्रकार का बनावटी वैभव एवं प्रतिष्ठा पैदा की। यदि उन विजयों में व्यक्तिगत उद्देश्य निहित होते तो यह अवश्य ऐसा करते। अपनी शक्ति के उत्कर्ष पर भी

अपने स्वभाव और रहन-सहन में वही सादगी रखी जो कि आपके अन्दर कठोरतम परिस्थितियों में थी, यहां तक कि अपने राजाओं वाले जीवन में भी यदि कोई आपके कमरे में प्रवेश करते समय अनावश्यक सम्मान का प्रदर्शन करता तो आप उसे पसन्द नहीं करते थे।"

(Washington Irving. The Life of Mahomet Bernard Tauchnitz,. Leipzig, pp. 272-3 (1850))

**सर विलियम म्योर (Sir William Muir) अपनी पुस्तक Life of Mahomet में लिखता है कि :-**

"अपना प्रत्येक कार्य पूर्ण करते तथा जिस कार्य को भी हाथ में लेते जब तक उसे समाप्त न कर लेते उसे न छोड़ते। सामाजिक मेल-जोल में भी आप की यही पद्धति रहती। जब आप किसी के साथ बात करने के लिए अपना मुख उस की ओर करते तो आप आधा न मुड़ते अपितु पूरा चेहरा तथा पूरा शरीर उस व्यक्ति की ओर फेर लेते, किसी से हाथ मिलाते समय आप अपना हाथ पहले न खींचते। इसी प्रकार किसी अजनबी के साथ वार्तालाप करते हुए बीच में न छोड़ते तथा अगले व्यक्ति की पूरी बात सुनते। आप के जीवन पर आपकी ख़ानदानी सादगी का प्रभुत्व था, आप को प्रत्येक कार्य स्वयं करने की आदत थी। आप जब भी दान करते तो मांगने वाले को आप हाथ से देते। घरेलू काम-काज में अपनी पत्नियों का हाथ बटाते"

पुनः लिखता है :

"आप तक प्रत्येक छोटे-बड़े की पहुंच होती जैसे दरिया की पहुंच किनारे तक होती है। बाहर से आए हुए समूहों का सम्मानपूर्वक स्वागत करते। उन समूहों का आगमन तथा अन्य सरकारी मामलों के बारे में इतिहास से सिद्ध होता है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

के अन्दर एक योग्य शासक की सम्पूर्ण योग्यताएं विद्यमान थीं। सर्वाधिक आश्चर्यजनक बात यह है कि आप लिखना नहीं जानते थे।"

पुनः यही विलियम म्योर लिखता है कि :

"एक प्रमुख विशेषता सद्वृत्ति का वह विचार था जो आप अपने साधारण से साधारण अनुयायी का रखते थे। लज्जा, सहानुभूति, धैर्य, दान, विनय आपके आचरण के विशेष पहलू थे तथा इनके कारण आप अपने वातावरण में प्रत्येक को अपना आसक्त एवं प्रेमी बना लेते। इन्कार करना आपको पसन्द न था। यदि किसी मांगने वाले की इच्छा पूर्ण न कर पाते तो मौन रहने को प्राथमिकता देते। कभी यह नहीं सुना कि आपने किसी का निमंत्रण अस्वीकार किया हो चाहे वह कितना ही साधारण क्यों न हो तथा कभी यह नहीं हुआ कि आपने किसी का प्रस्तुत किया हुआ उपहार अस्वीकार कर दिया हो चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो। आप की एक अनोखी विशेषता यह थी कि आप की सभा में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति को यह विचार होता कि वही अति विशिष्ट अतिथि है। यदि आप किसी को अपनी सफलता पर प्रसन्न देखते तो अगाध प्रेम का प्रदर्शन करते हुए हाथ मिलाते और गले लगाते तथा वंचित एवं कष्टग्रस्त लोगों से बड़ी नम्रतापूर्वक सहानुभूति प्रकट करते, बच्चों से बहुत नर्मी का व्यवहार करते तथा मार्ग में खेलते बच्चों को सलाम करने में कोई लज्जा महसूस न करते। वह अकाल के दिनों में भी दूसरों को अपने भोजन में सम्मिलित करते और प्रत्येक की आसानी के लिए सदैव प्रयासरत रहते। एक नर्म और दयावान स्वभाव आप की समस्त विशेषताओं में विशेष तौर पर दृष्टिगोचर होता था। मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) एक वफ़ादार मित्र था। उसने अबू बकर से भाई से बढ़कर प्रेम किया,

अली से पिता के समान आत्मीयता की, ज़ैद जो स्वतंत्र किया हुआ दास था, को इस मेहरबान नबी से इतना लगाव था कि उसने अपने पिता के साथ जाने के स्थान पर मक्का में रहने को प्राथमिकता दी। अपने संरक्षक का दामन पकड़ते हुए उसने कहा - 'मैं आप को नहीं छोड़ूंगा, आप ही मेरे माता और पिता हैं।' मित्रता का यह सम्बन्ध ज़ैद की मृत्यु तक रहा और फिर ज़ैद के पुत्र उसामा से भी उसके पिता के कारण आप ने सदैव बहुत सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया। उस्मान और उमर भी आप से एक विशेष सम्बन्ध रखते थे। आप ने हुदैबिया के स्थान पर बैअत-ए-रिज़्वान के समय अपने क़ैद किए हुए दामाद की प्रतिरक्षा के लिए प्राण तक देने का जो प्रण किया वह इसी सच्ची मित्रता का एक उदाहरण है। अन्य बहुत से अवसर हैं जो कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के प्रेम के तौर पर प्रस्तुत किए जा सकते हैं। किसी भी अवसर पर यह प्रेम अनुचित न था अपितु प्रत्येक घटना इसी अगाध प्रेम को दर्शाती है।"

फिर लिखते हैं कि :

अपनी शक्ति के उत्कर्ष पर भी आप न्यायवान और संतुलित रहे। आप अपने उन शत्रुओं से नर्मी में लेशमात्र भी कमी न करते जो आपके दावों को सहर्ष स्वीकार कर लेते। मक्का वालों का लम्बे समय तक उद्दण्डतापूर्ण कष्ट पहुंचाने का परिणाम इस बात पर निकलना चाहिए था कि मक्का-विजय करने वाला अपने क्रोध एवं प्रकोप में आग और खून की होली खेलता, किन्तु मुहम्मद (स.अ.व.) ने कुछ अपराधियों के अतिरिक्त सार्वजनिक क्षमा की घोषणा कर दी तथा अतीत की समस्त कटु यादों को सर्वथा भुला दिया। उनके समस्त उपहासों, उद्दण्डताओं तथा अत्याचार एवं आतंकों के बावजूद आपने

अपने कट्टर विरोधियों से भी उपकार का व्यवहार किया। मदीना में अब्दुल्लाह तथा अन्य विमुख साथी जो कि वर्षों से आपकी योजनाओं में बाधाएं डालते तथा आपके शासन में बाधक होते रहे उन को क्षमा करना भी एक स्पष्ट उदाहरण है। इसी प्रकार वह नर्मी जो आपने उन क़बीलों के साथ की जो आप के सामने नतमस्तक थे तथा इस से पूर्व जो विजयों में भी कट्टर विरोधी रहे थे उनसे भी नर्मी का व्यवहार किया।"

(Sir William Muir. Life of Muhammad (Volume IV). Smith, Elder and Company., London, pp. 303-307 (1861))

फिर यही विलियम म्योर लिखता है कि :

"यह मुहम्मद (स.अ.व.) की सच्चाई के लिए एक समर्थन का निशान था कि जो भी आप पर सर्वप्रथम ईमान लाए वे उच्चाचरण के स्वामी थे अपितु आपके निकट मित्र और घर के सदस्य भी, जो कि आप के व्यक्तिगत जीवन से भलीभांति परिचित थे आप के चरित्र में वे दोष न देख सके जो सामन्यतया एक विमुख कपटाचारी, धोखेबाज़ के घरेलू सम्बन्ध और बाह्य आचरण में होते हैं।"

(Sir William Muir. Life of Muhammad (Volume II). Smith, Elder and Company., London, pp. 97-8 (1861))

**सर थॉमस कार्लायल (Sir Thomas Carlyle) हज़रत मुहम्मद[स.अ.व.] के उम्मी (अनपढ़) होने के बारे में लिखते हैं कि :**

"एक और बात हमें कदापि नहीं भूलनी चाहिए कि उसे किसी मदरसा की शिक्षा उपलब्ध न थी। इस बात को हम स्कूल लर्निंग (School Learning) कहते हैं। ऐसा कुछ भी नहीं था। लिखने की कला तो अरब में बिल्कुल नई थी। यह राय बिल्कुल सत्य विदित

होती है कि मुहम्मद (स.अ.व.) कभी स्वयं न लिख सका। उसकी समस्त शिक्षा मरुस्थल का निवास और उसके अनुभवों के चारों ओर घूमती है। इस असीमित ब्रह्माण्ड, अपने अंधकारमय क्षेत्र और अपनी इन्हीं भौतिक आंखों एवं विचारों से वह क्या कुछ प्राप्त कर सकते थे ? और अधिक आश्चर्य होता है जब देखा जाए कि पुस्तकें भी उपलब्ध न थीं। अरब के अंधकारमय जंगल में सुनी सुनाई बातों और अपने व्यक्तिगत अवलोकनों के अतिरिक्त वह कुछ भी ज्ञान न रखते थे। वह हिकमत की बातें जो आप से पूर्व मौजूद थीं या अरब के अतिरिक्त दूसरे क्षेत्र में मौजूद थीं, उन तक पहुंच न होने के कारण वे आप के लिए न होने के समान थीं। ऐसे शासकों और उलेमा में से किसी ने इस महान मानव से सीधे तौर पर वार्तालाप नहीं किया। वह इस जंगल में अकेले थे और यों ही प्रकृति तथा अपने विचारों में जवान हुआ।"

(Thomas Carlyle. *On Heroes, Hero-Worship and the Heroic in History.* Willey and Putnam., NY. p.47 (1846))

फिर आप के विवाह के बारे में और आपके घरेलू सम्बन्धों के बारे में लिखता है कि :

"वह कैसे ख़दीजा का साथी बना ? कैसे एक धनवान विधवा के व्यावसायिक मामलों का प्रबन्धक बना और यात्रा करके शाम के मेलों में भाग लिया ? उसने यह सब कुछ कैसे कर लिया ? प्रत्येक को भली-भांति ज्ञान है कि उसने यह नितान्त वफ़ादारी और निपुणता के साथ किया। ख़दीजा (रज़ि.) के हृदय में उनका सम्मान और उनके लिए कृतज्ञता की भावनाएं क्योंकर पैदा हुईं ? इन दोनों के विवाह का वृत्तान्त जैसा कि अरब लेखकों ने वर्णन किया है बड़ा मनोहर और समझने योग्य है। मुहम्मद (स.अ.व.) की आयु पच्चीस वर्ष थी और

ख़दीजा की आयु चालीस वर्ष थी।"

पुनः लिखता है कि :

"मालूम होता है कि आप ने उस उपकार करने वाली स्त्री के साथ अत्यन्त प्रेमपूर्ण, शान्तिदायक और भरपूर जीवन व्यतीत किया, यह ख़दीजा से सच्चा प्रेम करते थे और केवल उसी के थे उसे झूठा नबी कहने में यह वास्तविकता बाधक है कि आपने जीवन का यह दौर इस ढंग से गुज़ारा कि उस पर कोई आपत्ति खड़ी नहीं कर सकता। यह दौर नितान्त सादा और शान्तिपूर्ण था, यहां तक कि आप की युवावस्था के दिन गुज़र गए।"

(Thomas Carlyle. *On Heroes, Hero-Worship and the Heroic in History*. Willey and Putnam., NY. p.48 (1846))

फिर Thomas Carlyle ही लिखते हैं कि :

"हम लोगों अर्थात् ईसाइयों में जो यह बात प्रसिद्ध है कि मुहम्मद (स.अ.व.) एक कला निपुण, स्वाभाविक व्यक्ति तथा नबुव्वत के झूठे दावेदार थे और उनका धर्म दीवानगी और मूर्खता का एक ढेर है। अब ये सब बातें लोगों के निकट गलत ठहरती चली जाती हैं।"

कहता है — "जो झूठ बातें ईर्ष्यालु ईसाइयों ने उस मनुष्य के बारे में बनाई थीं अब वह आरोप सर्वथा हमारी रुसवाई का कारण है और जो बातें उस मनुष्य ने अपने मुख से निकाली थीं, बारह सौ वर्ष से अठारह करोड़ लोगों के लिए मार्ग-दर्शन के तौर पर क़ायम हैं। इस समय जितने लोग मुहम्मद[स.अ.व.] पर आस्था रखते हैं उससे बढ़कर और किसी के कलाम पर इस युग के लोग विश्वास नहीं रखते। मेरे निकट इस विचार से निकृष्ट एवं ख़ुदा की उपासना न करने का कोई दूसरा विचार नहीं है कि एक झूठे व्यक्ति ने यह धर्म फैलाया।"

(Thomas Carlyle. *On Heroes, Hero-Worship and the Heroic in History*. Willey and Putnam., NY. p.60-1 (1846))

**एक फ्रेंच दार्शनिक लामार्टिन (Lamartine) अपनी पुस्तक History of Turkey में लिखता है कि :**

"यदि किसी व्यक्ति की योग्यता को परखने के लिए तीन मापदण्ड निर्धारित किए जाएं कि उस व्यक्ति का उद्देश्य कितना महान है, उसके पास संसाधन कितने सीमित हैं और उसके परिणाम कितने उच्च स्तरीय हैं तो आज कौन ऐसा व्यक्ति मिलेगा जो मुहम्मद (स.अ.व.) से मुकाबला करने का साहस करे। विश्व के सुप्रसिद्ध व्यक्तियों ने केवल कुछ सेनाओं, नियमों और शासनों को पराजित किया और उन्हें मात्र सांसारिक शासनों की स्थापना की और उनमें से भी कुछ शक्तियां उनकी आंखों के सामने टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो गईं, किन्तु मुहम्मद (स.अ.व.) ने न केवल संसार की सेनाओं, नियमों, शासनों, विभिन्न क़ौमों एवं नस्लों अपितु विश्व की कुल जनसंख्या के एक तिहाई को एकता में पिरो दिया। इसके अतिरिक्त उसने क़ुर्बानगाहों, ख़ुदाओं, धर्मों, आस्थाओं, विचारों एवं आत्माओं का नवीनीकरण किया। मुहम्मद (स.अ.व.) की नींव केवल एक पुस्तक थी, जिसका एक-एक अक्षर कानून बन गया। उस व्यक्ति ने प्रत्येक भाषा और प्रत्येक नस्ल को एक आध्यात्मिक पहचान से सम्मानित किया।"

फिर लिखता है :

"मुहम्मद (स.अ.व.) एक दार्शनिक, प्रवक्ता, पैग़म्बर, विधि-निर्माता, योद्धा, विचारों पर विजय पाने वाला, बौद्धिक शिक्षा का नवीनीकरण करने वाला, बीसियों भौतिक शासनों और एक आध्यात्मिक शासन का संस्थापक व्यक्ति था। मानव-श्रेष्ठता को परखने वाला कोई

भी मापदण्ड निर्धारित कर लें, क्या मुहम्मद (स.अ.व.) से बढ़कर कभी महान व्यक्ति पैदा हुआ ?"

(A. De Lamartine. *History of Turkey* (English Translation). D. Appleton & Co., NY. p.154-155 (1855-7))

**जॉन डेविनपोर्ट (John Davenport) लिखता है कि :**

क्या यह बात समझ में आ सकती है कि जिस व्यक्ति ने तिरस्कृत एवं तुच्छ मूर्तिपूजा के बदले जिसमें उसके देशवासी अर्थात् अरब के लोग लिप्त थे, एक सच्चे ख़ुदा की उपासना स्थापित करके बड़े-बड़े सदैव रहने वाले सुधार किए वह झूठा नबी था ? क्या हम उस तन्मय और जोशीले सुधारक को धोखेबाज़ ठहरा सकते हैं और यह कह सकते हैं कि ऐसे व्यक्ति की सम्पूर्ण कार्यवाहियां छल पर आधारित थीं ? नहीं, ऐसा नहीं कह सकते। निःसन्देह मुहम्मद (स.अ.व.) हार्दिक नेक नीयत एवं ईमानदारी के अतिरिक्त अन्य किसी कारण से ऐसी दृढ़ता के साथ वह्यी के उतरने के आरंभ से अन्तिम सांस तक तत्पर नहीं रह सकते थे। जो लोग हर समय उनके पास रहते थे और जो उन से बहुत कुछ संबंध एवं सम्पर्क रखते थे उन्हें भी कभी आप के अन्दर दिखावे का सन्देह नहीं हुआ।"

(John Davenport. *An Apology for Mohammed and the Koran.* J. Davy & Sons., London, p.139 (1869))

फिर लिखता है कि :

"यह बात निश्चित तौर पर पूर्ण सच्चाई के साथ कही जा सकती है कि यदि पश्चिमी शहज़ादे मुसलमान मुजाहिदों एवं तुर्कों के स्थान पर एशिया के शासक हो गए होते तो मुसलमानों के साथ उस धार्मिक सहिष्णुता का व्यवहार न करते जो मुसलमानों ने ईसाइयों के साथ

किया, क्योंकि ईसाइयत ने तो अपने उन सहधर्मियों को नितान्त द्वेष और अत्याचार के साथ आतंक का निशाना बनाया, जिनके साथ उनके धार्मिक मतभेद थे।"

(पृष्ठ - ८२)

फिर यही जॉन डेविनपोर्ट लिखता है कि :

"इसमें कुछ सन्देह नहीं कि समस्त न्यायकर्ताओं तथा विजयी लोगों में एक भी ऐसा नहीं जिसका जीवन-चरित्र मुहम्मद (स.अ.व.) के जीवन-चरित्र से अधिक विस्तृत और सच्चा हो।"

(पृष्ठ - ८२)

**फिर माइकल एच. हार्ट (Michael H. Hart) अपनी पुस्तक A Ranking of the Most Influential Persons in History में लिखते हैं कि :**

"विश्व पर प्रभाव डालने वाले लोगों में मुहम्मद (स.अ.व.) का नाम पहले नम्बर के लिए निर्वाचित करना कुछ अध्ययन कर्ताओं को कदाचित् आश्चर्यचकित करे और कुछ लोग इस पर प्रश्न भी उठाएंगे, परन्तु इतिहास में वह एकमात्र व्यक्ति था जो धार्मिक एवं सांसारिक दोनों स्तर पर अत्यन्त सफल था।"

(Michael H. Hart. *THE 100: A RANKING OF THE MOST INFLUENTIAL PERSONS IN HISTORY*. Carol publishing group., p.3.)

प्रश्न पैदा होता है कि कोई इस बात का कैसे अनुमान करे कि मानव-इतिहास पर मुहम्मद (स.अ.व.) किस प्रकार प्रभावी हुए ? अन्य धर्मों की तरह इस्लाम ने भी अपने अनुयायियों के जीवन पर एक गहरा प्रभाव छोड़ा है। यही कारण है कि संसार में पाए जाने वाले

महान धर्मों के प्रवर्तकों को इस पुस्तक में प्रमुख स्थान दिया गया है।"

पुनः लिखता है कि :

"एक अनुमान के अनुसार संसार में ईसाइयों की संख्या मुसलमानों की संख्या से दोगुनी है। इस दृष्टि से मुहम्मद (स.अ.व.) को ईसा से पहले रखना शायद आप को अद्‌भुत लगे, परन्तु मेरे इस निर्णय के पीछे दो बड़े कारण हैं। प्रथम कारण यह है कि ईसाइयत की उन्नति में ईसा (अलैहिस्सलाम) की भूमिका की तुलना में मुहम्मद (स.अ.व.) की इस्लाम की उन्नति में कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका थी, यद्यपि ईसा (अलैहिस्सलाम) ही ईसाइयत के आध्यात्मिक एवं नैतिक जीवन पद्धति के कारण हुए किन्तु ईसाइयत को उन्नति देने के हवाले से सेन्ट पॉल ने मुख्य भूमिका निभाई। ईसाइयत को वर्तमान रूप देने वाला तथा नए अहदनामा के एक बड़े भाग को लिखने वाला सेन्ट पॉल ही था।"

फिर लिखता है कि : "जबकि इस्लाम धर्म और उसमें मौजूद समस्त व्यावहारिक एवं धार्मिक उसूलों के ज़िम्मेदार मुहम्मद (स.अ.व.) थे और मुहम्मद (स.अ.व.) ने इस नए धर्म को स्वयं बनाया और इस्लामी शिक्षाओं को लागू करने में मुख्य भूमिका निभाई। इसके अतिरिक्त मुसलमानों की पवित्र पुस्तक अर्थात क़ुर्आन जो कि मुहम्मद (स.अ.व.) की बुद्धिमत्ता पर आधारित एक किताब थी, को लिखने वाला भी मुहम्मद ही था।"

कहता है कि "जिस के बारे में वह (अर्थात् मुहम्मद[स.अ.व.]) कहते हैं कि वह अल्लाह तआला की ओर से उन पर वह्यी किया गया। क़ुर्आन के एक बड़े भाग को मुहम्मद (स.अ.व.) के जीवन में ही नक़ल करके सुरक्षित कर लिया गया था और आपके स्वर्गवास के कुछ समय बाद ही उसे संग्रह के रूप में सुरक्षित कर लिया गया।

इसलिए क़ुर्आन मुहम्मद (स.अ.व.) की शिक्षाओं एवं कल्पनाओं को यथार्थ तौर पर चित्रित करता है तथा एक विचारधारा के अनुसार वे आप के ही शब्द हैं, जबकि ईसा (अलैहिस्सलाम) की शिक्षाओं का इस प्रकार का कोई संग्रह नहीं है। मुसलमानों के निकट क़ुर्आन का वही महत्त्व है जो ईसाइयों के निकट बाइबल का है। इसलिए क़ुर्आन के द्वारा मुहम्मद (स.अ.व.) लोगों पर भरपूर ढंग से प्रभावी हुए। दृढ़ अनुमान यही है कि मुहम्मद (स.अ.व.) का इस्लाम पर अधिक प्रभाव है उस प्रभाव की अपेक्षा जो ईसा (अलैहिस्सलाम) तथा सेन्ट पाल ने संयुक्त तौर पर ईसाइयत पर डाला। यदि शुद्ध तौर पर धार्मिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो मुहम्मद (स.अ.व.) भी मानव इतिहास पर उतना ही प्रभावी हुए जितना कि ईसा (अलैहिस्सलाम) (पृष्ठ - ८-९)

**केरन आर्मस्ट्रांग (Karen Armstrong) अपनी पुस्तक Muhammad - A Biography of the Prophet में लिखती हैं कि :**

"मुहम्मद (स.अ.व.) को आधारभूत एकेश्वरवाद पर आधारित आध्यात्मिकता की स्थापना के लिए क्रियात्मक तौर पर शून्य से काम का प्रारंभ करना पड़ा। जब आपने अपने मिशन को प्रारंभ किया तो संभव नहीं था कि कोई आपको अपने मिशन पर कार्य करने का अवसर उपलब्ध करता। अरब क़ौम एकेश्वरवाद के लिए बिल्कुल तैयार न थी, वे लोग अभी इस उच्च स्तर की विचारधारा के योग्य नहीं हुए थे। वास्तव में उस आतंकप्रिय तथा भयावह समाज को इस विचारधारा से परिचित कराना अत्यन्त ख़तरनाक हो सकता था और मुहम्मद (स.अ.व.) निश्चय ही बहुत सौभाग्यशाली होते यदि इस

समाज में अपने जीवन को बचा पाते। वास्तव में मुहम्मद (स.अ.व.) के प्राण अधिकतर ख़तरे में घिरे रहते तथा उन का बच जाना लगभग-लगभग चमत्कार था, परन्तु मुहम्मद (स.अ.व.) ही सफल हुए। अपने जीवन के अन्त तक मुहम्मद (स.अ.व.) ने कबीलों के आतंक की पुरानी परम्परा का उन्मूलन कर दिया तथा अरब-समाज के लिए नास्तिकता कोई समस्या न रही। अब अरब क़ौम अपने इतिहास के एक नवीन युग में प्रवेश करने के लिए तैयार थी।"

(Karen Armstrong. *Muhammad -A Biography of the Prophet.* Harper Collins Publishers., NY. p.53-54 (1993))

फिर केरन आर्मस्ट्रांग ही लिखती हैं कि :

"आख़िर यह पश्चिम ही था न कि इस्लाम, जिसने धार्मिक शास्त्रार्थों पर प्रतिबन्ध लगाया। सलीबी युद्धों के समय तो यों विदित होता है कि यूरोप दूसरों की विचारधारा का दमन करने की अभिलाषा में उन्मादी हो चुका था तथा उसने जिस जोश के साथ अपने विरोधियों को दण्ड दिए हैं धार्मिक इतिहास में उसका उदाहरण नहीं मिलता। राय में मतभेद करने वालों पर अत्याचार, Protestants पर Catholics के अत्याचार, इसी प्रकार Catholics पर Protestants के अत्याचारों की नींव उन जटिल धार्मिक आस्थाओं पर थी जिनकी अनुमति यहूदियत और इस्लाम ने व्यक्तिगत मामलों में ऐच्छिक तौर पर दी है। ईसाई नास्तिकतापूर्ण आस्थाओं का यहूदियत और इस्लाम से कोई सम्बन्ध नहीं, जिन के अनुसार उपास्य के बारे में मानवीय कल्पनाओं को अस्वीकार योग्य सीमा तक ले जाता है अपितु उसे अनेकेश्वरवादी बना देता है।"

(पृष्ठ - 27)

**ऐनी बेसेन्ट (Annie Besant) अपनी पुस्तक The Life and Teachings of Muhammad में लिखती हैं कि :**

"एक ऐसे व्यक्ति के लिए जिसने अरब के महान नबी के जीवन तथा उसके चरित्र का अध्ययन किया हो और जो जानता हो कि उस नबी ने क्या शिक्षा दी तथा उसने किस प्रकार जीवन व्यतीत किया। उसके लिए असंभव है कि नबियों में से इस महान नबी का सम्मान न करे। मैं जो बात कह रही हूं उनके बारे में अधिकतर लोगों को शायद पहले से ज्ञान होगा परन्तु मैं जब भी उन बातों का अध्ययन करती हूं तो मुझे उस अरबी शिक्षक के सम्मान के लिए एक नया अहसास पैदा होता है और उसकी प्रशंसा का एक नया रंग दिखाई देता है।"

(Annie Besant. *The Life and Teachings of Muhammad.* Theosophical Publishing House., India, p. 4 (1932))

**रूथ क्रेन्सटन (Ruth Cranston) अपनी पुस्तक World Faith में लिखती हैं कि :**

"मुहम्मद अरबी (स.अ.व.) ने कभी भी युद्ध या रक्तपात का प्रारंभ नहीं किया। प्रत्येक युद्ध जो उन्होंने किया प्रतिरक्षात्मक था। वह यदि लड़े तो अपने जीवन के लिए तथा ऐसे शस्त्रों और ऐसे ढंग से लड़े जो उस समय का रिवाज था। यह बात विश्वास से कही जा सकती है कि चौदह करोड़ ईसाइयों में से जिन्होंने वर्तमान समय में ही एक लाख बीस हज़ार से अधिक लोगों को एक बम से तबाह कर दिया हो। कोई एक क़ौम भी ऐसी नहीं जो एक ऐसे लीडर पर सन्देह की दृष्टि डाल सके जिसने अपने समस्त युद्धों के बुरे से बुरे हालात में भी केवल पांच या छः सौ लोगों को मारा हो। अरब के नबी के

हाथों सातवीं सदी के अंधकारमय युग में जब लोग एक दूसरे के रक्त के प्यासे हो रहे हों, होने वाली उन विनाशलीलाओं का आज की प्रकाशमान बीसवीं शताब्दी की विनाशलीलाओं से तुलना करना एक मूर्खता के अतिरिक्त कुछ नहीं। इस वर्णन की तो आवश्यकता ही नहीं जो क़त्ल Inquisition और सलीबी युद्धों के युग में हुए जब ईसाई सैनिकों ने इस बात को रिकार्ड किया कि वे उन अधर्मियों के कटे फटे शवों के मध्य टखने-टखने तक रक्त में लथ-पथ फिर रहे थे।"

(Ruth Cranston. *World Faith*. Harper and Row Publishers., NY. p.155 (1949))

**गाडफ्रे हीगिन्ज़ (Godfrey Higgins) लिखते हैं कि :**

"सामान्यतया इस बात से अधिक कोई बात सुनने में नहीं आती कि ईसाई पादरी मुहम्मद (स.अ.व.) के धर्म को उसके द्वेष और असहिष्णुता के कारण गालियां देते हैं। विचित्र तौर पर विश्वास दिलाना तथा द्वैमुखता है। यह कौन था जिसने स्पेन से उन मुसलमानों को जो ईसाई हो चुके थे भगाया था, क्योंकि वे सच्चे ईसाई न थे ? और कौन था जिसने मेक्सिको और पेरू में लाखों लोगों का वध कर दिया था गुलाम बना लिया था क्योंकि वे ईसाई न थे ? और क्या ही उत्तम एवं भिन्न आदर्श था जो मुसलमानों ने यूनान में दिखाया। सदियों तक ईसाइयों को उनके धर्म, उनके पादरियों और सन्यासियों को तथा उनके गिरजाघरों को अपनी जागीर पर शान्तिपूर्वक रहने दिया।"

(Godfrey Higgins. *Apology for Mohammed.* Lahore, pp. 123-4 (1829))

फिर यही Godfrey Higgins आगे लिखते हैं :

इस्लामी खलीफाओं के सरे इतिहास में इन्कोज़िशन

(inquisition) जैसी बदनाम चीज़ से आधी से भी कम बदनाम चीज़ हमें नहीं मिलती। कोई एक घटना भी किसी को धार्मिक भेदभाव के आधार पर जला देने या किसी को केवल इस कारण से मौत की सजा देने की नहीं हुइ कि इस्लाम धर्म को स्वीकार क्यों नहीं करता ?

(पृष्ठ- 52)

**एडवर्ड गिबन (Edward Gibbon) अपनी History of the Saracen Empire पुस्तक में लिखते हैं :**

"आप (स.अ.व.) के धर्म के प्रचार के बजाए उसकी अनश्वरता हमारे आश्चर्य का कारण है। हज़रत मुहम्मद (स.अ.व.) ने मक्का और मदीना में जो शुद्ध और पूर्ण छाप छोड़ी वह बारह सदियों की क्रान्ति के पश्चात् भी क़ुर्आन के इण्डियन, अफ़्रीकन और तुर्क नवीन श्रद्धालुओं ने अभी तक सुरक्षित रखा हुआ है। मुहम्मद (स.अ.व.) के मुरीद अपने धर्म और निष्ठा को एक मनुष्य की कल्पना से बांधने की परीक्षा तथा भ्रम के मुकाबले पर डटे रहे। इस्लाम का सादा और अपरिवर्तन योग्य इक़रार यह है कि मैं एक ख़ुदा और ख़ुदा के रसूल मुहम्मद (स.अ.व.) पर ईमान लाता हूं। ख़ुदा का यह मानसिक चित्र बिगड़ कर मुसलमानों में कोई देखने योग्य मूर्ति नहीं बना। इस्लाम के पैग़म्बर की उपाधियों ने मानव-विशेषता के मापदण्ड की सीमाओं का अतिक्रमण नहीं किया तथा उनके जीवित प्रवचनों ने उनके अनुयायियों की कृतज्ञता और उपकार की भावना को बुद्धि तथा धर्म की सीमाओं के अन्दर रखा हुआ है।"

(Edward Gibbon, Simon Oakley. *History of the Saracen Empire*. Alex Murray & Son., London. p.54 (1870))